॥ श्री शासनपति महावीराय नमः ॥
गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | मई–2021

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

आत्मोद्धारक –4 एक साथ बीस दीक्षाएँ पेपराल में सम्पन्न

पेपराल। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक दिवस पर धर्मसभा में गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने तथा आज्ञानुवर्ती समुदाय के आगामी चातुर्मासों की घोषणा की तथा अनुमति प्रसारित की। चातुर्मास सूचि इस प्रकार है -

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ

शेष पृष्ठ ... 4 पर

चातुर्मास :

* गच्छाधिपति विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. – जालोर (राज.)
* आचार्यश्री श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. – श्री भांडवपुर तीर्थ।

36087

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला– रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी,अहमदाबाद

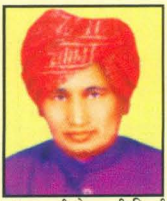

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

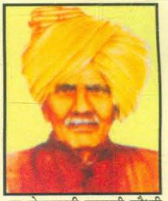

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढ़सिवाणा, बैंगलोर

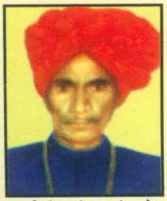

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

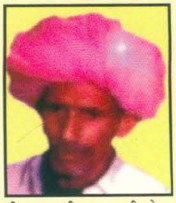

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा दाधाल

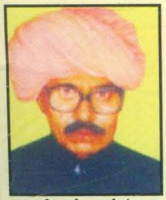

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

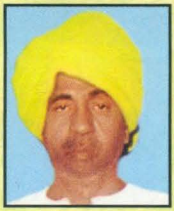
स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

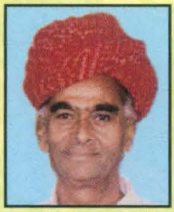
श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

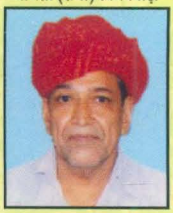
कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खींमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखवचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी राखचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भागाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

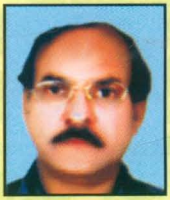

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
पलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-पलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

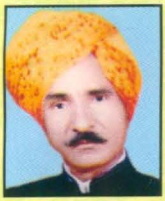

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

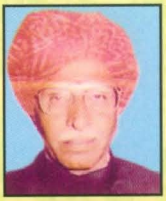

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

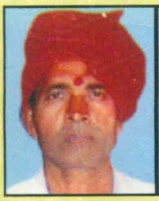

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

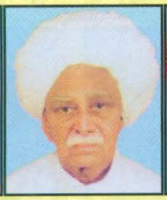

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

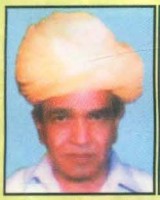

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

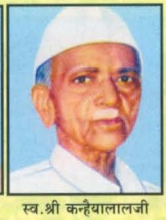

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

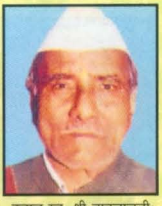

दलाल स्व. श्री बाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेवाजी
डामरणी मंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाथाल

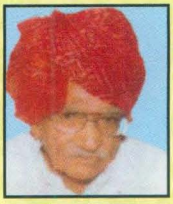
भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

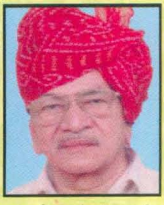
शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

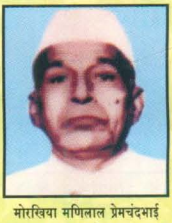
मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

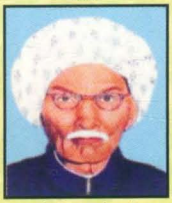
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

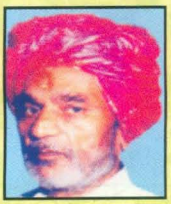
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

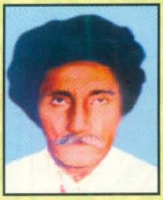
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

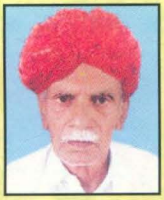
श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

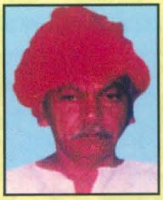
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

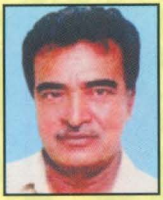
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

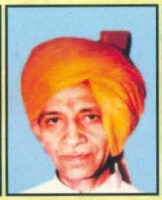
स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मडवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

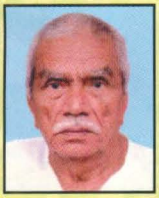
श्री मानसिंहजी राजगढ़

स्व. श्री कालूरामजी औरा टोपीवाले, रतलाम

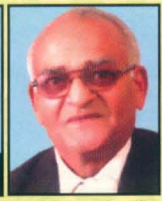
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी राठौर (बड़नगर)

हमारे गौरव

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

स्व.श्री रितेशकुमार
शांतिलालजी डुंगरवाल, इन्दौर

स्व.श्री सागरमल भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

स्व.श्रीमती चन्द्रकान्ता
सागरमलजी भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

समाज गौरव
श्री शांतिलाल सकलेचा
रानापुर

कर्नाटक

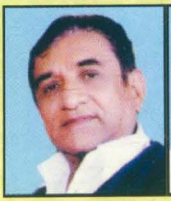

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

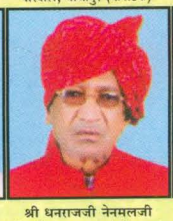

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

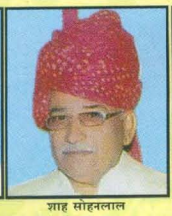

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
मई 2021 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 69 अंक 5
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2077

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

त्याग के चरम शिखर पर

सोम शर्मा गिड़गिड़ाने लगा–

'प्रभो ! मैं निर्धन, गरीब, घर में कुछ नहीं, साथ ही अभागा भी। जब आप वर्षीदान प्रदान कर रहे थे, नरेश्वर तब मैं विदेश में था, मुझे ज्ञान ही नहीं हुआ। ओ मेरे सर्वस्व मेरी कंगाली दूर कीजिये, आपने सब को दिया मुझे भी कृपावन्त कीजिये। मेरे महाराज, सम्राट्, भाग्यविधाता।'

भगवान महावीर राजकीय व सांसारिक साधनों का त्याग कर संन्यासी के रूप में पैर – पैर बियावान जंगल में बढ़े जा रहे थे।

सोमशर्मा रोया, बिलखता रहा, हाथ–पैर जोड़कर विनय प्रार्थना करता रहा। भगवान महावीर ने इन्द्र प्रदत्त देवदुष्य वस्त्र का आधा भाग उसे दे दिया।

वे भ्रमण करते रहे। सोम शर्मा एक व्यापारी की सलाह पर देवदुष्य वस्त्र का शेष आधा भाग लेने के लिये फिर जंगल में आ गया। एक वर्ष तक भगवान महावीर के पीछे–पीछे घूमता रहा। एक दिन सुवर्ण बालुका नदी के किनारे शेष वस्त्र एक कंटीली झाड़ी में उलझ गया। भगवान श्री महावीर चलते रहे। वह वस्त्र सोम शर्मा ने झाड़ी से ले लिया। भगवान ने इस वस्त्र खण्ड की कोई चिन्ता नहीं की।

वे त्याग के चरम शिखर पर आरोहण कर चुके थे, तपस्या के हिमालय की ओर लगातार बढ़ रहे थे।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	राजेन्द्रसूरिजी वचनामृत	09
2.	सर्व विघ्न विनाशक मंत्र (संकलन- विनय छिपानी)	10
3.	प्रवचन- घमण्डी की दो भूलें (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	11
4.	प्रातः स्मरणीय प्रतिपल वंदनीय तीर्थंकर (डॉ. दिलीप धींग)	13
5.	अक्षय तृतीया की प्रेरणा हमारे जीवन के लिये (अध्यक्षीय पाती- वाघजीभाई वोरा)	17
6.	परिषद् का सच्चा कार्यकर्ता (अध्यक्षीय संदेश- रमेशभाई धरू)	18
7.	मेरे वर्तमान जीवन का शिलालेख (2) (सम्पादकीय- सुरेन्द्र लोढ़ा)	19
8.	प्रश्नोत्तरी - जम्बूद्वीप के सात खण्डों के नाम क्या हैं ?	21
9.	श्री मिथिला तीर्थ खोज व पुनर्स्थापना (श्री ललित कुमार नाहटा)	22
10.	इच्छाओं से मुक्त बनें- अतिथि रचना (आचार्यश्री भद्रगुप्तसुरिश्वरजी म.सा.)	25
11.	बाल शाश्वत (सुशील छाजेड़, पारा)	27
12.	हमारा चिंतन आत्मत्व पर रहे (श्री शेखचन्द जैन)	28
13.	अप्रमाद साधना का सूत्र है (श्री शान्तिलाल सगरावत)	29
14.	जिन प्रणित धर्म धारण करो (चिन्तन का चित्रांकण) (गच्छाधिपति धर्मदिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	30
15.	उत्तम आहार- शाकाहार- मांसाहार - तामसिकता का जन्मदाता (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा.)	31
16.	गणधरवाद (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	32
17.	तीर्थंकर - तारेश - श्रेणिक पुत्र अभयकुमार (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	33
18.	श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)	35
19.	दीक्षा अर्थात् ? (साध्वीश्री श्रुतिकदर्शनाश्रीजी म.सा.)	37
20.	आत्मा नित्य है (साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	38
21.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (संशोधक- मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	41
22.	मन पर नियन्त्रण का आध्यात्मिक विज्ञान (डॉ. अचल भगत)	42
23.	किस्मत की बात (धारावाहिक उपन्यास) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	43
24.	अतिथि रचना- संसार की दिव्य ज्योति है- प्रेम (मुनिश्री अक्षयसागरजी म.सा.)	45
25.	अठारह सावद्य प्रवृत्तियों से बचें (श्री शांतिलाल दुगड़)	47
26.	श्री जयन्तसेन जयनांद	48
27.	पूज्य स्व. जयंतसेनसूरिजी साहब के स्मृति रूप हस्ताक्षर	49
28.	मधुकर- मौक्तिक	50
29.	जिनशासन की वर्णमाला (साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	51
30.	यदि निंदा करनी ही है तो स्वयं ही करें (श्रीमती आशा जैन)	54
31.	आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा (सपना निर्देश श्रीश्रीमाल)	55
32.	गुजराती संभाग	56
33.	कुमकुम सने पगलिये	72
32.	परिषद प्रांगण से	78
33.	समाज सौरव	85
34.	जैन विश्व	86
35.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	87-88

दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिजी वचनामृत

❖ व्यभिचार सेवन करना कभी सुखदायक नहीं। इससे परिणामतः अनेक व्याधि तथा दुःखों में घिरना पड़ता है। उक्ति भी है कि 'भोगे रोगभयं' विषय भोगों में रोग का भय है, जो वास्तविक कथन है। व्यक्तिमात्र को अपने जीवन की तंदुरुस्ती के लिए परस्त्री, कुलांगना, गोत्रजस्त्री, अत्यंतस्त्री, अवस्था में बड़ी स्त्री, मित्रस्त्री, राजराणी, वेश्या और शिक्षक की स्त्री, इन नौ प्रकार की स्त्रियों के साथ कभी भूलकर के भी व्यभिचार नहीं करना चाहिए। इनके साथ व्यभिचार करने से लोक में निंदा और नीतिकारों की आज्ञा का भंग होता है, जो कभी हितकर नहीं है।

❖ चोरी, स्त्रीप्रसंग और उपकरण-संग्रह ये तीनों बातें हिंसामूलक है और संयम-साधकों को इनका सर्वथा परित्याग कर देना ही लाभकारक है। अजैन शास्त्रकारों का भी मंतव्य है कि जो संन्यासी चोरी, भोग विलास और माया का संग्रह करता है, वह कनिष्ठ योनियों में बहुत कालपर्यंत भ्रमण करता रहता है। इसी प्रकार 1. गृहस्थ की आज्ञा के बिना उसके घर की कोई भी वस्तु वापरना। 2. किसी की बालक-बालिका या स्त्री को फुसलाकर भगा देना। 3. और जिनेश्वर निषेधित बातों का आचरण अथवा शास्त्रविरूद्ध प्ररूपणा करना और 4. गुरु या वडील की आज्ञा के बिना गोचरी लाना, खाना या कोई भी वस्तु किसी को देना-लेना ये चारों बातें चोरी में ही प्रविष्ट हैं। अतः संयमी साधुओं को इन बातों से भी सदा दूर रहना चाहिए, तभी उसका संयम सार्थक होगा।

❖ रात्रि भोजन के ये चार भांगे हैं- 1. दिन को बनाया, दिन में खाया, 2. दिन को बनाया, रात्रि में खाया, 3. रात्रि को बनाया दिन में खाया, 4. अंधेरे में बनाया, अंधेरे में खाया। इन भांगों में से पहला भांगा ही शुद्ध है। रात्रिभोजन में त्यागियों को इन भंगों में सावधानी रखकर और परिहरणीय भांगों को छोड़कर अपना नियम पालन करना ही लाभदायक है। इसी प्रकार रसचलित रातवासी, अभक्ष्य और नशीली चीजें भी वापरना अच्छा नहीं है। इन वस्तुओं को वापरने से शरीर के स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है।

◆◆◆

मंत्र साधना

सर्व विघ्न विनाशक मंत्र

संकलन– विनय छिपानी

श्लोक – भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभाणा–

मुद्योतकं दलित पापतमो वितानम् ।

सम्यक् प्रणम्य जिनपाद युगं युगादा –

वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।।1।।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हणमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः असि अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

मन्त्र – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

साधन–विधि– पवित्रता पूर्वक नित्य 108 बार ऋद्धि –मन्त्र का जाप करने तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सब प्रकार के विघ्न तथा उपद्रव दूर होते हैं।

प्रवचन

घमण्डी की दो भूलें

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महानुभावों !

चरम तीर्थंकर महावीर स्वामी अपने अन्तिम उपदेश का प्रारम्भ करते हुए शिष्यों से कह रहे हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुव्विं सुणेह मे ।।

संयोगों से मुक्त अनगार भिक्षु के लिए मैं विनय का स्वरूप प्रकट करने वाला हूँ। आप क्रमशः मेरी बातें सुनिये।

आत्मा से संयुक्त होने वाली दूसरी कषाय अभिमान के विषय में हम यहाँ चिंतन कर रहे हैं :-

सर्पों का राजा वासुकि नाग अपने दाँत में प्रचुर विष रखने पर भी घमंड नहीं करता, परन्तु बिच्छू के पास एक बूँद विष होता है, फिर भी वह डंक को घमंड से उठाये- उठाये फिरता है।

विषभारसहस्रेण, गर्वं नायाति वासुकि :।
वृश्चिको बिन्दुमात्रेणाप्यूर्ध्वं वहति कण्टकम् ।।

ठाकुर स्वरूपसिंहजी अपने शिष्य राजिया को संबोधित करते हुए एक सोरठे के माध्यम से राजस्थानी भाषा में क्या ही सुंदर ढंग से यही दृष्टांत यों कहते हैं :-

मणिधर विष अणमाव, धारै पण नाणे मगज ।
बिच्छू पूँछ बणाव, रारवै सिर पर राजिया ।।

पोखर का गँदला जल पीकर भी मेंढ़क टर्र-टर्र करने लगता है, परन्तु दूसरी ओर मधुर आम के फल खाकर भी तोता घमंड नहीं करता। एक अंगुल गहरे पानी में भी मछली फड़फड़ाती है, परन्तु अथाह असीम जल वाले समुद्र में रहकर भी व्हेल मछली को गर्व नहीं होता। थोथा चना बाजे घना। जो चना थोथा होता है, उसमें से आवाज निकलती है, परन्तु जो चना ठोस होता है, वह आवाज नहीं करता। सोंठ का टुकड़ा भी मिल जाये तो चूहा अपने को पंसारी (जड़ी-बूटी रखने वाला व्यापारी) समझता है, क्योंकि अखिर वह चूहा ही तो है? साधारण व्यक्ति भी इसी प्रकार कहीं से जरा-सी

जानकारी प्राप्त हो जाये तो अपने को बड़ा भारी पंडित समझने लगता है। दूसरी ओर पंडित विनीत हो जाता है, क्योंकि उसकी जानकारी जैसे-जैसे बढ़ने लगती है, वैसे ही वैसे अपने को अज्ञानी मानने लगता है। एक शायर ने अपनी इस दशा का परिचय देते हुए लिखा है-

हम जानते थे, इल्म से कुछ जानेंगे।
जाना तो यह जाना कि, न जाना कुछ भी ।।

शास्त्र पढ़कर हम विद्वान बनेंगे- ऐसा मान बैठे थे, परन्तु शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद हमने यही समझा कि हम कुछ नहीं जानते, क्योंकि अध्ययन से बुद्धि का तो विकास होता है, परन्तु ज्ञान प्राप्त नहीं होता। ज्ञान तो अपने चिंतन-मनन से प्राप्त होता है, अनुभव से प्राप्त होता है, पुस्तकों से नहीं। पुस्तकों से सहायता मिल सकती है अवश्य, क्योंकि उसमें दूसरे के अनुभव लिखे होते हैं, परन्तु अपना अनुभव ही हमें सच्चा ज्ञानी बना सकता है। सच्चे ज्ञानी में अभिमान नहीं, विनय होता है।

जो व्यक्ति पानी में तैर रहे होते हैं, वे ही बोल सकते हैं, परन्तु जो पानी में डुबकी लगा लेते हैं, वे बोल नहीं सकते। इस प्रकार जो ज्ञान की सतह पर होते हैं, वे ही बड़बड़ाहट करते हैं, बकवास करते हैं, परन्तु गंभीर ज्ञानी मौन रहते हैं। बहुत आवश्यक होने पर ही वे खूब सोच-समझकर बोलते हैं।

पहले पंडितों में शास्त्रार्थ हुआ करता था। शास्त्रार्थ का मतलब यह होता है कि अमुक शास्त्रवाक्यों का अर्थ मैं ऐसा करता हूँ अथवा अमुक-अमुक शास्त्रीय वाक्य मेरी बात का समर्थन करते हैं, इसीलिए मेरी बात सच्ची है, मानने योग्य है। यही बात विपक्षी पंडित भी कहता था। इस शास्त्रार्थ के मूल में गर्व (अहंकार) होता है-

वादमिच्छन्ति गर्विता :।।

जिसमें गर्व होता है, उसका चिंतन कुछ-कुछ इस प्रकार होता है : जो मेरी तरह सोचता है वही बुद्धिमान है, जिस आदमी के विचार मेरी विचारधारा से मेल नहीं खाते वही मूर्ख है, जिसका आचरण मैं करता हूँ, वही सबके लिए उपादेय कार्य है, आदर्श कर्त्तव्य है।

आश्चर्य होता है यह देखकर कि दूसरों के घमंड से नफरत करने वाला स्वयं अपने घमंड को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। घमंडी दो भूलें एक साथ करता है। अपने को सर्वोत्तम मानना उसकी पहली भूल है और दूसरों को हीन (तुच्छ) समझना उसकी दूसरी भूल है।

अभिमानी कहता है : 'जगत मेरा सेवक है', जबकि विनयवान् यह कहता है : 'मैं जगत का सेवक हूँ।' यही उन दोनों में अंतर है। फटी जेब में धन (रूपये-पैसे) जिस प्रकार सुरक्षित नहीं रहता, उसी प्रकार अभिमानी के मन में विद्या सुरक्षित नहीं रह सकती।

अभिमानी के हृदय में, ज्ञान न करता धाम।
फटी जेब में क्या कभी, रह सकते हैं दाम ।।

(क्रमशः)

प्रातः स्मरणीय प्रतिपल वंदनीय तीर्थंकर

(डॉ. दिलीप धींग)
निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

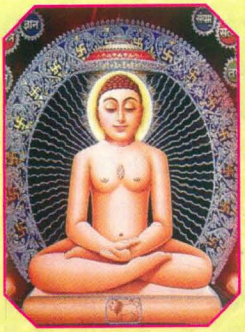

भारतवर्ष की प्राचीन और प्रागैतिहासिक दो परम्पराएँ हैं- श्रमण और वैदिक। वैदिक परम्परा में वेद को प्रमाण माना गया है। वहाँ वेदों को अपौरुषेय मानते हुए पुरुष को प्रमाण नहीं माना गया है। जैन परम्परा में पुरुष यानी जो सर्वज्ञ हैं, तीर्थंकर परमात्मा हैं, वे प्रमाण हैं अर्थात् उनके वचन और प्रवचन प्रमाण हैं, आगम प्रमाण हैं। आगम पौरुषेय हैं। इसलिए आगम की प्रामाणिकता का श्रेय अन्ततः सर्वज्ञ पुरुष यानी तीर्थंकर भगवान को जाता है।

समझने और समझाने के लिए आचार्यों ने सम्पूर्ण आगम साहित्य,आगमतुल्य साहित्य और आगमों पर आधारित साहित्य को चार विषयों में वर्गीकृत किया है। इस वर्गीकरण को अनुयोग कहते हैं। अनुयोग चार हैं- धर्मकथानुयोग, द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग और चरणकरणानुयोग। 'योग' के साथ 'अनु' उपसर्ग से बना यह अनुयोग शब्द बहुत अर्थपूर्ण है। ज्ञान का विषयानुसार क्रमबद्ध विशद् अध्ययन अनुयोग है। अर्थात् एक अर्थ में अनुयोग, योग से भी सूक्ष्म कार्य है, ध्यान है। इसीलिए अध्ययन को भी ध्यान कहा गया है- अज्झयणमेव झाणं।

स्वाध्याय का अंतिम प्रकार है- धर्मकथा। स्वाध्याय के पाँच भेदों में धर्मकथा को अंतिम रखने का आशय यही है कि व्यक्ति अध्ययन अथवा स्वाध्याय के सभी आवश्यक चरणों को पूरा करके धर्मकथा करने या उपदेश प्रदान करने के योग्य बन सकता है। किसी को धर्मज्ञान और तत्वज्ञान कराने से पूर्व स्वयं का नियोजित स्वाध्याय आवश्यक है। इस प्रकार स्वाध्याय के धर्मकथा भेद में सभी अनुयोगों का समावेश माना जाता है। धर्म की कथाओं के माध्यम से तत्त्व (द्रव्य), गणित, संसार का स्वरूप और साधना के सूत्रों का ज्ञान भी होने लगता है। फलतः व्यक्ति अन्य अनुयोगों की ओर अग्रसर होने की भूमिका या स्वरूप और साधना के सूत्रों का ज्ञान भी होने लगता है। फलतः व्यक्ति अन्य अनुयोगों की ओर अग्रसर होने की भूमिका या पात्रता अर्जित कर सकता

है। उसके लिए अन्य अनुयोगों में प्रवेश आसान हो जाता है। जनजीवन में सदाचार की प्रतिष्ठा के लिए धर्मकथाएँ और महापुरुषों के जीवन चरित सदैव मार्गदर्शक बने हैं। धर्मकथा की विशिष्ट महत्ता के कारण ही धर्मकथानुयोग को प्रथम स्थान पर रखा गया है। दिगम्बर जैन परम्परा के साहित्य में तो धर्मकथानुयोग को प्रथमानुयोग के नाम से ही जाना जाता है।

प्रथम धर्मकथानुयोग के अंतर्गत तीर्थंकर परमात्मा और उनकी शाश्वत परम्परा के सम्पूर्ण कथा साहित्य को लिया जाता है। इसमें धर्म से जुड़ी कथाएँ, आत्मकथाएँ, कहानियाँ, उपन्यास, रूपक, दृष्टांत, प्रसंग, घटनाएँ, संस्मरण, जीवनियाँ, इतिहास और इनसे सम्बन्धित सभी प्रकार के साहित्य का समावेश होता है। तीर्थंकर आध्यात्मिक जगत में सर्वोच्च और सर्वोत्तम महापुरुष होते हैं। इसलिए प्रथमानुयोग में तीर्थंकर भगवान के जीवन और इतिहास का प्रथम और प्रधान स्थान व सम्मान है।

प्रथमानुयोग में कई विषयों और उप-विषयों का समावेश होता है। आचार्य हस्ती प्रणीत 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' में ऐसे पच्चीस विषय दिये गये हैं- (1) तीर्थंकरों के पूर्वभव (2) पूर्व भवों की यात्रा (3) आयु (4) च्यवन (5) जन्म (6) अभिषेक (7) राज्य (8) मुनिदीक्षा (9) तप-साधना (10) केवलज्ञान की प्राप्ति (11) प्रथम प्रवचन (12) शिष्य- शिष्याएँ (13) गण और गणधर (14) आर्या प्रवर्तिनी (15) चतुर्विध संघ का परिमाण (16) केवलज्ञानी (17) मनःपर्यवज्ञानी (18) अवधिज्ञानी (19) श्रुतज्ञान व द्वादशांगी (20) वादी (21) अनुत्तरोपपात वाले जीव (22) उत्तर वैक्रिय वाले जीव (23) सिद्धगति को प्राप्त होने वाले जीव (24) सिद्धि या मोक्ष का मार्ग (25) अन्तिम आराधना इत्यादि।

तीर्थंकर एक ऐसा पद है, जिसे उत्कृष्ट साधना और अर्हता से ही पाया जा सकता है। जैन ग्रंथों में इस अर्हता अथवा योग्यता को तीर्थंकर नामगोत्र पुण्य कर्म कहा गया है। अनेक भवों की सुदीर्घ साधना के फलस्वरूप तीर्थंकरत्व की प्राप्ति होती है। जैन ग्रंथों में तीर्थंकर पद की अर्हता हासिल करने के लिए अनेक विशिष्ट साधनाओं के उल्लेख हैं। प्राकृत भाषा के अंग आगम णायाधम्मकहाओ (ज्ञाताधर्मकथा) के आठवें अध्ययन में तीर्थंकर नामगोत्र के उपार्जन के लिए बीस प्रकार की आराधनाएँ बताई गई हैं- (1) अरिहंत (2) सिद्ध (3) प्रवचन (4) गुरु (5) स्थविर (6) बहुश्रुत और (7) तपस्वी मुनि की सेवा-भक्ति (8) निरंतर ज्ञान में उपयोग (9) निर्दोष सम्यक्त्व का पालन (10) गुणवानों का विनय (11) विधिपूर्वक षडावश्यक की आराधना (12) व्रतों का निर्दोष अनुपालन (13) वैराग्यभाव में वृद्धि (14) शक्तिपूर्वक तप-त्याग (15) चतुर्विध संघ को समाधि उत्पन्न कराना (16) त्यागी - व्रतियों की

सेवा (17) अपूर्वज्ञान का अभ्यास (18) वीतराग-वाणी पर श्रद्धा (19) सुपात्र दान एवं (20) जिनशासन की प्रभावना करना।

यह आवश्यक नहीं है कि बीसों ही बोलों की आराधना की जाए। किन्हीं एक-दो बोलों की उत्कृष्ट-अनुत्तर साधना तथा अध्यवसायों की अतिशय उच्चता से भी तीर्थंकर बनने की अर्हता अर्जित की जा सकती है। तत्त्वार्थसूत्र व महापुराण में तीर्थंकर बनने के लिए सोलह कारणभूत भावनाओं की आराधना आवश्यक मानी गई है। उन सोलह भावनाओं में भी ज्ञाताधर्मकथा के बीस बिन्दुओं का अंतर्भाव हो जाता है अथवा उक्त बीस बोलों में सोलह भावनाओं का समावेश हो जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार आत्मा के विकास की यात्रा सम्यग्दर्शन से होती है। सम्यग्दर्शन होने के बाद आत्मा का अनंत संसार सीमित हो जाता है। तीर्थंकर भगवान के पूर्व जन्मों की कहानी भी उनके उसी जन्म से प्रारंभ मानी जाती है, जिस जन्म में उन्हें सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई हो। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के बाद भी जीव अपने कर्म और आत्म-पुरुषार्थ के अनुसार उत्थान-पतन के अनेक रोमांचक और रहस्यमय पड़ावों से गुजरता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाले जीव साधना करके पन्द्रह प्रकारों से मुक्त होते हैं। उनमें एक कालखण्ड में विभिन्न भेदों से असंख्य जीव मुक्त होते हैं, सिद्धावस्था प्राप्त करते हैं। लेकिन भरत और ऐरावत क्षेत्र में एक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में केवल चौबीस विशिष्ट साधक ही तीर्थंकर पद प्राप्त करते हैं और मुक्त होते हैं। इस प्रकार अब तक अनंत चौबीसियां हो चुकी हैं अर्थात् जैन धर्म शाश्वत है। यह अनादि काल से है और अनंत काल तक रहेगा।

तीर्थंकर नाम-गोत्र पुण्य का उपार्जन तीर्थंकर पद प्राप्त करने के तीन भव पूर्व ही होता है। इन तीन भवों की गणना में तीर्थंकर पुण्य प्रकृति की साधना का भव और तीर्थंकर का भव भी सम्मिलित है। जिस विशिष्ट आराधना के कारण आत्मा तीर्थंकरत्व के उत्कृष्ट पुण्य का अर्जन करता है, तीर्थंकरों के चरित में उस आराधना अथवा आराधनाओं के उल्लेख मिलते हैं। इन उल्लेखों के साथ साधक को यह प्रेरणा दी जाती है कि वह भी वैसी उत्तम आराधना करे, जिससे तीर्थंकर जैसा पद पा सके। यह सत्य है कि तीर्थंकरत्व की प्राप्ति सबके लिए सुलभ नहीं होती है, फिर भी यदि साधक बीस बोलों या सोलह भावनाओं की अथवा एक या एकाधिक बोलों/भावनाओं की आराधना करता है तो वह आराधना उसके लिए विशिष्ट फलदायी और परम कल्याणकारी होती सिद्ध होती है।

श्रमण परम्परा (जैन धर्म) में तीर्थंकर धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले होते हैं। वे सम्पूर्ण लोक में उजास करने वाले, जन-जन का मार्गदर्शन करने वाले तथा जीवमात्र का कल्याण करने वाले सर्वपूज्य सर्वोच्च आध्यात्मिक महापुरुष होते हैं। इस

अवसर्पिणी काल में जैन धर्म का प्रारंभ प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव से माना जाता है। उनके बाद तेबीस तीर्थंकर और हुए। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। सभी तीर्थंकरों का अपना-अपना धर्मशासन चलता है। वर्तमान में भगवान महावीर का धर्मशासन गतिमान है। इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक चौबीसों ही तीर्थंकर सबके लिए सर्वप्रथम पूजनीय और परम आराध्य हैं। चउवीसत्थव (लोगस्स पाठ) में 24 तीर्थंकर भगवान की स्तुति, कीर्तन और वन्दन किया गया है। चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति स्वरूप अनेक आचार्यों और कवियों ने विभिन्न चौबीसियों की अर्थपूर्ण और भावपूर्ण रचना भी की है। ऐसे प्रातः स्मरणीय और प्रतिपल वंदनीय तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में सबकी विशेष जानने की भावना रहती है। वर्तमान में हमारे पास भगवान महावीर का जीवन और उनके वचन-प्रवचन ही विशेष घटनाओं और प्रसंगों को ही हम सुरक्षित रख पाए हैं। इसके लिए हमारे पूर्वाचार्यों और विद्वानों ने अकल्पनीय परिश्रम किया है।

तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में आगमों तथा अन्य ग्रंथों में विभिन्न दृष्टियों के साथ सामग्री उपलब्ध है। यह सामग्री कहीं व्यवस्थित तो कहीं बिखरी हुई एवं कहीं विशेष प्रसंग के रूप में तो कहीं सूत्र या संकेत रूप में मिलती है। कई आचार्यों ने 63 शलाका पुरुषों एवं 54 महापुरुषों के जीवन पर स्वतंत्र ग्रंथों की रचना भी की। तिरेसठ शलाका पुरुष हो या चौपन महापुरुष सबमें चौबीस तीर्थंकरों का जीवन सर्वप्रथम समाविष्ट है। केवल 24 तीर्थंकरों के जीवन पर भी अनेक जीवन चरित या जीवनियाँ प्रकाशित हुई हैं।

विभिन्न क्षेत्रों, कालखण्डों, भाषाओं में लिखे तीर्थंकर चरित मिलते हैं। हर युग में उस युग की भाषा और शैली में तीर्थंकर भगवान का जीवन लिखा, बाँचा और गाया गया है। वर्तमान युग में भी तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में अनेक लेखकों, कवियों और विद्वानों ने अपनी-अपनी शैली में लिखा तथा उनकी स्तुति और वन्दना की है। हमें भी उस साहित्य को वर्तमान भाव, भाषा व शैली में प्रस्तुत करना चाहिये तथा जो प्रस्तुत है, उसका स्वाध्याय करना चाहिये। तीर्थंकर परमात्मा, उनके जीवन, उनके जीवन-संदेशों और उनकी परम्परा के बारे में सरल सटीक साहित्य का सृजन, स्वाध्याय तथा आधुनिक माध्यमों से उनका प्रचार-प्रसार समय की मांग है और आवश्यकता भी। श्रेष्ठ साहित्य को अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए सभी प्रकार के छोटे-बड़े प्रयास किये जाने चाहिये।

7, अय्या मुदली स्ट्रीट,
साहुकारपेट, चेन्नई- 600001

◆◆◆

अध्यक्षीय पाती

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

अक्षय तृतीया की प्रेरणा हमारे जीवन के लिये

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी इस अवसर्पिणी काल में सभ्यता तथा संस्कृति के आदि पुरुष थे। उन्होंने ही कल्पवृक्षों के पतन के पश्चात् मानव के सम्मुख उपस्थित कठिनाइयों के समाधान में उसे ज्ञान व कला का मार्ग दिखाया। सम्राट ऋषभकुमार ने जन राजसी वैभव का त्याग कर संयम पथ को अपनाया तब वे प्रथम पारणा करने के लिये ग्राम-ग्राम तथा नगर-नगर भ्रमण करते रहे। तब मानव समुदाय को गोचरी वोहराने का ज्ञान ही नहीं था। जहाँ भी श्री ऋषभदेवजी जाते थे लोग उन्हें हीरे, मोती, रत्न जैसी सांसारिक वस्तुएँ यहाँ तक कि अपनी बालिकाएँ ग्रहण करने का आग्रह करते थे लेकिन शुद्ध आहार कोई वोहराने नहीं आता। इस प्रकार भगवान ऋषभदेवजी को भिक्षा के लिये विचरण करते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया। वे हस्तीनापुर आये, राजा सोमप्रभ के पुत्र श्रेयांस कुमार ने जो बाहुबली के पौत्र थे ने जब ऋषभदेव को देखा तो उन्हें जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। उनने अपने पूर्व भव का दर्शन किया। उसमें श्रेयांस को गोचरी की पूरी विधि समझ में आ गई। वे ऋषभदेव के सन्मुख पहुँचे एवं उसी विधि के अनुसार गोचरी वोहराने का निवेदन किया। इस क्षण से पूर्व कोई उनके महल में श्रेयांस कुमार को गन्ने के रस से भरे हुए 108 घड़े भेंट करके गया था। श्रेयांस कुमार ने वही गन्ने का रस वोहरा कर भगवान को पारणा करवाया। यह शुभ दिन वैशाख शुक्ला तृतीया था। श्रेयांस कुमार ने मोक्षफल की प्राप्ति की तभी से यह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज भी वर्षीतप के तपस्वी गन्ने के रस से हस्तीनापुर अथवा श्री सिद्धाचल तीर्थ पहुंचकर इस दिन अपनी तपस्या का पारणा करते हैं। इस शुभ पर्व पर प्रत्येक व्यक्ति को शुभ भावना करना चाहिये कि मैं भी तपस्या को जीवन में ग्रहण कर अपने कर्मों का क्षय-उपशम तथा क्षयोपशम करते हुए मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त करूँ। कर्म किसी को नहीं छोड़ते हैं। ऋषभदेवजी ने भी पूर्व में अंतराय कर्म का बंध किया था, वही उदय में आया और उसी कर्म के फल में उन्हें एक वर्ष तक भिक्षा नहीं मिली उपवास करते रहना पड़ा।

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

परिषद का सच्चा कार्यकर्ता

एक बार छत्ते ने मधुमक्खी से पूछा– 'तू ! चुपचाप मधु एकत्र करती है तथा मनुष्यों के उपयोग हेतु अर्पण कर देती है... तेरे ऐसे शुभ तथा सेवा कार्य के लिये मनुष्य ने कभी तुझे पुरस्कृत नहीं किया लेकिन फिर भी तूँ त्याग व सेवा में संरत् रहती ही है।'

मधुमक्खी ने उत्तर दिया– 'मुझमें और मनुष्य में यही अंतर है। पुण्य कार्य करना मेरा कर्त्तव्य है। पुण्य कार्य के नगाड़े नहीं बजाये जाते हैं।'

परिषद् के संस्कारों से सिंचित सच्चा कार्यकर्त्ता भी वही है जो सेवा तथा पुण्य के कार्यों के नगाड़े नहीं बजाता, इन्हें कर्त्तव्य मानकर इनकी सम्पूर्ति में जुटा रहता है। जो नाम यश या पद की चाह में दौड़ लगाते हैं, वे न परिषद् के उद्देश्यों को समर्पित परिषद्जन हैं, न पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के असली भक्त या उनके उपदेशों से संकल्पित संगठन प्रेमी हैं।

हमारा कर्त्तव्य परिषद में सक्रिय रहते हुए सेवा, श्रम, त्याग को प्राथमिकता देना है। परिषद की स्थापना को 62 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, आज जो इसका वटवृक्ष रूप दिखाई देता है, उसका श्रेय पूज्य दादा गुरुदेव की कृपा एवं पूज्य पुण्य सम्राट की पोषण ओसजन को तो है ही परिषद की स्थापना से अभी तक त्यागी, तपस्वी, रातदिन अनापेक्षा के जुटे रहने वाले हमारे वरिष्ठ पदाधिकारियों को भी है। जिनने अपने आपको सदैव समाज तथा गुरुमार्ग का विनम्र स्वयं सेवक माना। आज भी इस वटवृक्ष की हरियाली परिषदजनों से स्वयंसेवक का भाव ही मांग रही है। परिषद को अपना जीवन होम कर देने वाले युवाओं की आवश्यकता है। पूज्य पुण्य सम्राट की परिभाषा के अनुसार युवा वह नहीं जो उम्र की सीमा से बंधकर अपने आपको सीमित कर लेता है, बल्कि वह जिसमें चेतना, उर्जा, कार्य करने की इच्छा तथा गुरुद्वारा दर्शित मार्ग पर न्यौछावर हो जाने का जज्बा है। आज भी परिषद के मंच पर सत्तर से पचहत्तर वर्ष या इससे अधिक उम्र के समाजसेवी सजे हुए हैं तथा वे अपने आपको स्वयंसेवक ही मानते हैं। ऐसे वरिष्ठ भी हमारे आदर्श हैं। परिषद हमारा एक विशाल परिवार है, इसे उन्नत तथा उज्ज्वल बनाने की अंतर्प्रेरणा हम अपने आप में जीवंत तथा जागृत बनाये रखें।

◆◆◆

सम्पादकीय

मेरे वर्तमान जीवन का शिलालेख (2)

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

आत्मा का शुद्ध स्वभाव रूप ही आत्मा का स्वधर्म है। जब वह परधर्म रूप, राग-द्वेष का सेवन करता है तो बंध जाता है। बंधना मेरा धर्म नहीं है, मुक्त होना मेरे जीवन का शिलालेख है। ज्ञानियों का कथन है कि 'तेरा इस संसार में यदि कोई है तो वह एकमात्र आत्मा है। वास्तविकता भी यही है। मुझे संसार के किसी प्रयत्न में नहीं गिरते हुए, किसी लोभ में नहीं पड़ते हुए, मान के किसी पर्वत पर चढ़ कर नहीं इतराते हुए केवल आत्मा के कल्याण का पुरुषार्थ करना है। 'मैं आत्मा हूँ।' ऐसा विचार मन की ओर परिणमन करवाना है। जिसका मन बिगड़ जाता है, उसका भव बिगड़ जाता है। हम मन नहीं आत्मा हैं, आत्मा की शक्ति अचिन्त्य है। उसे निष्क्रिय करने की पुद्गल में थोड़ी-सी भी शक्ति नहीं है। हमारे सामने अच्छी -बुरी घटनाएँ आती हैं। वे पूर्वकृत शुभाशुभ कर्म का फलित रूप हैं। यह विचारकर आत्म घनीभूत करने का प्रयास ही हमारे लिए अभिष्ट है।

हमारी साधना की एक स्थिति आत्मा में समाने या आत्मा में रहने की है। तीर्थंकर महावीर स्वामी के सम्मुख सिंहनूक उपस्थित हुआ, उसने कहा 'प्रभो ! मेरे शरीर में असह्य वेदना है, इसे सहन करना सम्भव नहीं है, मेरा त्रास एकदम चरम स्थिति पर पहुँच रहा है। प्रभो ! आज मुझे त्रास देने के लिए मृत्यु दे दीजिए। अब मैं नहीं रह पा रहा हूँ।'

तीर्थंकर महावीर ने फरमाया- 'मृत्यु है ही नहीं, जो नहीं है, वह तुम्हें कहाँ से दे दूँ। मृत्यु नहीं हैं, मुक्ति है, उसकी साधना कर, उसकी प्राप्ति कर, उसके लिए तू अपने आप में समा, अपनी आत्मा को पहचान, अपनी आत्मा को निर्विषय, निर्विकल्प, निर्विचार बना यही तेरा अपना आत्मसाक्षात्कार होगा, तू आत्मा में रह, निज स्वरूप में स्थिरता कर ! यही तेरे लिए सही निदान है, सच्चा योग है।' तीर्थंकर महावीर प्रभु ने एक आत्मार्थी के लिये सत्य स्थिति का पारदर्शन करवा दिया।

एक जैनाचार्यश्री से एक गुरुभक्त ने प्रश्न किया- 'मुझे कहां रहना है?' उन्होंने उत्तर दिया- 'आत्मा में रहो।' बाद में सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुए फरमाया- 'स्वद्रव्य से आत्मा' में रहना याने शुद्ध आत्मा में उपयोग को स्थिर रखना, स्वक्षेत्र में आत्मा में रहना याने अवगाहन में स्थित आत्म प्रदेशों में उपयोग

को स्थिर करना, स्वकाल से आत्मा में रहना याने वर्तमान समय में रहना तथा स्वभाव से आत्मा में रहना याने आत्मभाव में रहना। आपने फरमाया- 'मैं सुखी हूँ, मैं दुखी हूँ यह विचार नहीं करते हुए यह उपयोग करें कि- 'मैं आत्मा हूँ।'

जिनको आत्मभावना में जाग्रत रहने की आत्म परिणति की ओर आकर्षण है, जो स्वयं में रहने के इच्छुक हैं जिनके मन-वचन- कर्म के योग मुक्ति के लिए समर्पित हैं। आत्मा की शुद्धि एवं उपरांत सिद्धि जिनकी अंतरदशा बन चुकी है। वे आत्माएँ ही सम्यग्दर्शन , सम्यक्ज्ञान तथा सम्यक्चरित्र रूपी त्रिरत्न की आराधना कर सकते हैं। ऐसे आत्मार्थी जीवों के लिए कषाय की उपशांति सर्व प्राथमिक है। उसकी वैचारिकता उसे प्रेरित करती है कि कषाय मेरा स्वरूप नहीं है। मैं निर्मल आत्मा हूँ। क्रोध- मान-माया- लोभ कषायों में परिणमन परभाव हैं जो आश्रव के जन्मदाता हैं, मुझे कषायों में नहीं रहना है, मुझे तो मोक्ष में निवास करना है। मेरा, परमलक्ष्य, मेरी अंतिम इच्छा मोक्ष है। मेरी खोज सुख की है । प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है तथा उसके लिए प्रयत्न करता है। लेकिन वह यह नहीं जान पाता है कि सच्चा सुख किसे कहना चाहिए ? यश, प्रतिष्ठा, धन, सम्पत्ति, परिवार, सम्मान, परिग्रह के संचय तथा इनकी अभिवृद्धि को सुख मानता है। भौतिक साधनों का प्रचण्डता के साथ विस्तार उसकी सुख की परिभाषा हैं। उसकी अभिलाषाएं, इच्छाएँ, लालसाएँ उसकी सम्पूर्ण ऊर्जा अथवा मन-बुद्धि क्षमता के मार्गों पर अधिपत्य कर लेती हैं। लेकिन वे कभी भी तृप्त नहीं होतीं। इसे वह सुख की स्थिति के रूप में स्वीकार करता है, जो भ्रमपूर्ण है। सच्चा सुख कभी भी पौड्गलिक साधनों से निष्कर्शित नहीं होता है। सच्चा सुख तो आत्मा की स्वाभाविक स्थिति है। आत्मा अपने मूल स्वभाव में अनंत सुख से युक्त है। जो सुख हमें प्राप्त रहता है। वह तो शाता व अशाता वेदनीय कर्म का उदय है। मुझे जैसा सुख चाहिए, वह आत्मा के परमविशुद्ध स्वरूप की अवस्था है। इसके लिए मुझे सम्यग्दृष्टि बनकर संसार भाव से उदासीन बनना चाहिए, मन को दृढ़ता से स्थिर करना चाहिए तथा आत्मानुभूति की साधना से जुड़ना चाहिए। यही नहीं सुख को स्वार्थ से जोड़ना ही नहीं चाहिए। जो केवल स्वयं के सुख का विचार करता है, वह स्वार्थी होता है। जो सामने वाले के सुख का विचार करता है, वह धार्मिक होता है। यानी सभी के सुख का विचार, सभी के कल्याण तथा हित का विचार करें तो एक अनन्य आनंद की अनुभूति होती है। यही आत्मा का सुख है। मैं आत्मा हूँ मुझे इसके सुख, गुण स्वभाव से स्वयं परिशुद्ध होना है। मुक्ति या सिद्धि की प्राप्ति के लिये इसे साधनाशील बनाना है।

◆◆◆

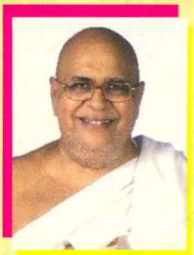

प्रश्नोत्तरी

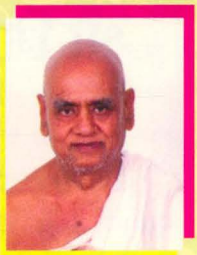

जम्बूद्वीप के सात खण्डों के नाम क्या हैं ?

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. जम्बूद्वीप के छह कुलाचल पर्वतों के नाम क्या हैं ?

उ. 1. चुल्लहिमवंत, 2. महाहिमवंत, 3. निषद्य पर्वत, 4. नील पर्वत, 5. रुक्मि पर्वत, 6. शिखरी पर्वत।

प्र. जम्बूद्वीप के सातखंडों के नाम क्या हैं ?

उ. जम्बूद्वीप के सात खण्डों के नाम इस प्रकार हैं- 1. भरत, 2. हैमवत, 3. हरि, 4. विदेह, 5. रम्यक, 6. हैरण्यवत, 7. ऐरावत। विदेह क्षेत्र में से उत्तर की तरफ उत्तरकुरू और दक्षिण की तरफ देवकुरू हैं।

प्र. जम्बूद्वीप के बाद के समुद्र और द्वीपों का स्वरूप क्या है ?

उ. जम्बूद्वीप के चारों तरफ खाई की तरह दो लाख चौड़ा लवण समुद्र है। लवण समुद्र को चारों ओर घेरे हुए चार लाख योजन चौड़ा धातकी खंड द्वीप है। इस धातकी खंड द्वीप में दो मेरू पर्वत हैं और क्षेत्र, कुलाचल आदि की सब रचना जम्बूद्वीप से दूनी है।

धातकी खंडद्वीप को चारों तरफ से घेरे हुए आठ लाख योजन चौड़ा कालोदधि समुद्र है और कालोदधि समुद्र को घेरे हुए सोलह लाख योजन चौड़ा पुष्कर द्वीप है। पुष्कर द्वीप के बीचों बीच वलय (चूड़ी) के आकार का मानुषोतर नामक पर्वत रहा हुआ है, जिसे पुष्कर द्वीप के दो खंड हो गये हैं। पुष्कर द्वीप के पहले आधे भाग में जम्बूद्वीप से अर्थात् धातकी खंड द्वीप के बराबर क्षेत्र और कुलाचल पर्वत हैं।

पुष्कर द्वीप से आगे परस्पर एक-दूसरे को घेरे हुए दूने-दूने विस्तार मध्यलोक के अंत तक द्वीप और समुद्र हैं। अंतिम द्वीप का नाम स्वयंभूरमण द्वीप तथा समुद्र का नाम भी स्वयंभूरमण समुद्र है।

◆◆◆

श्री मिथिला तीर्थ खोज व पुनर्स्थापना

(श्री ललित कुमार नाहटा)

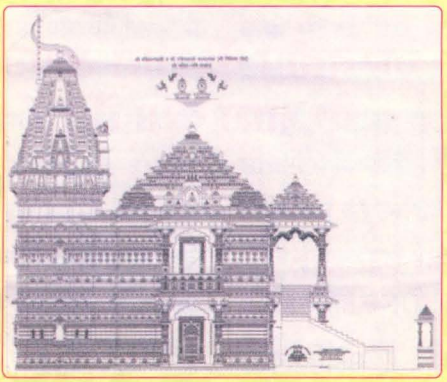

जैन धर्म एवं परम्परा में धर्म को प्ररूपित करने वाले महामानव को तीर्थंकर कहा जाता है, जिन्होंने पूर्ण ज्ञान अर्थात् कैवल्य प्राप्त कर तीर्थ की स्थापना की है। जैन परम्परा में 24 तीर्थंकर हुए हैं, जिनमें सर्वप्रथम प्रभु श्री ऋषभदेव स्वामी (श्री आदिनाथ स्वामी) थे, जिनके पुत्र व प्रथम चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर इस उपमहाद्वीप का नाम 'भरत खण्ड' पड़ा। अंतिम 24 वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी हुए हैं। तीर्थंकर के च्यवन (गर्भ प्रवेश) जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान तथा मोक्षप्राप्ति की भूमि को कल्याणक भूमि एवं जिस तिथि को ये कल्याणक हुए, उसे कल्याणक तिथि कहा जाता है।

जैन धर्म के 19 वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी व 21 वें तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी की च्यवन (गर्भ अवतरण), जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान भूमि श्री मिथिला तीर्थ है। दोनों तीर्थंकरों के 4-4 कल्याणक भूमि होने से मिथिला 8 कल्याणक भूमि तीर्थ कहलाता है। मिथिला तीर्थ वर्तमान का सीतामढ़ी शहर है। पूर्व में यह क्षेत्र, विदेह नामक जनपद, तिरहुत देश व जगई के नाम से भी जाना जाता था। वर्तमान बिहार प्राचीन काल से मगध, अंग देश एवं त्रिभुक्ति क्षेत्र को मिलाकर एक प्रदेश था। वर्तमान तिरहुत वही त्रिभुक्ति है, इसका मुख्य भाग मिथिला है। प्राचीन वैशाली भी मिथिला का प्रभाव क्षेत्र था।

जैन धर्म की सोलह सतियों में से एक सती माता सीता (जानकी) का भी जन्म स्थान सीतामढ़ी है। जनकपुर के राजा जनक को भयंकर दुष्काल से निजात पाने के लिए एक ऋषि ने खेत में हल चलाने को कहा था। राजा ने इसी स्थान सीतामढ़ी (पूर्व में सारा क्षेत्र मिथिलांचल के नाम से जाना जाता था) में हल चलाया व वहीं खेत में घड़े में उन्हें सीता मिली। इस कारण यह बहुत बड़ा वैष्णव तीर्थ भी है। जानकी के पिता जनक को विदेह व सीता को वैदेही भी कहा जाता है, अद्भुत संयोग है कि देह में रहकर विदेह की साधना जैन धर्म का दर्शन भी है।

19 वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी:-

फाल्गुन-शुक्ला चतुर्थी को अश्विनी नक्षत्र से चन्द्रमा का योग होने पर मिथिला नगर के

महाराजा कुंभ की महारानी प्रभावती के गर्भ में परमात्मा मल्लिनाथ के जीव का अवतरण हुआ। मार्गशीर्ष - शुक्ला 11 को अश्विनी नक्षत्र में चन्द्रमा का योग होने पर और उच्च स्थान पर रहे हुए ग्रहों के समय, आधी रात में माता प्रभावती ने सभी शुभ लक्षणों से युक्त उन्नीसवें तीर्थंकर पद को प्राप्त होने वाली पुत्री को जन्म दिया। (दिगम्बर पुत्र के रूप में मानते हैं, कारण वे स्त्री को मोक्ष का अधिकारी नहीं मानते।) पौष शुक्ला एकादशी को अश्विनी नक्षत्र में, दिन के पूर्व-भाग में तेले के तप सहित मल्लि ने स्वयं पंच-मुष्टि लोच किया और सिद्धों को नमस्कार कर के स्वयं सामायिक चारित्र (दीक्षा/संन्यास/प्रव्रज्या) ग्रहण किया। उसी दिन शाम को उन्हें मिथिला में ही अशोक वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान एवं केवल दर्शन (पूर्ण ज्ञान/बोध) भी प्राप्त हो गया। श्री सम्मेतशिखर पर्वत पर चैत्र-शुक्ला 4, भरणी नक्षत्र में श्री मल्लिनाथजी मोक्ष पधारे।

21 वें तीर्थंकर नमिनाथ जी- अश्विनी-पूर्णिमा की रात्रि में अश्विनी- नक्षत्र में मिथिला नगर के महाराजा विजयसेन की महारानी वप्रा की कुक्षि में परमात्मा नमिनाथ का जीव उत्पन्न हुआ। श्रावण-कृष्णा अष्टमी की रात्रि को अश्विनी-नक्षत्र में माता वप्रा को पुत्र की प्राप्ति हुई। आषाढ़-कृष्णा नवमी को अश्विनी - नक्षत्र में, दिन के अंतिम पहर में, बेले के तप सहित कई राजाओं के साथ नमि कुमार ने प्रव्रज्या स्वीकार की। मार्गशीष-शुक्ला एकादशी के दिन अश्विनी-नक्षत्र में घातीकर्मों को नष्ट कर मिथिला में ही बकुल वृक्ष के नीचे उन्हें केवल ज्ञान- केवलदर्शन प्राप्त किया। श्री सम्मेतशिखर पर्वत पर वैशाख-कृष्णा दशमी को अश्विनी-नक्षत्र के योग में, प्रभु नमि समस्त कर्मों का अंत करके मोक्ष सिधारे।

श्री मिथिला तीर्थ के कुछ अति महत्वपूर्ण प्रसंग- 24 वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के जीवनकाल के 25, 26, 27, 36, 39 व 40 वां चातुर्मास अर्थात् कुल 6 चातुर्मास मिथिला में हुए। यहाँ श्री महावीर प्रभु के अष्टम गणधर अकम्पित का जन्म हुआ था। यहाँ जुगबाहु-पयणरेहा के पुत्र नमी नामक महाराजा वलयचूड़ियों के शब्द से प्रत्येकबुद्ध हुए और सौधर्मेन्द्र परीक्षित वैराग्य निश्चय वाले हुए। पूर्व में यहाँ मल्लिनाथ चैत्य में वैरुट्या देवी, कुबेर यक्ष एवं नमिनाथ चैत्य में गंधारी देवी और भृकुटि यक्ष आराधक जनों के विघ्न हरण करते थे।

यहाँ ही लक्ष्मीगृह चैत्य में आर्य महागिरि के शिष्य कौणिन्य गोत्रीय अश्वमित्र श्री वीर-निर्वाण के दो सौ बीस (220) वर्ष बीतने पर अणुप्रवाद पूर्व में रही हुई नैपुणिका वस्तु को पढ़ते हुए श्रद्धाहीन हो गया। प्रवचन-स्थविरों द्वारा अनेकान्तिक युक्तियों से समझाकर मना करने पर भी वह उत्सूत्र प्ररूपणा कर चतुर्थ निह्नव हुआ। यहाँ जनकसुता महासती सीता की जन्मभूमि का स्थान विशाल वट विटपी प्रसिद्ध है। यहाँ श्री राम-सीता का विवाह-स्थान साकल्लकुण्ड नाम से लोक में रूढ़ है और पातालेलिंग (संभवतः नेपाल स्थित जलेश्वर शिवलिंग) आदि अनेक

लौकिक तीर्थ भी विद्यमान हैं।

करीब 125 वर्ष पूर्व काल के प्रभाव से मिथिला जैन तीर्थ का विच्छेद हो गया और यह तीर्थ गुमनामी के घेरे में आ गया। इन पंक्तियों के लेखक श्री ललितकुमार नाहटा ने इसकी खोज आरम्भ की। पूर्व में खोज का केन्द्र जनकपुर (नेपाल) रहा, जिसमें श्री हुलासचन्दजी गोलेछा के नेतृत्व में काठमाण्डू जैन संघ का योगदान रहा।

सन् 2006 के अन्त में कुछ पुख्ता व स्पष्ट प्रमाण मिले कि विच्छेदित श्री मिथिला तीर्थ सीतामढ़ी (बिहार-भारत) में था। तब सीतामढ़ी में मेरी माताजी श्रीमती रूक्खमणिदेवी नाहटा ने 17-04-2007 को भूमि क्रय कर अपने 70 वें जन्म दिवस 6 जुलाई, 2007 को न्यास को भेंट कर दी।

'श्री मिथिला तीर्थ' की पुनर्स्थापना स्व-द्रव्य से एक ही परिवार - श्री हरखचन्द नाहटा परिवार द्वारा हुई। ज़मीन क्रय से लेकर जिनालय, धर्मशाला व प्रतिष्ठा का सम्पूर्ण लाभ नाहटा परिवार ने लिया। भाग्यशाली हैं हम, कि हमें कल्याणक तीर्थ पुनर्स्थापना का सम्पूर्ण लाभ मिला।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि चूंकि यह परमात्मा का कल्याणक तीर्थ है एवं परमात्मा गच्छातीत होते हैं, इसलिये अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं से ऊपर उठकर किसी भी गच्छ या समुदाय की छाप नहीं लगने दी। मन्दिर के अन्दर किसी तरह का पट्ट नहीं लगने दिया अर्थात् मन्दिर में गये तो आप व आपका सम्बन्ध सीधे परमात्मा से। बीच में कोई व्यवधान या नाम प्रलोभन नहीं। प्रतिमा भी एक ही-जिनका कल्याणक तीर्थ उनकी ही एकमात्र प्रतिमा ताकि मन में एकाग्रता बनी रहे।

प्रतिमा की साइज़ 27" (27 x 21 ½ x 10 ¾) की है। न्यासीगण से पूछा गया कि कल्याणक तीर्थ के अनुसार क्या प्रतिमा छोटी नहीं तो उत्तर मिला कि कल्याणक तीर्थ है तभी 27" की है अन्यथा 21" की प्रतिमा एक आदर्श साइज की प्रतिमा होती है। 27" से अधिक होने पर प्रक्षाल करते वक्त आशातना की संभावना बहुत प्रबल रहती है, कारण प्रक्षाल का पानी प्रक्षाल करने वाले के अंग पर साधारण रूप में पड़ता ही है। प्रश्नकर्ता तर्क संगत उत्तर सुन संतुष्ट हुये। श्री मिथिला तीर्थ की पुनर्स्थापना हेतु भूमि पूजन 1 फरवरी 2008 को हुआ। दोनों परमात्मा की प्रतिमाओं की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर हो गई। वर्तमान में सुविधाजनक 27 कमरों की धर्मशाला, भोजनशाला, कार्यालय व कर्मचारी आवास है। भोजनशाला अभी शुरू नहीं हुई है। अच्छी संख्या में तीर्थ यात्रियों का आवागमन शुरू है।

तीर्थ का पता : श्री मिथिला जैन तीर्थ, श्री जैन श्वेताम्बर कल्याणक तीर्थ न्यास, 'हरखमणि भवन', मल्लि-नमि मार्ग, शंकर चौक, डूमरा, NH-77, सीतामढ़ी-843301 (बिहार)

मो. 7079072000, 7079172000

Search for ' Shri Mithila Jain Tirth' on Google Maps

गुगल मैपस् पर 'श्री मिथिला जैन तीर्थ' के नाम से खोजें।

◆◆◆

अतिथि रचना

इच्छाओं से मुक्त बनें

(आचार्यश्री भद्रगुप्तसुरिश्वरजी म.सा.)

श्री इन्द्रभूति गौतम को भगवान महावीर के प्रति जैसे अनन्य अनुराग था वैसे ही मोक्ष पाने की भी तीव्र अभिलाषा थी। उन्होंने अपनी आँखों से कई श्रमणों को एवं श्रमणिओं को निर्वाण पाते हुए देखे थे...कइयों को केवलज्ञानी बनते देखे थे... उस समय उनके मन में यह प्रश्न पैदा होता था 'मुझे कब केवलज्ञान होगा? मेरा निर्वाण कब होगा ?' श्रमण भगवान् महावीर गौतम के मनोभावों को जानकर समाधान भी करते थे।

तब तक गौतमस्वामी को केवलज्ञान नहीं हुआ जब तक उनका हृदय अनुरागी था। गुरु-अनुराग और मोक्ष-अनुराग जब तक बना रहा, तब तक वे सर्वज्ञ नहीं बने। जब अनुराग का बंधन टूटा तब तुरंत ही वे सर्वज्ञ- सर्वदर्शी बन गये। यह एक वास्तविकता है।

दूसरी आरे देखें तो गुरु-अनुराग और मोक्षानुराग के बिना आत्मविकास का प्रारम्भ ही नहीं होता है। आत्मसाधक महात्मा जैसे संसार के प्रति विरागी होता है वैसे गुरु के प्रति और मोक्ष के प्रति अनुरागी होता है। यह अनुराग आत्मविकास में, ज्ञान-दर्शन-चारित्र के विकास में सहायक बनता है।

अष्टापद तीर्थ की यात्रा के लिये गये हुए गौतमस्वामी के प्रति 1503 तापसों को प्रगाढ़ अनुराग हो गया... और उनकी अन्तर्यात्रा का प्रारम्भ हो गया... भगवान् महावीर के पास पहुँचते-पहुँचते तो 1503 तापस केवलज्ञानी बन गये। परन्तु वे तभी केवलज्ञानी बने होंगे... जब उनका गुरु-अनुराग समाप्त हो गया होगा। जब उनकी मुक्ति-कामना भी समाप्त हो गई होगी। सर्वज्ञता - प्राप्ति के पूर्व-क्षणों में पूर्ण समत्व आना अनिवार्य है। पूर्ण समत्व के बाद ही पूर्णज्ञान की

उपलब्धि होती है।

पूर्ण समत्व में नहीं होता है राग, नहीं होता है द्वेष। प्रशस्त राग-द्वेष भी नहीं चाहिए। प्रशस्त राग-द्वेष तब तक ही उपादेय माने जाते हैं जब तक अप्रशस्त राग-द्वेष आत्मा में उभरते रहते हैं। संसार का राग मिटाने के लिए परमात्म-राग, गुरु- राग और धर्म-राग उपादेय हैं। जब आत्म सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र में परिपक्व बन जाती है, तब उसकी आराधना समत्व को सिद्ध करने की ओर मुड़ जाती है। वह प्रशस्त राग से भी मुक्त होने का प्रयत्न करती है।

अष्टापद के पहाड़ पर आत्मलब्धि से चढ़ने के लिए कई दिनों से उग्र तपश्चर्या करने वाले 1503 तापस, गौतमस्वामी के मिलने के बाद अष्टापद -यात्रा को भी भूल गये थे। जब गौतमस्वामी ने उन तापसों को भगवान् महावीर के पास चलने के लिए कहा तब तापसों ने नहीं कहा था, कि 'गुरुदेव, पहले हमको अष्टापद की यात्रा करा दो, बाद में आपके गुरुदेव के पास चलेंगे।' उन्होंने कुछ नहीं कहा। गौतम स्वामी से मिलने पर शेष कोई इच्छा ही नहीं रही।

क्षीरान्न से पारणा करते - करते ... रास्ते पर चलते-चलते और दूर से भगवान महावीर के दर्शन करते-करते... कब उन तापसों का गुरुराग भी चला गया और कब पूर्ण समत्व पा लिया... यह रहस्य तो पूर्ण ज्ञानी पुरुषों के पास ही छिपा हुआ रहा है। समवसरण में पहुँचने पर सभी तापस केवलज्ञानी बन गये थे।

मैं भी इच्छाओं से मुक्ति चाहता हूँ। सभी वैषयिक-भौतिक सुखों की इच्छाओं से कब मुक्ति मिलेगी ? यह जीवन पूर्ण हो जाये, इससे पूर्व क्या इच्छारहित बन सकूँगा ? यदि इस जीवन में इच्छाओं से मुक्ति नहीं पाई तो भविष्यकाल में आत्मविकास संभव हो सकेगा क्या ? इच्छारहित बनने की इच्छा से तो अभी मुक्त नहीं बनना है। यह इच्छा तो तब तक बनी रहेगी, जब तक इच्छा-रहित न बन जाऊँ। इच्छाओं से मुक्ति मिल जाय, बस ! कर्मों से मुक्ति मिलने में देरी नहीं होगी। ◆◆◆

बाल शाश्वत

(सुशील छाजेड़, पारा)

मंदिर में जाने पर अक्षत पूजा याने जिसका क्षय नहीं होता उसे अक्षत कहते हैं। अखंड अक्षत से मूल गभारे के बाहर बैठकर पाटा बिछाकर उस पर पूजा करनी चाहिए। जिस तरह चावल बोने से उगते नहीं, उसी तरह जन्म मरण की भवपरंपरा को टाल के अक्षत स्थिति (मोक्ष) पाने हेतु अक्षतपूजा करनी चाहिए। हे प्रभु ! मैं अक्षत पूजा से अजन्मा बनना चाहता हूँ। अव्याबाध सुख प्राप्त करना चाहता हूँ। अक्षत पूजा का क्रम पहले सबसे नीचे चार गति के निवारण हेतु स्वास्तिक, फिर उसके ऊपर रत्नत्रयी की प्राप्ति हेतु तीन ढेरियाँ और उसके बाद सबसे ऊपर कि सिद्ध गति को प्राप्त करने के लिए सिद्धशिला बनायी जाती है। चावलों की तीन ढेरियों के ऊपर एक बड़ी ढेरी बनाते हैं तथा नीचे एक बड़ी ढेरी क्यों बनाते हैं? तथा तीन ढेरियाँ बनाते हैं ?? तीन ढेरियों का अभिप्राय यह है की दर्शन, ज्ञान, चारित्र की प्राप्ति हो। ऊपर की ढेरी सिद्धशिला बनाने के लिए जिसे हम चन्द्रमा के रूप में बनाते हैं। इसके पीछे यह भाव होता है कि मुझे सिद्ध गति की प्राप्ति हो। नीचे की ढेरी से स्वास्तिक बनाया जाता है। यह चार गति के निवारण के लिए बनाया जाता है। स्वास्तिक के ऊपर की ओर देव गति, नीचे की ओर नरक गति, बाँयी ओर तिर्यंच गति और दाँयी ओर मनुष्य गति होती है।

अक्षत पूजा करते समय ऐसी भावना रखें हे प्रभु! मुझे बार-बार भव भ्रमण से मुक्त बन जाकर सिद्ध शिला पर पहुँचुं।

केवली भगवान और तीर्थंकर भगवान में अंतर :- 1. सभी तीर्थंकर केवली होते हैं, किन्तु सभी केवली तीर्थंकर नहीं होते हैं। 2. भगवान बनने के लिए केवली होना आवश्यक है, तीर्थंकर नहीं । 3. एक काल में 24 तीर्थंकर होते हैं जबकि केवली अनेक हो सकते हैं। 4. सभी तीर्थंकरों की वाणी खिरती है जबकि कुछ केवलियों की वाणी नहीं खिरती।

निम्न बातें तीर्थंकरों के होती हैं किन्तु केवलियों के नहीं होती हैं :- 1. तीर्थंकर की माता को 14 स्वप्न आते हैं। 2. तीर्थंकर को जन्म से ही मति श्रुत और अवधिज्ञान होता है। 3. तीर्थंकर के जन्म के अतिशय होते हैं। 4. तीर्थंकरों को दीक्षा लेते ही मन पर्यय ज्ञान हो जाता है। तीर्थंकर के समवशरण की रचना होती है। 5. तीर्थंकरों के गणधर होते हैं। ◆◆◆

हमारा चिंतन आत्मतत्व पर रहे

(श्री शेखर चन्द जैन)

मिथिला नरेश जनक ने एक रात स्वप्न में देखा कि किसी राजा ने उनके राज्य पर आक्रमण कर दिया और उन्हें पराजित कर राज्य निकाला दे दिया। मात्र कमर पर एक कपड़ा पहनें जनक को मिथिला की सीमा से बाहर कर दिया गया। अन्न की तलाश में घूमते-घूमते वे एक अन्नक्षेत्र पहुँचे। वहाँ के सेवक को इस भूखे आदमी को देख दया आई।

भोजनशाला में जाकर देखा तो वहां खिचड़ी समाप्त हो चुकी थी, तभी उन्हें बर्तन में खुरचन लगी दिखी लेकिन वह भी जल गई थीं। जनक को वह खुरचन ही वरदान के समान लगी। वे उसे लेकर ज्यों ही खाने को हुए, एक चील ने झपट्टा मारा और खुरचन जमीन पर गिर पड़ी चील के पंजे के घाव के दर्द और भूख से व्यथित जनक चिल्ला पड़े और इतने में ही उनकी नींद खुल गई। जागने के बाद वे गहन विचार में पड़ गए। उनका प्रश्न यही था कि वर्तमान की अवस्था सच है या जो उन्होंने स्वप्न देखा था वह सत्य है ? मंत्री, वैद्य व ज्योतिषी कोई भी राजा को संतुष्ट नहीं कर सका। ऋषि अष्टावक्र मिथिला में आए थे। जनक से मिलने वे सभा में पहुंचे, तो राजा ने उनसे भी प्रश्न किया- यह सच है या वह ?

अष्टावक्र ने ध्यान कर सारी स्थिति को जान लिया। वे महाराज से बोले स्वप्न में भूख का अनुभव हो रहा था, तब क्या आप वहाँ थे ? राजा ने उत्तर दिया- मैं तब वहीं पर था। अगला प्रश्न था- अभी आप कहां पर हैं? राजा ने कहा- इस समय मैं आपके सामने राजभवन में उपस्थित हूँ। अष्टावक्र ने कहा- राजन् न तो आपकी स्वप्न की अवस्था सत्य कही जा सकती है न यह जागृति की या सुषुप्ति की। सत्य तो वह दृष्टा है जो स्वप्न, जागृति और गहरी निद्रा की बदलने वाली अवस्थाओं का साक्षी होता है। इस सत्य में जीवन का फलसफा छिपा है। यदि हम घटनाओं को बेजा महत्व न दें और अपना चिंतन आत्मतत्व पर रखें तो हमारा जीवन आनंद से भर जाएगा। जो आत्मस्वरूप से, अध्यात्म से अपरिचित है, वह सदैव अशांत रहता है। जो यथार्थ को जान लेता है तो उसे कभी भी अशांति नहीं होती। भौतिक शक्ति ही पर्याप्त नहीं, अध्यात्मशक्ति जीवन में अनिवार्य है। हमें चाहिए कि हम अपने जीवन में अध्यात्म की शक्ति को बढ़ाएं।

◆◆◆

अप्रमाद साधना का सूत्र है

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर)

मनुष्य एक सात मंजिला मकान है। हम एक मंजिल में ही जीकर मर जाते हैं। जिस मंजिल में हम जीते हैं, उसका नाम है- चेतन। उस मंजिल के ठीक नीचे दूसरी मंजिल है। जमीन के नीचे वह है- अचेतन और ठीक इसके नीचे वाली तीसरी मंजिल है समष्टि अचेतन। और इसके नीचे वाली जो मंजिल है उसका नाम है- ब्रह्म चेतन। ठीक इसी तरह जिस मंजिल पर हम रहते हैं, उसके ऊपर वाली मंजिल का नाम अतिचेतन ठीक इसके ऊपर वाली मंजिल है - समष्टि चेतन। इसके ऊपर वाली मंजिल है- ब्रह्मचेतन। ऊपर तीन और नीचे तीन एक हम कुल मिलाकर जब सातों मंजिलों को जान जाते हैं, तो उसका अर्थ है- आत्मज्ञान हो जाना। अज्ञान हार है और ज्ञान विजय।

हम जिस मंजिल में जीते हैं उसका नाम है-प्रमाद। प्रमाद का अर्थ है- मूर्च्छा, बेहोशी तंद्रा और सम्मोहित अवस्था। इसमें हमें हमारे होने का पता ही नहीं चलता कि हमारे व्यक्तित्व में, जीवन में, हमारे होने में फैलाव कितना है?

साधना का अर्थ है- प्रमाद याने मूर्छा को तोड़ना। यह जो तीन ऊपर और तीन मंजिलें नीचे हैं, इनका पता नहीं लगने तक हम सोये हैं। सोये होने का तथ्य जानते ही जागने की यात्रा शुरू हो जायेगी। नींद में आपको पता नहीं लगता कि आप सोये हैं। जागकर पता लगता है कि आप सोये हैं। सोये का अनुभव भी जागने का अनुभव है। नींद का अनुभव नहीं। जो जाग गये हैं, वह कहते हैं- तुम सोये हुए हो।

बेहोशी में कुछ कर जाने पर पश्चाताप करते हैं, पछताते हैं कुछ होश आने पर। होश में रहने वाला आदमी पश्चाताप नहीं करता। वह जो कर रहा है वह जानकर करता है। कुछ आपके ऊपर से गुजर गया है, बस यही प्रमाद है। प्रेम, दया, घृणा, दुश्मनी, क्षमा प्रायश्चित सब सोये में होता है ! एक धीमी सी आकांक्षा कुछ बनने की होती है, लेकिन वह वो नहीं बन पाता, जो बनना चाहा था। जिन्दगी में नहीं बनने की जो इच्छा होती है, वही बन जाते हैं। ऐसा आपके सोये होने पर होता है। मरते वक्त जिन्दगी बेकार लगती है। उसे लगता है, कुछ चूक हो गई कुछ हो गया यह हमारी सोयी अवस्था है, जिसे महावीर ने प्रमाद कहा है। सोये हुए होने को कहते प्रमाद हैं। नींद हमारे चौबीसों घण्टे की स्थिति है। सोना, बैठना, चलना सभी सोये-सोये करते हैं।

◆◆◆

चिन्तन का चित्रांकण

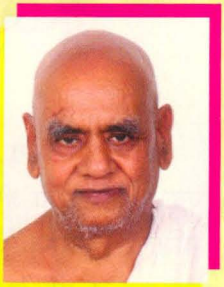

जिन प्रणित धर्म धारण करो

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 22.04.2016

चरण पकड़ो गुरुराज का, शरण स्वीकारो वीतराग की, आत्मतत्त्व की प्राप्ति का मार्ग जिनेश्वर द्वारा प्ररूपित धर्म को धारण करो, अनन्त संसार का दुःखद अंधकार जीवन के प्रांगण से सदा के लिये नष्ट हो जायेगा। इसके लिये त्रिकरण योग से आत्मा में तमन्ना चाहिये। इसके बिना जीवन में अन्धकार ही अन्धकार है।

दिनांक 23.04.2016

पवन (हवा) नहीं तो संसार में कोई जिन्दा नहीं रह सकता। पवन ही श्वांस है, श्वास है तो आस है, आस है तो विश्वास है। ये जीवन को जिन्दा रखने के लिये खास है। पवन नहीं तो श्वांस नष्ट होते ही जीव के जाने के बाद शरीर जड़ है वह स्वयं कुछ नहीं कर पाता है। इसलिये पवन जीवन के लिये आवश्यक है।

दिनांक 24.04.2016

चरण रज गुरु की सिर पर चढ़ जाये तो जीवन पवित्र हो जाता है। चरण पूजा गुरु की करने वाला जीवन में शान्ति को पाता है। हृदय के भाव निर्मल रखकर गुरु पूजा करने वाला अनन्त संसार बन्धन की जंजीरों को तोड़ता है।

दिनांक 25.04.2016

कर्म के उदय ने अशाता ने पैदल चलने वालों को वाहन पकड़ाया। भरपेट खाने वाले को भूखे मराया। बंगलों में आराम करने वालों को रोड़ पर सुलाया। शहरों में रहने वालों को जंगलों में भटकाया। परिवार के बीच रहने वाले को अकेला कराया।

हँसते-हँसते लोगों को खूब रूलाया। राज करने वालों को रंक बनाया। कानों से सुनने और मुँह से बोलने वालों को बहरा-गूँगा बनाया।

दौड़-दौड़कर चलने फिरने वालों को लूला- लंगड़ा बनाया। आँखों से देखने वाले को अँधा बनाया। हे कर्म ! तूने ये क्या-क्या नाटक किये।

◆◆◆

उत्तम आहार – शाकाहार–39

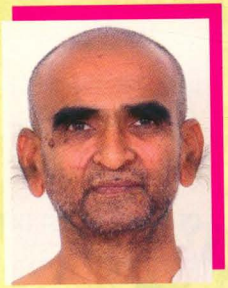

मांसाहार - तामसिकता का जन्मदाता

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

यह माना जाता है कि विश्व में कुल बीस प्रतिशत शाकाहारी लोग हैं। वर्तमान में विश्व की जनसंख्या 7 अरब 80 करोड़ मानव अनुमानित हो तो 1 अरब 60 करोड़ व्यक्तियों की संख्या शाकाहारी आती है। इनमें से एक बड़ी संख्या भारत में है जो कि 55 करोड़ हो सकती है। भारत को हम धर्मप्राण, अहिंसक, जीवदयाप्रेमी देश मानते हैं लेकिन यहाँ भी शाकाहारियों की गणना तीस प्रतिशत ही मानी जाती है। वर्तमान में विश्व के मान्य देश मांसाहार से उकता कर शाकाहार की ओर बढ़ रहे हैं जबकि भारत में मांस उत्पादन तथा मांसाहारी लोगों की संख्या बढ़ रही है। भारत विदेशी मुद्रा कमाने के लिए मांसाहार के आधुनिकतम कारखाने स्थापित कर रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

मांसाहार बीमारियों का घर है। शाकाहारी भोजन को पचाने में कठिनाई नहीं होती जबकि मांसाहार भोजन मुश्किल से पचता है। मांस के छोटे–छोटे टुकड़े मसूढ़ों में रह जाते हैं जिससे दांत जल्दी खराब होते हैं, इससे शरीर में कोलोस्ट्रॉल की मात्रा भी बढ़ जाती है। हृदय रोग की आशंका भी बढ़ जाती है। साथ ही गुर्दे, पथरी आदि की बीमारियां भी पैदा हो जाती हैं। शाकाहारी भोजन में कई प्रकार के विटामिन, लौहतत्व अन्य तत्व होते हैं जबकि मांसाहारी भोजन में ये नहीं होते हैं। शाकाहारी उत्पन्न करने में लागत कम आती है, मांसाहारी भोजन महंगा है। मांसाहारी भोजन तामसी होता है। इससे विपरीत शाकाहारी भोजन सात्विक होता है। जिन महापुरुषों ने विश्व को अहिंसा, प्रेम, शान्ति, सहनशीलता, बंधुत्व आदि के संदेश दिये हैं, वे सभी शाकाहारी ही थे।

भारत में पशु–पक्षियों से मनुष्य का पारस्परिक सहयोग का सम्बन्ध रहा है। मनुष्य गाय, बकरी, भैंस आदि का दूध पीकर उर्जा प्राप्त करता है। पशु–पक्षियों का आहार के लिये वध करना तथा उसे ग्रहण करना दुष्टता है। विदेशों में पशु पालन मांस के लिये ही किया जाता है। यह क्रूरता की पराकाष्ठा है।

◆◆◆

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

अलोकाकाश की सिद्धि

मंडित– किन्तु, लोक से भिन्न ऐसा अलोक है, इसका क्या प्रमाण है ?

महावीर– लोक का विपक्ष होना चाहिए, क्योंकि वह व्युत्पत्ति वाले शुद्ध पद का अभिधेय है। जो व्युत्पत्ति वाले शुद्ध पद से अभिधेय होता है, उसका विपक्ष होता है। जैसे घट का विपक्ष अघट है।

इसी प्रकार लोक का भी विपक्ष अलोक होना ही चाहिए।

मंडित– लोक नहीं वह अलोक अर्थात् घट आदि पदार्थों में से किसी को भी अलोक कहा जा सकता है। तो इन सब से स्वतंत्र ऐसा अलोक मानने की क्या जरूरत है।

महावीर– अलोक को घटादि पदार्थ रूप नहीं, किन्तु उन सबसे स्वतंत्र मानने की आवश्यकता इसलिए है कि पर्युदास निषेध अभिप्रेत है इसलिए निषेध के अनुरूप ही विपक्ष होना चाहिए। प्रस्तुत में लोक निषेध्य है और वह आकाश विशेष है। इसलिए अलोक भी उसके अनुरूप होना चाहिए। जैसे कि यह अपंडित है, कहने से केवल अभाव नहीं समझा जाता या किसी अचेतन घटादि वस्तु का भी उससे बोध न होकर विशिष्ट ज्ञान रहित किसी चेतन पुरुष विशेष का ही बोध होता है। इसी प्रकार यहाँ भी वस्तुभूत आकाश विशेष का ही बोध अलोक शब्द से होना चाहिए। कहा भी है–

'जिस कार्य को 'नञ्' युक्त या 'इव' युक्त कहने में आया हो, उससे समान किन्तु

अन्य ऐसे अधिकरण का- पदार्थ का लोक में बोध कराया जाता है।

- 'नञ' और 'इव' युक्त पद का अर्थ अन्य किन्तु सदृश ऐसा अधिकरण वस्तु समझी जाती है।

सारांश यह है कि लोक का विपक्ष अलोक भी मानना चाहिए।

धर्मास्तिकायों की सिद्धि

इस प्रकार लोक और अलोक इन दोनों के वस्तुभूत होने से लोक को अलोक से भिन्न करने वाला अन्य कोई तत्व भी सिद्ध होता है और वह धर्मास्तिकाय एवं अधर्मास्तिकाय है। अर्थात जितने आकाश क्षेत्र में धर्म-अधर्म है, वह लोक है। इस प्रकार दोनों अस्तिकाय लोक का विभाग न करते, तो आकाश सर्वत्र समान भाव से व्याप्त होने पर भी 'यह लोक' और 'यह अलोक' ऐसा भेद किससे होता।

उक्त प्रकार से धर्म और अधर्म इन दोनों अस्तिकायों द्वारा यदि अलोकाकाश से लोकाकाश का विभाग न होता हो, तो जीव और पुद्गल को गति करने में किसी का भी प्रतिघात न होने से वे अप्रतिहत गति वाले हो जायेंगे और अलोक अनन्त होने से उनकी गति का कहीं भी अन्त नहीं आयेगा और यदि उक्त प्रकार से जीव एवं पुद्गल की गति का अन्त ही न हो, तो जीव और पुद्गल का संबंध ही नहीं होगा और यदि उनका संबंध ही न हो तो पुद्गल स्कन्धों की औदारिक आदि विचित्र रचना भी नहीं बनेगी और इसके परिणाम स्वरूप बन्ध-मोक्ष, सुख-दुःख, अनुग्रह-उपघात इत्यादि सांसारिक व्यवहार का लोप हो जायेगा। इसलिए लोकालोक का विभाग और उक्त विभाग को करने वाले धर्म और अधर्म ये दोनों अस्तिकाय भी मानने चाहिए।

जैसे मछली की गति पानी के बिना नहीं होती, वैसे ही गति सहायक द्रव्य लोक से परे अलोक में न होने से जीव और पुद्गल की गति भी अलोक में नहीं होती। इसलिए लोक में गति सहायक ऐसा धर्मास्तिकाय द्रव्य मानना चाहिए जो लोक परिमाण हो।

इसके सिवाय लोक प्रमेय है, इसलिए इसका कोई परिमाणकर्ता द्रव्य अवश्य होना चाहिए। जैसे ज्ञेय होने से उसके परिच्छेदक ज्ञान का अस्तित्व माना जाता है वैसे ही लोक के परिणामकर्ता द्रव्य का- धर्मास्तिकाय का अस्तित्व मानना चाहिए।

अथवा जीव और पुद्गल ही लोक कहलाता है और वह प्रमेय है। अतः उसका परिमाणकर्ता द्रव्य कोई होना चाहिए। जैसे चावल आदि धान्य प्रमेय है, तो उनका परिमाणकर्ता द्रव्य प्रस्थ है। वैसे ही जीव - पुद्गलात्मक लोक का परिमाणकर्ता द्रव्य धर्मास्तिकाय है।

(क्रमशः)

तीर्थंकर - तारेश (42)

श्रेणिक पुत्र अभयकुमार

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

अभयकुमार महाराजा श्रेणिक के दरबार में एक चतुर महाराजा का संकट मोचक प्रतिभावान महामंत्री था। हालांकि वह श्रेणिक का पुत्र भी था लेकिन अपने चातुर्य बल से सभी पर प्रभावशाली बना हुआ था। वह भी एक गणिका के जाल में फंस गया। अभयकुमार को अपने चुंगुल में जकड़ने के लिये अवन्ती के राजा चण्डप्रद्योत ने षड़यंत्र बिछाया था, अभय कुमार उसका शिकार हो गया। चण्डप्रद्योत ने अभय कुमार का अपहरण करवा लिया। श्रेणिक दुःखी हो गये। उन्हें पता लग गया कि अभय कुमार प्रद्योत के आधिपत्य में है। लेकिन अचानक अभयकुमार अपने बुद्धिकौशल से मगध की राजधानी राजगृही में प्रकट हो गया। उसने राज दरबार में अपनी मुक्ति के कारनामों का बखान किया तथा चण्डप्रद्योत से प्रतिशोध का संकल्प कर श्रेणिक की स्वीकृति ले ली।

अभयकुमार का अवन्ति आगमन हुआ। उसने अपने साथ दो सुन्दर बालिका गणिकाएं व कुछ कर्मचारी साथ लिये। उसने स्वयं वणिक का रूप धरा। राजमार्ग पर एक विशाल भवन किराये पर लिया। वहां गवाक्ष में दोनों सुन्दर गणिकाएं बैठ जातीं तथा चण्डप्रद्योत के उधर से निकलने पर इशारे-इशारे में उसे आकर्षित करतीं। चण्डप्रद्योत ललचा गया, उसने अपनी दूती उन गणिकाओं के पास भेजी। गणिकाओं ने उसे फटकार कर लौटा दिया। दूती दूसरे दिन फिर गई तथा गणिकाओं को प्रसन्न करने में जुट गई। तीसरे दिन राजा की ओर से उपहार लेकर दूती पहुंची। सुन्दरियों ने कहा- 'हमारा भाई बहुत फितरती है, उसने हम पर रातदिन पहरा लगा रखा है। आज से सातवें दिन वह पड़ोस के गाँव में जायेगा, उस दिन यदि राजा आ जायेगा तब हमारा पूर्ण समर्पण हो जायेगा।' दूती ने राजा चण्डप्रद्योत को बता दिया। चण्डप्रद्योत खुश हो गया।

इधर अपनी योजनानुसार अभयकुमार ने एक कर्मचारी को तैयार किया तथा उसे पागल का नाटक करने में प्रशिक्षित किया। उसका नाम उसने प्रद्योत रख दिया। अब यहाँ प्रद्योत राजमार्ग पर जाकर पागलपन का खूब प्रदर्शन करता। वह जोर-जोर से गालियाँ बकता हाथ-पैर फटकारता, कपड़े फाड़ता, कूदता, नाचता फिर चिल्लाने लगता। लोग एकत्र हो जाते तो अभयकुमार छद्मवेश में उन्हें शांत करते हुए कहता- 'यह मेरा भाई प्रद्योत है, आवारा जैसा पागल हो गया है। मैं बड़ा परेशान हूँ। मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूँ ?' (क्रमशः)

◆◆◆

श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

विस्मृत

सर्व चराचर जगत पर, जिनशासन उपकार ।
विस्मृत मानव अधम जो, कोटि जिह्वा धिक्कार ।।88।।

आशा-निराशा

आशाओं के महल अब, मूढ़ ढहेगा अन्त ।
आज नहीं अविलम्ब भज, जिनशासन भगवन्त ।।89।।

धैर्य

धरा तजे कब धैर्यता, वीर न तजता जंग ।
जिनशासन नवकार का, कभी न तजिए संग।।90।।

योग्यायोग्य

ज्ञान भक्ति वैराग्य बिन, साधक अयोग्य जान।
जिनशासन नवकार का, कैसे होगा ध्यान ।।91।।

पुरुष-परीक्षा

पुरुष मात्र उसको कहे, भजे भाव नवकार।
नहीं जपे पण्डक सभी, कोटि-कोटि धिक्कार ।।92।।

जिह्वाबोध

रे रसने ! भज लीजिये, जिनशासन नवकार।
दुर्लभ अवसर प्राप्त यह, प्राप्त न बारम्बार ।।93।।

पूज्य पुरूष

जिनशासन नवकार की, आज्ञा लो स्वीकार ।
ज्ञानी उसको कह रहे, पूज्य पुरुष संसार ।।94।।

संशय

जब तक तेरे उर रहा, संशय का समुदाय ।
तब तक अर्हत् साधना, फलित न किंचित पाय ।।95।।

समतालय

साधक समता सदन में, अर्हं इष्ट आधार।
उसका होगा एक दिन, चरम भव चमत्कार ।।96।।

मंगलप्रद

जिनशासन नवकार भज, मिटे अमंगल मूल।
आराधन में अग्रसर हो, अब कर मत भूल ।।97।।

महालोचन

रे ! रे ! मानव नयन द्वय, हो जायेंगे बन्द।
कहाँ जायेगा अन्त में, भज भज जिन भगवन्त ।।98।।

देवाभिलाषा

कहे सतत सुर वृन्द सह, धन्य पुरुष अवतार।
मनसा वाचा कर्मणा, अहो ! भजे नवकार ।।99।।

सुदृढ़- ध्यान

वीर ध्यान हो समर में, मुक्ता ध्यान मराल।
वैसे श्री नवकार में, धरो ध्यान तत्काल ।।100।।

भक्त प्रवर

जिनशासन नवकार का, वही भक्त गतिशील।
रहे सतत समभाव से, जैसे शीतल झील ।।101।।

सुरक्षक

जैसे रक्षक द्वीप सम, जिनशासन नवकार।
साधक आश्रय शीघ्र ले, ज्ञानी कहे पुकार ।।102।।

सर्वश्रेष्ठ

सर्वोत्तम संसार में, मानव वह मतिमान।
जिन आज्ञा पालन करे, मन-तन-वचन प्रमान ।।103।।

महाफल

हुआ दग्ध त्रय ताप से, पूर्णतया संसार।
यदि चाहे आत्मार्थ फल, भजो भव्य नवकार ।।104।।

समय-व्यय

अल्प समय अवशेष भी, तेरे कर से जाय।
जिनशासन नवकार भज, सबसे मोह नशाय ।।105।।

◆◆◆

दीक्षा अर्थात् ?

(साध्वीश्री श्रुतिकदर्शनाश्रीजी म.सा.)

* मात्र वेश परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन का नाम है दीक्षा।
* अनुकूलता का अस्वीकार, प्रतिकूलता का आह्वान है दीक्षा।
* स्वेच्छाचार को त्याग कर, मन-वचन-काया का समर्पण है दीक्षा।
* स्व-पर विचार दूर कर, देव-गुरु की आज्ञा का आचमन है दीक्षा।
* भव-भ्रमण सिमित कर, अपूर्णता से पूर्णता की ओर प्रयाण है दीक्षा।
* सावद्य को छोड़कर, निरवद्य व्यापार का पालन है दीक्षा।
* अहंकार का त्यागकर, विनय, बहुमान अहोभाव का नाम है दीक्षा।
* पर-पंचायत जरा नहीं, स्व का स्व में अनुसंधान है दीक्षा।
* संकल्प विकल्प का विसर्जन, चिंतन- अनुपेक्षा-ध्यान है दीक्षा।
* आर्त्त-रोद्र ध्यान से विरत, धर्म-शुक्ल ध्यान का सोपान है दीक्षा।
* विषयासक्ति से दूर, आत्मानंद का पान है दीक्षा।
* क्रोधावेश को रोंधकर, क्षमाधर्म का सर्वत्र परिधान है दीक्षा।
* मनुष्य-भव की उत्तमता, उज्ज्वलता, सफलता का नाम है दीक्षा।
* देवलोक में अभाव है जिसका, ऐतिहासीक मनुष्यभव की सफलता का नाम है

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ में सामूहिक दीक्षाओं का क्रम

* 7 दीक्षा - 1984 (थराद नगर)
* 9 दीक्षा - 1992 (सूरत नगर)
* 11 दीक्षा - 2002 (थराद नगर)
* 8 दीक्षा - 2003 (नवकार तीर्थ छत्राल)
* 6 दीक्षा - 2006 (थराद नगर)
* 10 दीक्षा - 2011 (पेपराल तीर्थ)
* 6 दीक्षा - 2011 (थराद नगर)
* 8 दीक्षा - 2011 (थराद नगर)
* 9 दीक्षा - 2013 (सूरत नगर)
* 12 दीक्षा - 2014 (सूरत नगर)
* 25 दीक्षा - 2017 (थराद नगर) आत्मोद्धार - एक
* 10 दीक्षा - 2018 (श्री शत्रुंजय तीर्थ) आत्मोद्धार - दो
* 19 दीक्षा - 2019 (अहमदाबाद नगर) आत्मोद्धार - तीन

आत्मा नित्य है

(साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

आत्मा है, मात्र इतना जान लेने से काम नहीं चलेगा। कोई बम्बई जाए किन्तु वहाँ की कुछ भी जानकारी नहीं हो, तो वो वहाँ पर घूमने-फिरने या का खरीददारी का कुछ भी मजा नहीं ले सकेगा। वैसे ही आत्मा है इतना जान लेने से कुछ नहीं होगा। आत्मा कैसी है ? उसका स्वरूप क्या है ? यह जानना आवश्यक है। तभी हम आत्मा का महत्व एवं उसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

'आत्मा नित्य है।' यह आत्मा के षट्स्थान का दूसरा स्थान है। नित्य अर्थात् हमेशा रहने वाली, शाश्वत, कभी नष्ट नहीं होने वाली, अजर-अमर। अब यदि आत्मा को नित्य मान लें तो, अहिंसा परमोधर्मः, जीव हिंसा नहीं करना चाहिए इन बातों का कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा। क्योंकि व्यक्ति जीवों को मारकर भी कहेगा आत्मा तो मरती नहीं, आत्मा तो अमर है। इस प्रकार तो अहिंसा मूल्यहीन हो जाएगी एवं हिंसा बढ़ती जाएगी।

किन्तु ऐसा नहीं है। जैन धर्म अनेकान्तवादी है। एकान्त कथन अर्थात् अपेक्षा बिना का कथन नहीं करता। क्योंकि एकान्त कथन मिथ्या होता है। इसलिए कहा कि शरीर से भिन्न आत्मा नित्य है। जब तक आत्मा के साथ शरीर का संयोग है, तब तक अमुक व्यक्ति मर गया ऐसा कहा जाएगा, उसका शरीर मर गया ऐसा नहीं कहा जाता। क्योंकि मरण किसका जिसका जन्म हो और जन्म किसका जिसका मरण हो। अर्थात संसारी आत्मा का ही जन्म मरण होता है, शरीर का नहीं। क्योंकि जन्म-मरण का कष्ट आत्मा को ही भुगतना पड़ता है शरीर को नहीं । इसलिए सूक्ष्म हिंसा भी वर्ज्य है। अतः शरीर से भिन्न आत्मा अजर-अमर है।

देह से पृथक है आत्मा- कितने ही विचारक देह को ही आत्मा मानते हैं। और कहते हैं कि- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन पंचभूतों के संयोग से चैतन्यशक्ति उत्पन्न होती है। और इनके द्वारा ही शरीर का काम चलता है। चैतन्यवाली वस्तु ही यदि आत्मा कहलाती तो यह देह से भिन्न है। वैज्ञानिकों का कहना भी यही है कि जड़ पदार्थों के संयोग से चैतन्य की उत्पत्ति होती है, और इससे शरीर की सब क्रिया

चलती है।

इस शरीर का काम बंद कैसे होता है ? इस प्रकार पूछने पर उनका जवाब होता है कि जब पंचभूत में से किसी भूत का संयोग सर्वथा छूट जाता है, तब चैतन्य अदृश्य हो जाता है। और इस कारण शरीर का काम बंद हो जाता है। चैतन्य शक्ति का मृत्यु के बाद कोई अस्तित्व नहीं रहता।

इसलिये जब तक जियो सुख पूर्वक एशआराम में जीयो। जितना मौजमजा करना है वो कर लो। तुम्हारे पास पैसा नहीं हो तो दूसरों के पास से छीन लो। नास्तिक दार्शनिक 'चार्वाक' का कहना था कि 'यावद् जीवेत सुख जीवेत् ऋणं कृत्वा, घृंत पिबेत् ।।' इस प्रकार धर्म, कर्म, पुण्य-पाप को नहीं मानते।

जैन धर्म का कहना है कि जिसकी उत्पत्ति होती है उसका नाश भी होता है। यदि आत्मा की उत्पत्ति माने तो आत्मा का नाश भी मानना पड़ेगा। जबकि शरीर से अलग आत्मा तो अजर-अमर ही है।

नास्तिक लोग 'आ भव मिठो परभव कोणे दीठो' ? इस प्रकार मानकर भोग विलास में मस्त बने रहते हैं। किन्तु जब अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त बनते हैं, तब उनके शोक-संताप का पार नहीं रहता मृत्यु उनको डरावनी लगती है और उससे बचने के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न करते हैं किन्तु सब व्यर्थ हो जाते हैं।

उनसे जब पूछा जाता कि पाँच जड़ वस्तुओं में से चैतन्यशक्ति किस प्रकार उत्पन्न हो सकती है। तब वे कहते हैं कि शराब जिन वस्तुओं से बनती है उनमें नशे का अंश भी नहीं होता, किन्तु जब सब मिलाकर शराब बनाई जाती है तो वह नशीली होती है।

परन्तु उनका यह जवाब उचित नहीं है। रेत के किसी कण में तेल नहीं है, तो रेत के समुदाय में वह कहाँ से संभव होगा।

यदि पंचभूत के विशिष्ट संयोजन से चैतन्य शक्ति उत्पन्न होती है, तो सभी प्राणियों में चैतन्य शक्ति समान रूप से व्यक्त होनी चाहिये। सभी की आयु भी एक साथ पूर्ण होनी चाहिए।

किन्तु उसमें तरतमता देखने को मिलती है। पंचेन्द्रिय प्राणियों की शक्ति जितने प्रमाण में व्यक्त होती है, उतनी चउरिन्द्रिय प्राणियों में नहीं होती। अरे मनुष्य-मनुष्य में भी शक्ति की मात्रा कम अधिक देखने में आती है।

आज का विज्ञान बहुत आगे बढ़ गया है, किन्तु फिर भी आँख जैसी आँख या

नाक जैसी नाक नहीं बना सकता। उसकी आँख और नकली आँख में जमीन-आसमान का अंतर होता है। जब जीवन्त शरीर के एक भाग की भी नकल नहीं हो सकती तब समग्र चैतन्य की उत्पत्ति तो किस प्रकार की जा सकती है।

इस प्रकार देहात्मवादियों की सभी दलीलों का दहन होता है। अर्थात् देह और आत्मा को भिन्न ही मानना चाहिए।

आत्मा इन्द्रियों से भिन्न है- कितने ही लोग देह में रही हुई इन्द्रियां ही आत्मा है उसी के द्वारा ज्ञान होता है ऐसा मान लेते हैं। किन्तु ज्ञान ये इन्द्रियों का असाधारण धर्म नहीं है। कारण कि जो जिसका असाधारण धर्म होता है, वह उसके बिना नहीं रह सकता है। उष्णता के बिना अग्नि की कल्पना कौन कर सकता है। इन्द्रियाँ स्वयं वस्तु को जान सकती नहीं एवं उसका अनुभव भी याद नहीं रख सकती। अनुभव तो चैतन्य भंडार में रहता है।

यदि इन्द्रियाँ स्वयं जान सकती तो निद्रा में भी उसका जानना चालु ही रहता एवं मृत अवस्था में भी। किन्तु ज्ञान ये आत्मा का गुण है। इन्द्रियों का नहीं। इसलिए इन्द्रियों को आत्मा नहीं मान सकते। आत्मा इन्द्रियों से भिन्न है। प्राण आत्मा से पृथक है- कितने ही प्राणी प्राण को आत्मा मान लेते हैं। किन्तु प्राण क्या है? यह वह नहीं कर सकते। प्राण को कोई वायु, कोई सूर्य की गरमी, तो कोई सूक्ष्म प्रवाही पदार्थ मानते हैं। किन्तु ये सब तो भौतिक पदार्थ हैं तो आत्मा का स्थान कैसे ले सकते हैं। जैन शास्त्रों में प्राण की संख्या 10 बताई गई है। 5. इन्द्रियां, तीज बल (मन, वचन, कायबल), श्वांसोच्छवास, आयु इस प्राण को धारण करने वाला प्राणी कहलाता है। सहज ही सिद्ध हो जाता है कि प्राण को धारण करने वाला प्राण से भिन्न ही होना चाहिए और वह भिन्न द्रव्य आत्मा है।

आत्मा मन से भिन्न है- कितने ही मन को ही आत्मा मानते हैं। यह भी युक्त नहीं। क्योंकि मन से विचार कर सकते हैं और प्रेम तथा इच्छाओं को प्रदर्शित कर सकते हैं, किन्तु ये विचार करने वाला और प्रेम इच्छाओं को प्रदर्शित करने वाला उससे अलग होता है और वह आत्मा है।

जब तक आत्मा को देह, इन्द्रिय, प्राण, मन आदि को आत्मा मानने का भ्रम नहीं टलेगा तब तक आध्यात्मिक प्रगति अथवा आत्म उन्नति शक्य नहीं है।

◆◆◆

अंडमान व निकोबार द्वीप शताब्दियों पूर्व जैन केन्द्र थे

(संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.)

बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान व निकोबार द्वीप समूह को अंग्रेजों के शासन में 'कालापानी' कहा जाता था। यहाँ उन कैदियों को रखा जाता था जो आजीवन कारावास भुगतते होते थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कई योद्धाओं को राष्ट्रवेदी पर आहुति अर्पित करने के आरोप में इन द्वीपों में वर्षों तक रखा गया। यहाँ की प्राकृतिक स्थिति ऐसी थी कि कैदी भाग नहीं पाते थे।

चौलवंशीय राजाओं के शिलालेखों में अंडमान का नाम एक प्राकृत शब्द आदमन्न मिलता है। जिसका अर्थ किया जा सकता है। आदमन्न जिससे तात्पर्य निकलता है आद् दाने आत्मा का मन्न याने मनन पूर्ण अर्थ करें तो आत्मा का मनन करने वाले लोगों का द्वीप। इसी प्रकार निकोबार का शिलालेखों में प्रांतीय नाम नक्कावरम मिलता है जिसका अर्थ होता है नग्न लोगों का द्वीप।

जैन इतिहास 24 वीं शताब्दी पूर्व में आचार्य भद्रबाहु स्वामी की गाथा देता है। मगध में भीषण दुष्काल के समय आचार्य भद्रबाहु दस हजार साधु–संतों, मगध राजा चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ पैदल विहार करते हुए करवप्र पहुंचे थे। यही स्थान वर्तमान में श्रवण बेलगोला कहा जाता है। वृद्धावस्था के कारण भद्रबाहु यहीं रुक गये थे लेकिन आचार्य विशाखा के नेतृत्व में साधुओं के दल आगे सीमांत प्रदेशों तक चले गये। वे सिंहल द्वीप तक पहुंचे थे। उनके विचरण से स्थानीय निवासियाँ ने साधु तथा श्रावक दोनों की चर्चा का पालन किया होगा जो जैन संस्कृति से सम्बन्ध थे। ये निवासी धीरे–धीरे दलितों की श्रेणी में चले गये। निश्चित रूप से इनके पूर्वज जैन थे जो अण्डमान–निकोबार द्वीप तक फैले हुए थे।

◆◆◆

मन पर नियन्त्रण का आध्यात्मिक विज्ञान

(डॉ. अचल भगत)

सामान्यतः लोग इस सांसारिक मन के नियन्त्रण में रहते हैं, इसलिए इसकी विशाल शक्ति का लाभ नहीं उठा पाते। परन्तु जो लोग इस सांसारिक मन पर पूर्ण नियन्त्रण कर लेते हैं, वे अपने मन के शुद्ध स्वरूप अर्थात् आत्म-शक्ति के मूल स्वरूप से सदैव आनन्दित रहते हैं।

'जो अपने आधार को जानता है, वह लोगों का आधार बन जाता है। मन ही हमारा आधार है।' यह सूत्र छान्दोग्य उपनिषद् में इस सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए दिया गया है कि यह हमारा मन ही है, जो हमें सारे ब्रह्माण्ड की सर्वविद्यमान शक्ति अर्थात् परमात्मा से अलग करता है। इसी मन को नियन्त्रण करने से हम परमात्मा की शक्ति के साथ एकता महसूस कर सकते हैं। प्राचीनकाल से भारत के महान योगी सन्त मनरूपी दीवार को गिराकर आत्मा और परमात्मा की एकता को महसूस करने में सफलता प्राप्त करते रहे हैं।

जिस प्रकार मन आत्मा और परमात्मा के बीच में दीवार बनकर खड़ा है, उसी प्रकार यही मन हमारे और भिन्न-भिन्न प्राणियों के बीच भी दीवार बनकर खड़ा है। मनरूपी इस दीवार को गिराकर हम अपने वातावरण के अन्य प्राणियों अर्थात् मनुष्यों ही नहीं अपितु पशुओं के साथ भी एकता महसूस कर सकते हैं। क्या मन इतनी ताकतवर सत्ता है, जो व्यक्ति में 'मैं' के स्तर को इतना पक्का कर देती है, कि वह अपने आपको अपने नाम, शरीर और अपनी वस्तुओं के साथ जोड़कर ही समझता रहता है? यदि किसी व्यक्ति को अपना वास्तविक स्वरूप पहचानना हो तो स्वाभाविक है कि उसे अपने मन को पूरी तरह वश में करके अपने नाम, शरीर और वस्तुओं से अलग करके अपने आपको देखने और समझने का प्रयास करना पड़ेगा। एक बार जब व्यक्ति अपने मूल स्वरूप को पहचान लेगा, समझ लेगा और उसमें स्वयं को स्थापित करने में सफल हो जायेगा तो स्वाभाविक रूप से वह अन्य प्राणियों को भी उनके मूल स्वरूप में ही देखना और समझना प्रारम्भ कर देगा। मन को नियन्त्रित करने से पूर्व यह आवश्यक है कि सबसे पहले हम यह समझने का प्रयास करें कि मन है, क्या ?

पश्चिमी सभ्यता के मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह तंत्रिका- तंत्र का एक महत्वपूर्ण अंग है। सारे शरीर से तरह-तरह के संदेश मस्तिष्क के संवेदी क्षेत्र में पहुँचते हैं और मस्तिष्क के ही प्रेरक क्षेत्र से कार्य करने की प्रेरणाएँ शरीर की विभिन्न इन्द्रियों को जाती है। इस प्रकार मस्तिष्क सहित हमारा तंत्रिका तंत्र संदेश लाने ले जाने के कार्य में जुटा रहता है। दूसरी तरफ भारत में वैदिक सभ्यता का अनुसरण करने वाले ऋषियों ने ध्यान और आत्म-चिन्तन की प्रक्रिया से मन, उसकी प्रकृति और कार्य करने के तरीकों का अध्ययन करने का प्रयास किया। उन्होंने मन को मस्तिष्क के पीछे कार्य करने वाली शक्ति के रूप में समझा।

◆◆◆

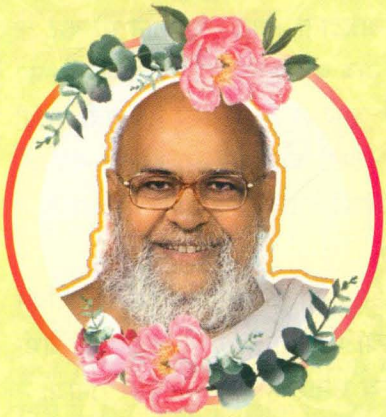

(लेखांक-10)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

उसने मन ही मन कुछ निश्चित कर लिया। रात्रि विश्राम कर दूसरे दिन राजा अपने अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ दूसरे गाँव की ओर चल दिया। मार्ग में पानी से भरपूर भरी हुई नदी के दोनों किनारों पर अच्छे छायादार वृक्ष थे। राजा का मन हुआ कि थोड़ी देर यहां रुककर विश्राम कर लिया जावे। राजा ने यहाँ ठहरने का आदेश दे दिया, यात्रा रुक गई। एक घने छायादार वृक्ष के नीचे राजा के लिये शैय्या लगा दी गई। उसके आसपास भी बिछात लगा दी गई। राजा अपनी शैय्या पर आकर बैठ गया। कुछ अधिकारी राजा के आसपास आकर बैठ गए। एक सेवक वीजन लेकर हवा करने लगा तो राजा ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया। सेवक वीजन लेकर एक ओर जाकर बैठ गया।

'अन्नदाता ! कई दिनों से यह सेवक आपसे एक विनती करना चाहता था, किन्तु कभी अवसर ही नहीं मिला। यदि आज्ञा हो तो निवेदन करूँ।' एक अधिकारी ने विनयपूर्वक कहा।

'यदि प्रजा हित की बात हो तो अविलम्ब कहो। हमने कभी किसी को रोका नहीं है।' राजा ने कहा।

'अन्नदाता। बात राजा और प्रजा दोनों के हित की है।' अधिकारी इतना कहकर चुप हो गया। सम्भवतः उसे आशंका रही हो कि उसकी बात सुनकर राजा क्रोधित न हो जाए।

'तुम अपनी बात कहो तो सही। यदि हितकर होगी तो उस पर विचार किया जाएगा।' राजा ने कहा।

'अन्नदाता ! प्रजा को महारानी का अभाव खटक रहा है। क्या इस अभाव की पूर्ति हो सकेगी ? अधिकारी ने अपनी बात को कुछ घुमाकर कहा।

राजा वीरधवल ने बात सुनी। उसकी मुखमुद्रा गम्भीर हो गई। शायद उसे ऐसे किसी प्रस्ताव की अपेक्षा नहीं थी। कुछ देर तक वह

मौन ही बैठा रहा। उसके मौन को वहाँ बैठे अधिकारियों ने उसकी स्वीकृति समझ लिया। जिस अधिकारी ने पिछले गाँव में नृत्यांगना को अपलक दृष्टि से देखते हुए राजा को देखा था, वह बहुत ही विनयपूर्ण शब्दों में बोला- 'अन्नदाता ! कुछ हम पर भी कृपा करो। महारानीजी के अभाव में हमें भी राजमहल सूना-सूना लगता है। राजकुमारों की सही-सही देखभाल भी नहीं हो पा रही है। अन्नदाता आप स्वीकृति प्रदान कर दें। एक से एक सुन्दर राजकुमारियां विद्यमान हैं। आपकी कीर्ति चारों ओर फैली हुई है। जहाँ भी आप चाहेंगे, वहीं आपका विवाह हो जाएगा।'

'आप लोगों का कथन किसी सीमा तक ठीक हो सकता है, किन्तु आपको स्मरण होना चाहिए कि हमने अपनी स्वर्गीय रानी को पुनर्विवाह न करने का वचन दिया है। आप जैसा चाहते हैं, वैसा नहीं हो सकता।' राजा ने मौन भंग करते हुए कहा।

'अन्नदाता ! आप भी कौन सी बात ले बैठे। अब वह युग नहीं रहा। आज नए-नए संदर्भ जन्म ले रहे हैं और हम वही पुरानी घिसी-पिटी बातों पर आ रहे हैं। यह हमें शोभा नहीं देता।' एक अन्य अधिकारी ने कहा।

'अन्नदाता ! वचन का निर्वाह जीवित अवस्था में होता है। मृत्यु के पश्चात् सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। फिर रानीजी ने मरकर कभी का अन्य स्थान पर जन्म ले लिया होगा। यदि आप उनकी आत्मा की साक्षी से कुछ कहना चाहें तो वह भी अब उचित नहीं है।' एक तीसरे अधिकारी ने राजा को परामर्श दिया।

'आप लोगों की दृष्टि से ऐसा हो सकता है। किन्तु मैं ऐसा नहीं मानता। मैं अपना वचन भंग नहीं कर सकता। यदि मैं पुनर्विवाह करता हूँ तो यह स्वर्गीय रानी के साथ विश्वासघात होगा।' राजा ने कहा। **(क्रमशः)**

◆◆◆

साहित्य समीक्षा

प्रशंसनीय दीवाल पंचाग

प्रकाशक- श्री गुरुभक्त सेवा समिति, नागपुर, पृष्ठ बड़े आकार के 12 आर्ट कार्ड शीट पर, मुद्रण- बहुरंगी आकर्षक, छपाई-सफाई - उत्तम । मूल्य-अंकित नहीं। प्राप्ति स्थान फोन नं. (0712-2433650) भावना मानावत।

संस्कारजन्य जैन परिवारों में पंचाग का बहुत महत्त्व है। ये भारतीय मास के अनुसार मान्यता को पृष्ठ करने वाले होते हैं। अतएव जैन तपस्याएँ करने वालों के लिये पंचाग अनिवार्यता है। विविध प्रकाशित पंचाग पॉकेट साईज के होते हैं लेकिन अंग्रेजी कैलेण्डरों की तरह दीवाल पर लगाया जा सके। ऐसे पंचाग (भारतीय कैलेण्डर) का अभाव सा था। प्रस्तुत कैलेण्डर ने युक्तियुक्त पूर्ति की है, अतएव प्रशंसनीय है। कैलेण्डर में तिथियाँ वार व दिनांकों का सामंजस्य किया गया है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अतिथि रचना

संसार की दिव्य ज्योति है- प्रेम

(मुनिश्री अक्षयसागरजी म.सा.)

प्रेम और मोह में एक को काया और दूसरे को छाया कहा जा सकता है। दोनों में वही अंतर होता है जो काया और छाया में है। शरीर में जीवन होता है, छाया निष्प्राण होती है। छाया को देखकर वास्तविकता का भ्रम तो हो सकता है, पर उससे काया का प्रयोजन पूरा नहीं हो पाता।

परमार्थ भावना :- प्रेम का आरंभ किसी व्यक्ति से हो तो सकता है पर उस तक सीमित नहीं रह सकता। यदि सीमित रह जाता है और कुछ पाने की कामना करता है तो वह मोह बन जाता है। प्रेम में पाने की नहीं देने की उमंग रहती है। प्रेमी की प्रसन्नता और हित-कामना जुड़ी रहती है। मोह आदान-प्रदान की अपेक्षा और उपभोग की कामना करता है। प्रेम वस्तुओं में जुड़कर सदुपयोग की, व्यक्तियों में जुड़कर उनके कल्याण की और समस्त विश्व से जुड़कर परमार्थ की बात सोचता है। मोह में व्यक्ति, पदार्थ और संसार से किसी न किसी प्रकार स्वार्थ जुड़ा रहता है। जिसके प्रति मोह होता है उसे अपनी इच्छानुसार चलाने की ललक रहती है। इसमें व्यवधान होने पर खीज, झुंझलाहट और असंतोष का उद्वेग उमड़ता है। प्रेम इस तरह की कोई कामना नहीं करता। प्रेमी के हितचिंतन और उसके प्रति अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति में ही संतोष अनुभव करता है।

प्रसन्नता और विकास :- प्रेम का अंकुरण परिवार से आरंभ होता है और विकसित, पल्लवित, पुष्पित होते हुए उसकी शाखाएँ समस्त समाज में फैल जाती हैं। परिवार, प्रेम-साधना की एक पाठशाला है। पत्नी द्वारा बच्चों के लिए अपने सुखों की बलि दी जाती है, उनकी प्रसन्नता और विकास की बात सोची जाती है। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में जो कष्ट उठाया जाता है उसमें संतोष की अनुभूति होती है। यह आरंभिक प्रशिक्षण है किन्तु जब अपने सगे-संबंधियों की प्रसन्नता के लिए उचित अनुचित का ध्यान नहीं रहता और आदर्शों की बलि दे दी जाती है तो वह प्रेम नहीं रहता मोह बन जाता है, जो स्वयं तथा जुड़े हुए व्यक्तियों के लिए हानिकारक होता है। प्रेम, गंगा की भांति वह पवित्र जल है जिसे जहां छिड़का वहीं पवित्रता पैदा करेगा। उसमें आदर्शों की अविच्छिन्नता जुड़ी रहती है।

आदर्श रहित प्यार को ही मोह कहते हैं। मोह में अपने प्रिय-पात्र को ऊंचे उठाने की क्षमता नहीं होती। अवांछनीयता से मोह समझौता कर सकता है- प्रेम नहीं। दूरदर्शिता, विवेकशीलता, शालीनता, पवित्रता, सदाशयता जैसे गुणों का भरपूर समावेश प्रेम में होता है। प्रेमी जिससे प्रेम करता है उसमें इन्हीं गुणों की अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है। मोह इन विशेषताओं से रहित होता है।

समभाव-समदृष्टि :- भाव-संवेदनाओं के उच्चस्तरीय आदर्शों के प्रति समर्पण को प्रेम कहा जाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता होती है कि यह सीमाबद्ध नहीं हो सकता। क्रमशः विस्तृत होता जाता है। सूर्य पूर्व से उदय तो होता है किन्तु उसका प्रकाश समस्त दिशाओं में फैल जाता है। बादल समुद्र से निकलते तो हैं पर उसी क्षेत्र में नहीं बरसते- सर्वत्र अपना अनुदान बिखेरते हैं। उत्कट प्रेम की भी यही विशेषता होनी चाहिए। उसका आरम्भ सगे-संबंधियों, मित्रों से तो हो पर उतने तक ही सीमित न रहे वरन समाज, राष्ट्र और विश्व की सीमाओं में विकसित होना चाहिए- देश, धर्म, संस्कृति और मानव जाति की सेवा साधना में निरत होना चाहिए।

जीवन के सुंदरतम रूप की कुछ अभिव्यक्ति हो सकती है तो वह प्रेम में ही है। इसको निकाल दिया जाय तो मनुष्य जीवन में कोई विशेषता रह नहीं जाती। शुष्क, नीरस हृदय मरघट के पिशाच की भांति जलता और सदा अतृप्त, उद्विग्न और अशांत बना रहता है। ऐसा जीवन स्वयं के लिए भारभूत और समाज के लिए अभिशाप सिद्ध होता है। प्रेम संसार की वह ज्योति है जिसका प्रकाश पा कर हर व्यक्ति अपने अंतरंग के कषाय-कल्मषों को दूर करता और हृदय को पवित्र, निर्मल बनाता है। विश्व की यह सबसे बड़ी रचनात्मक शक्ति है।

निर्मल स्त्रोत :- अंतःकरण से उठने वाली प्रेम की लपटें शरीर, मन, बुद्धि और अंतःकरण की शक्तियों का उद्दीपन कर उन्हें ऊपर उठाती है और दिव्य आनंद की रसानुभूति कराती है। निष्काम प्रेम में वह शक्ति है जो प्रवाह बन कर फूटती है और हजारों लाखों के जीवन में आनंद का स्त्रोत बनकर उमड़ पड़ती है। वह हजारों के अंतःकरण को धोकर निर्मल बना देती है। मोह में न तो विस्तार की गुंजाइश होती है और न ही किसी को प्रभावित करने की क्षमता ही। वह विशुद्ध रूप से भौतिक धरातल पर टिका होता है और भौतिक आधारों के डगमगाते ही असंतोष और निराशा उत्पन्न करता है।

◆◆◆

अठारह सावद्य प्रवृत्तियों से बचें

(श्री शांतिलाल दुगड़)

सामायिक साधना में सावद्य प्रवृत्तियों के त्याग का विधान है। सावद्य अर्थात् वे प्रवृतियां, जिन्हें करने से पाप कर्म का बंध होता है। ये प्रवृतियां अठारह प्रकार की होती हैं। इनसे बचने का अर्थ शारीरिक स्वस्थता, मानसिक प्रसन्नता एवं आध्यात्मिक उदय है।

1. **प्राणातिपात पाप** – किसी भी जीव के प्राणों को हनन करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
2. **मृषावाद पाप** – झूठ बोलने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
3. **अदत्तादान पाप** – चोरी करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
4. **मैथुन पाप** – अब्रह्मचर्य सेवने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
5. **परिग्रह पाप** – परिग्रह से होने वाले कर्मबंध से बचें।
6. **क्रोध पाप** – क्रोध करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
7. **मान पाप** – मान करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
8. **माया पाप** – माया (कपट) करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
9. **लोभ पाप** – लोभ करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
10. **राग पाप** – राग करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
11. **द्वेष पाप** – द्वेष करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
12. **कलह पाप** – कलह करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
13. **अभ्याख्यान पाप** – मिथ्या आरोप लगाने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
14. **पैशुन्य पाप** – चुगली करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
15. **परपरिवाद पाप** – निंदा करने से होने वाले कर्मबंध से बचें।
16. **रति– अरति पाप** – असंयम में रूचि और संयम में अरूचि से होने वाला कर्मबंध से बचें।
17. **मायामृषावाद पाप** – माया सहित झूठ बोलने से होने वाला कर्मबंध से बचें।
18. **मिथ्यादर्शनशल्य पाप** – विपरीत श्रद्धा रूपी शल्य से होने वाले कर्मबंध से बचें।

◆◆◆

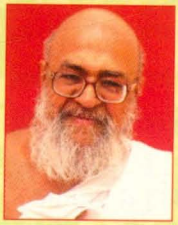

स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज

मुनि श्री प्रशमसेन विजयजी महाराज

मुनिश्री जयन्त विजयजी म.सा. को उपाचार्य पद

समाज संगठन की दृष्टि से आपका पत्र व्यवहार समाज के अग्रगण्य महानुभावों एवं परिषद के कार्यकर्त्ताओं से प्रारम्भ हुआ। आपके द्वारा लिखित पत्र जब सबको मिलने लगे तो सबके मन में उमंग, उल्लास एवं उत्साह का संचार होने लगा। आपकी हस्तलिपि की सुंदरता, सुडौलता, सुघड़ता एवं स्वच्छता से लोग काफी प्रभावित हुए। आपकी हस्तलिपि मोतियों की भाँति सुंदर है।

सन् 1960 में कार्तिक पूर्णिमा के दिन गुरुदेव आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में अखिल भारतीय त्रिस्तुतिक समाज की बैठक का आयोजन श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर हुआ। इस समय तक आचार्यश्री के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आ चुकी थी।

स्थिति कुछ गंभीर थी। ऐसी स्थिति में आचार्यश्री द्वारा संघ के समक्ष यह घोषणा की गई कि उनके पश्चात् आचार्य पद मुनिराज श्री विद्याविजयजी म.सा. को तथा उपचार्य पद मुनिराज श्री जयंतविजयजी म.सा. को प्रदान किया जावे। इसके साथ ही आपने अखिल मालव मेवाड़ प्रांतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद तथा शाश्वत धर्म को मार्गदर्शन प्रदान करने का उत्तरदायित्व मुनि श्री जयंतविजयजी म.सा. को सौंपा।

वज्राघात

व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का स्वास्थ्य कुछ दिनों से अस्वस्त था। शरीर क्षीण होता जा रहा था। उपचार चल रहा था, किन्तु प्रभावहीन था। कहा गया है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है।

आचार्यश्री ने भी संवत् 2017 पौष शुक्ल तृतीया को अपनी देह का त्याग कर दिया। आपके स्वर्गवास से संघ में शोक की लहर व्याप्त हो गई। गुरुदेव का वियोग मुनिराज श्री जयंतविजयजी के लिये वज्राघात के समान था। अपने जीवन निर्माता के वियोग ने आपको विचलित कर दिया।

फिर भीआपने धैर्य और साहस से काम लिया और अपनी शोक भावनाओं को एक श्रद्धांजलि गीत के माध्यम से उसी रात्रि में श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर आयोजित शोक सभा में भावपूर्ण स्वर में अभिव्यक्त किया।

पूज्य स्व. जयंतसेनसूरिजी साहब के स्मृति रूप हस्ताक्षर

भव्य रितेश।

धर्मलाभ,

साधना के लिये प्राप्त है जीवन।

ज्ञानोपासना एवं सद्‌गुण साधना के पथ पर क्रमशः गतिशील हो कर प्रगतिशील बनो तुम यह मेरी कामना है।

तुम्हारी शैली एवं शब्द संकलन अवश्य ही उपादेय है। गुरुदेव की भक्ति एवं श्रद्धा तुम्हारे जीवन की शक्ति बने यही मेरी आन्तरेच्छा।

आगे बढ़ो, सफल हो इन्हीं भावनाओं के साथ —

जयन्तसेनसूरि

धर्मलाभ

नागदा (धार)

दि. १२।६।९६

स्व. रितेशजी डूंगरवाल इंदौर को प्रदान किया गया पुण्य सम्राट द्वारा पत्र।

श्री:

सुश्रावक श्रीरमेशजी श्रीश्रीमाल।

धर्मलाभ।

पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुए।

स्तवन अतीव ही सुन्दर है। परमात्मा का दर्शन सभी कष्ट मिटा कर शान्ति प्रदान करता है। यदि सुबह में मन्दिर मे भगवान के सामने कहा है तो खूब लाभप्रद होगा।

यहाँ पर गुरुदेव की कृपा से आनन्द मंगल है। उपधान आराधना सुखशान्ति से चल रही है।

अशोक आदि सभी को ही धर्मलाभ कहें।

धर्म उद्यम रखें।

श्री: जयन्तसेनसूरि

धर्मलाभ

धारा

दि. १५।१०।९६

श्री रमेशजी श्रीश्रीमाल के नाम प्रदत्त पुण्य सम्राट का आशीर्वाद।

मधुकर-मौक्तिक

- किसी के भाग्य के विरुद्ध बोलना मिथ्यात्व है।
- कोई किसी के साथ भी बदला नहीं ले पाता है।
- जहाँ तक अपने दिल में से दुर्भावना नहीं निकलती है, तब तक आत्मा का कल्याण नहीं हो पाता है।
- जब तक जिनेश्वर देव का दर्शन नहीं होता है, वहाँ तक स्वयं का दर्शन भी संभव नहीं है। जिनदर्शन में आत्मदर्शन का समावेश है।
- वे भव्य हैं, जिनके मन में जिन-दर्शन की इच्छा होती है।
- उस व्यक्ति का हृदय और जीवन अवश्य प्रकाश में आता है जो सुदेव-सुगुरु-सुधर्म का आलम्बन लेता है।
- जिनवाणी में संशय रखना यह स्वयं के लिये घातक है।
- व्यक्ति स्वयं के कारण ही दुःख प्राप्त करता है।
- कर्म सारे जगत में शासन करते हैं, परन्तु ये कर्म पंच परमेष्ठी से डरते हैं इसलिए पंच परमेष्ठी से सम्बन्ध रखने से कर्म ढीले हो जाते हैं।
- संसार के सुख की इच्छा करना पाप है, फिर भी नवकार से संसार के सुख मिलते हैं। संसार सुख के लिए नवकार का उपयोग नहीं करना चाहिये। नवकार में मोक्ष की ताकत है, तब हम क्यों अन्य याचना नवकार से करें।
- मन के अक्षरों को उलटने पर नम बनता है, जब तक परमेष्ठी भगवंत के प्रति नमस्कार भाव पैदा नहीं होगा तब तक संसार का परिभ्रमण मिटेगा नहीं।
- भाव यात्रा भव यात्रा का अन्त करती है।
- आठ कर्मों का क्षय करके आत्मा सिद्ध गति को प्राप्त करती है।
- संसार की सभी वस्तुएँ विनाशी हैं एक मात्र सिद्ध अविनाशी है।
- आचार्य का आचार पाँच प्रकार, छत्तीस प्रकार अथवा 108 प्रकार का है दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और वीर्य आत्मा के पाँच मुख्य गुण हैं। उनको प्रकट करने हेतु पाँचों आचार क्रमशः ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और विर्याचार के नाम से जाने जाते हैं।
- नवकार में नव रस हैं 1. श्रृंगार, 2. हास्य, 3. करुण, 4. रौद्र, 5. वीर, 6. भयानक, 7. वीभत्स, 8. अद्‌भुत, 9. शांत।
- श्री नमस्कार महामंत्र महाशास्त्र माना जाता है, चौदह पूर्वधर महिर्षी भी।
- नवकार आराधना में आने पर चार संज्ञा पर विजय प्राप्त करते आहार-एकासना अथवा आयम्बिल या उपवास से।

जिनशासन की वर्णमाला

(साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

श– शक्तिपात– एक प्रकार की शक्ति।

परमगुरु से सद्गुरु के द्वारा अपने तक पहुँचाने वाली कृपा को शक्तिपात कहते हैं। शक्तिपात अर्थात सद्गुरु की शक्ति से शिष्य में होता हुआ गुणों का संक्रमण। शक्तिपात प्राप्त करने के लिए शिष्य में दो प्रकार की योग्यता होना आवश्यक है। (1) अनन्यभाव (2) गुरु सन्मुखता । अनन्यभाव :– गुरु के सिवाय शिष्य का अन्य कहीं भी चित्त नहीं। अपना चित्त गुरुमय बनाना अनन्यभाव कहलाता है। गुरु सन्मुखता :– गुरु के सन्मुख रहना, गुरु के इंगित आकार को समझना, सद्गुरु के चरणों में रमण करना। सद्गुरु 3 प्रकार से शक्तिपात करते हैं–

(1) शब्दपात :– शब्द द्वारा गुरु शब्द देते हैं और शिष्य उसका आचरण करता है।

(2) हस्तपात :– हाथ द्वारा सद्गुरु शिष्य के सिर पर हाथ रखते हैं, वासक्षेप करते हैं।

(3) दृष्टिपात :– आँख द्वारा सद्गुरु शिष्य की आँखों में दृष्टि करते हैं और शिष्य में शक्तिपात होता है।

ष–षट्काय :– पृथ्वीकाय आदि छः जीवों का समूह । शरीर षट्काय अर्थात् पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय।

(1) पृथ्वीकाय :– पृथ्वीरूप जीवों का समूह वह पृथ्वीकाय कहलाता है। जैसे– कच्चा नमक, सभी प्रकार के पत्थर, सभी प्रकार की धातुएं, स्फटिक, मणि, पारा आदि।

(2) अप्काय :– पानी के जीव– वर्षा, बर्फ, ओले आदि। सचित्त जल के एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं। जिसको हम यंत्र के माध्यम से देख सकते हैं।

(3) तेउकाय :– अग्नि के जीव – बिजली, पंखा, टी.वी., मोबाइल, ज्वाला आदि।

(4) वायुकाय :– हवा के जीव– सभी प्रकार की वायु, ऊँची बहने वाली आवाज करने वाली वायु आदि।

(5) वनस्पतिकाय :– इसके दो भेद हैं (1) प्रत्येक वनस्पतिकायः जिसके एक शरीर में एक जीव होता है । उदाहरण केला, पेड़, फल, हरि वनस्पति आदि। (2) साधारण वनस्पतिकायः – जिसके एक शरीर में अनन्त जीव होते हैं। उदाहरण आलू, पालकभाजी, जमीकंद आदि।

संसारी लोग सुबह उठते ही इन छःकाय जीवों की हिंसा प्रारंभ करते हैं किन्तु साधु षट्जीवों का रक्षक होता है।

स–सम्यग्दर्शन :– सम्यक् प्रकार से देखना अथवा सही मान्यता। सुदेव, सुगुरु, सुधर्म में सच्ची श्रद्धा सम्यग्दर्शन कहलाता है।

सम्यग्दर्शन के पहचानने हेतु 5 लक्षण बताए हैं :- **(1) शम-** उपशम- रागद्वेष की गांठ तोड़ना।

(2) संवेग- सांसारिक सुख को दुःखरूप मानना।

(3) निर्वेद- संसार के बंधन में से छूटने की इच्छा।

(4) अनुकंपा- संसार के प्रत्येक जीव दुःख से कैसे मुक्त हो इस प्रकार की भावना करना।

(5) आस्तिक्य- वीतराग प्रणित शास्त्र उपर श्रद्धा करना।

ह-हरिभद्रसूरि :- एक महान आचार्य 1444 ग्रंथ के रचयिता । हरिभद्र का जन्म चित्तौड़ में हुआ था। जाति से ब्राह्मण थे। जैनधर्म के कट्टर विरोधी थे। उनको अपने ज्ञान पर अभिमान था इसलिए प्रतिज्ञा ली थी कि यदि किसी भी विद्वान के एक भी शब्द अगर ठीक से समझ न पाऊँ तो मैं उनका शिष्यत्व अंगीकार कर लूगा। एक बार जैन साध्वियों का स्वाध्यायघोष मार्ग से गुजरते हुए राजपुरोहित हरिभद्र ने चक्किदुंग गाथा सुनी। बहुत प्रयत्न करने पर भी गाथा का अर्थ समझ में नहीं आया। हरिभद्र साध्वीजी के पास गये और विनयपूर्वक उसका अर्थ पूछा। तब साध्वीजी ने उनके आचार्य जिनभट्ट सूरि से संपर्क करने को कहा। आचार्यश्री के पास जाने पर आचार्यश्री ने कहा कि आपको इसका अर्थ समझने के लिए दीक्षा अंगीकार करनी पड़ेगी। राजपुरोहित हरिभद्र ने प्रतिज्ञानुसार शिष्यत्व अंगीकार किया। शीघ्र ही जैन शास्त्रों का अध्ययन किया। गुरु ने उनकी योग्यता देखकर आचार्यपद प्रदान किया।

उनके दो शिष्य हंस और परमहंस बौद्धाचार्य के पास बौद्ध का ज्ञान प्राप्त करने हेतु बौद्ध भिक्षु बनकर गये। जब उन लोगों को पता चला कि यह दोनों जैन साधु हैं तब उन्होंने दोनों की हत्या करवाने हेतु सैनिकों को भेजा। शिष्यों की मृत्यु से क्रुद्ध हुए हरिभद्रसूरि सुरराजा के पास पहुँचे और बौद्ध भिक्षुओं के साथ इस शर्त के साथ विवाद किया कि जो भी हारेगा उसको पकड़कर उकलते हुए तेल में डाल दिया जाएगा। हारे हुए 1444 भिक्षुओं की शर्त के अनुसार पकड़कर रखा था। जब यह घटना उनके गुरुदेव श्री जिनभद्रसूरि को ज्ञात हुई तो उन्होंने इस महान अनर्थ को रोकने हेतु और उनको शान्त करने के लिए 3 गाथाएँ देकर दो साधु को उनके पास भेजे। तीन गाथाओं को पढ़कर वे गहन चिन्तन में डूब गये। तीव्र पश्चाताप हुआ। गुरुदेव के पास जाकर उनके चरणों में सिर रखा और अश्रुजल से पाँवों का प्रक्षालन किया और आत्मशुद्धि हेतु गुरु से प्रायश्चित के रूप में 1444 ग्रन्थों की रचना की।

क्ष-क्षपकश्रेणी-मोहनीय कर्म :- की प्रकृतियों का मूल से नाश होना क्षपकश्रेणी कहलाती है। श्रेणी दो प्रकार की होती है- (1) उपशम श्रेणी (2) क्षपक श्रेणी)।

(1) उपशम श्रेणी :- उपशम अर्थात् शांत होना। जिस प्रकार गंदेपानी में फिटकरी घुमाने से पानी निर्मल हो जाता है लेकिन नीचे के भाग में कचरा जम जाता है उसी प्रकार

उपशमश्रेणी वाले जीवों के भावों को कलुषित करने वाला मोहनीय कर्म शान्त कर दिया जाता है लेकिन सत्ता में कर्म का अस्तित्व तो बना ही रहता है। अतः पुनः कर्म उदय में आते हैं। उनका पतन अवश्य होता है।

(2) क्षपक श्रेणी :– क्षपक अर्थात् क्षय करना। मोहनीय कर्म की प्रकृतियों को मूल से क्षय करते-करते ऊपर चढ़ना । उनकी सत्ता ही नष्ट हो जाती है। अतः उनके पुनः उदय में आने का भय नहीं रहता है। क्षपक श्रेणी में जीव का पतन नहीं होता है। क्षपक श्रेणी वाला जीव उसी भव में या तीसरे भव में अवश्य मोक्ष प्राप्त करता है।

त्र–त्रसजीव :– जो जीव अपनी इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं उसे त्रसजीव कहते हैं। बेइन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी जीव त्रस कहलाते हैं।

बेइन्द्रिय – जिन जीवों के स्पर्शेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय रूप दो इन्द्रियां होती हैं उन्हें बेइन्द्रिय जीव कहते हैं। बेइन्द्रिय जीवों को प्रायः पाँव नहीं होते हैं। शंख, कृमि, कोड़ी आदि। बासी भोजन में बेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होती है। द्विदल (कठोल, चने, मूँग आदि को कच्चे दूध, दही, छाछ के साथ मिश्रण करना) में भी बेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होती है।

तेइन्द्रिय – जिन जीवों में तीन इन्द्रियाँ होती हैं उसे तेइन्द्रिय कहते हैं। इनमें 4-6 या उससे अधिक पाँव होते है। उदाहरणः- कानखजूरा, जूं, चींटी, इल्ली आदि।

चउरिन्द्रिय – जिन जीवों में 4 इन्द्रियाँ होती हैं उसे चउरिन्द्रिय जीव कहते हैं। उदाहरण - बिच्छु, भ्रमर, मच्छर, मक्खी आदि। इनको 6-8 या उससे अधिक पाँव होते हैं।

ज्ञ–ज्ञान – ज्ञान आत्मा का मुख्य गुण है। ज्ञान अर्थात् जानना।

एक ही पद का गहरा अध्ययन करने से उसमें डूब जाने से जो ज्ञान मोक्षमार्ग की ओर बढ़ाने वाला है वह ज्ञान उत्कृष्ट ज्ञान कहलाता है। जिस प्रकार मासतुष मुनि को एक ही 'पद निर्वाण' साधक बना।

ज्ञान 5 प्रकार का होता है - **(1) मतिज्ञान :–** मन एवं इन्द्रियों की सहायता से होने वाला ज्ञान मतिज्ञान कहलाता है। **(2) श्रुतज्ञान :–** जो सुनने से, शास्त्र वचन से होता है वह श्रुतज्ञान कहलाता है। **(3) भवधिज्ञान :–** इन्द्रियों की सहायता के बिना मर्यादित द्रव्यादि को जाना जाता है वह अवधिज्ञान कहलाता है। यह ज्ञान देव-नारकी के जन्म से होता है। मनुष्य-तिर्यंच को लब्धि से होता है। यहाँ तक के 3 ज्ञान सम्यक्त्वी जीव हो तो ज्ञान रूप और मिथ्यात्वी जीव हो तो अज्ञानरूप में परिणमन होता है। **(4) मनःपर्यवज्ञान :–** जिस ज्ञान से ढाई द्वीप में रहे हुए संज्ञी पंचे-जीवों के मन के भावों को जाना जाए वह मनः पर्यवज्ञान कहलाता है। **(5) केवलज्ञान :–** जिस ज्ञान से तीन काल के, तीन लोक के सभी जीवों की सभी पर्यायों को एक साथ एक ही समय में हाथ में रहे हुए आवले की तरह जान सकते हैं। वह केवलज्ञान कहलाता है। यह ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से होता है। ◆◆◆

यदि निंदा करनी ही है तो स्वयं की करें

(श्रीमती आशा जैन)

जिन लोगों को निन्दा करने की आदत पड़ जाती है उन्हें किसी की निंदा किए बिना पल भर के लिए भी चैन नहीं पड़ती। कई बार विचार आता है कि निंदा का रोग दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ता जा रहा है। क्या व्यक्ति, क्या परिवार, क्या समाज, क्या राजनीति और तो और धार्मिक क्षेत्र भी इस रोग से लगता है कि पूरी तरह से ग्रस्त है और इसलिए वह अस्वस्थ और संत्रस्त है।

परनिंदा करने वाले महानुभाव आश्चर्य है कि वे यह कैसे भूल जाते हैं कि अठारह प्रकार के जो पाप हैं उनमें परपरिवाद अर्थात् निंदा भी एक पाप है। पाप छोड़ने योग्य होता है ग्रहण करने योग्य नहीं। पाप से संलग्नता संताप बढ़ाती है। और जहाँ संताप है वहाँ अपने आप से साक्षात्कार असम्भव है। स्वयं से साक्षात्कार के बिना अभिशाप से मुक्ति एवं आत्मोन्नयन आकाश कुसुमवत् है।

एक चिंतक ने लिखा है कि निंदा व्यभिचार से भी अधिक भयंकर है। व्यभिचारी व्यक्ति पश्चाताप कर अपने जीवन को पुनः विशुद्ध बना सकता है। परन्तु निंदक व्यक्ति को खुदा भी कभी माफ नहीं कर सकता। निंदा करने वाले महानुभावों को यह कभी भी नहीं भूलना चाहिये कि हम अपनी एक अंगुली दूसरे की ओर उठाते हैं तो शेष तीन अंगुलियां अपनी ओर आती हैं जिनका स्पष्ट अभिप्राय है कि तुम तीन बार अपने भीतर की ओर दृष्टिपात करें, कि तुम में कितने अवगुण हैं ?

संसार में सद्गुण और अवगुण की अवस्थिति सदैव से रही है और रहेगी। आप विधेयात्मक दृष्टिकोण लेकर सद्गुणों के ग्राहक बनो। अपनी क्षमता का दुरूपयोग निंदा करके मत करो। फिर भी यदि आपका मन नहीं मानता है और निंदा करने में ही यदि रुचि रस है तो एक कार्य करो आप निंदा किसी दूसरे की नहीं करके स्वयं की करो। जिस दिन आप स्वयं की निंदा प्रारम्भ करेंगे तो आपका जीवन निखरे बिना नहीं रहेगा।

पर की निंदा छोड़ कर,
खुद को लो सम्भाल ।
'कमल' इसी में सार है,
अन्य सभी जंजाल ।।

◆◆◆

आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

(धुन- सिद्धाचल ना वासी विमलाचल ना वासी जिनजी)

सुनलो भाईयों सभी
सुनलो बहनों सभी
संयम प्यारा...
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा
वीर शासन दमके,
राजेन्द्र गच्छ चमके
जय-जयकारा
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

जयंतसेन का विश्व संदेशा
नित्य चारित्र जयरत्न जैसा
अक्षत सुख को पाओ
अभिषेक कर के आओ
संदेश प्यारा...
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

शुभ भावों से आत्मा जगाना
अक्षितजयंत दिल में बसाना
मौन पौषध धारो
भवोदधि तारो
तीर्थ उद्धारा
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

प्रभु स्तुति मान से जो करते
सर्व विरति के भाव ही धरते
श्रुत भक्ति प्यारी
आयु बीते सारी
आत्म श्रृंगारा
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

तन की चिंता तुम्हें नाही करना
हीरे जैसे ही अनमोल बनना

आश्वी-प्रिय को तजे
सुहाने-अंश को भजे
लागे न्यारा...
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

पेपराल वीर की भूमि कहाई
आत्मोद्धार की देगा गवाही
श्रमण श्रमणी आये
चतुर्विध संघ को लाये
लागे प्यारा
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

प्रिय सपनों में राष्ट्रसंत आये
अशोक वृक्ष तले आसन लगाये
रजोहरण देंगे गुरु
नृत्य करेंगे शुरू
संयम द्वारा
आत्मोद्धार का अद्भुत नजारा

– सपना निर्देश श्रीश्रीमाल
18 बी, स्कीम नं. 71 (इंदौर (म.प्र.)

◆◆◆

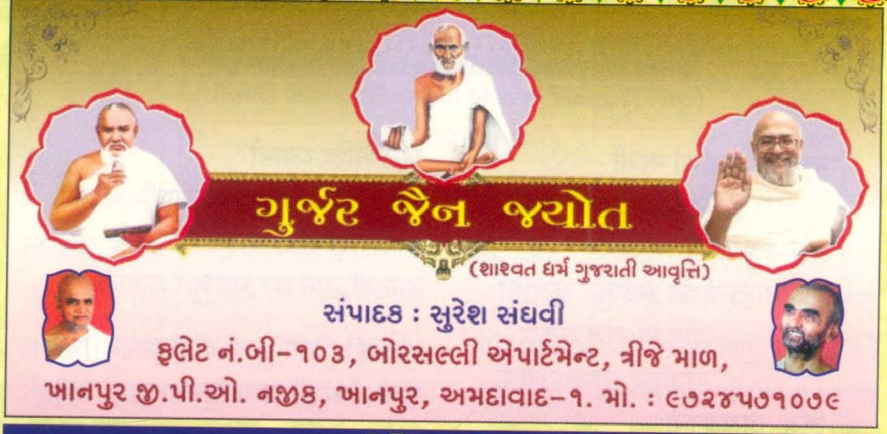

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અભોગી ભટકતો નથી

''ભોગી ભમઇ સંસારે, અભોગી વિપ્પમુચ્ચઇ ।''

(ભોગી સંસારમાં ભટકે છે અને અભોગી મુક્ત થઇ જાય છે.)

જે ઇન્દ્રિયોના વશમાં રહે છે, તે વિષયસામગ્રી ભેગી કરવાના પ્રયત્નોમાં નિરંતર લાગ્યો રહે છે. અનુકૂળ વિષયસામગ્રી મેળવ્યા પછી ક્યારેક એક ઇન્દ્રિયને તૃપ્ત કરે છે તો ક્યારેક બીજી ઇન્દ્રિયને. એમ જોવા જઇએ તો ઇન્દ્રિયો વિષયો ભલે ભોગવે, પણ તેથી તે તૃપ્ત નથી થતી. ઇન્દ્રિયોના માધ્યમથી વિષયો ભોગવીને મન તૃપ્ત થાય છે, અને તે પણ ફક્ત ક્ષણભર માટે !

પરંતુ આશ્ચર્યની વાત તો એ છે કે મનની આ ક્ષણિક તૃપ્તિને માટે જીવ ભોગી બનીને ઘાણીના બળદની જેમ સંસારની ચૌર્યાસી લાખ જીવયોનિમાં ભટકતો રહે છે - જન્મ, જરા અને મૃત્યુના ચક્કરમાં ફસાતો રહે છે. એટલે, મુક્ત તે થાય છે. જે અભોગી હોય છે - ભોગોનો ત્યાગી હોય છે - ભોગોથી નિર્લિપ્ત રહે છે - ભોગોની વાસના નથી રાખતો. વાસના જ સંસારમાં ભટકાવનારી દુર્ભાવના છે. જ્યાં સુધી વિષયો તરફ આસક્તિ રહે છે ત્યાં સુધી તે સંસારમાં ભટકતો રહે છે. અભોગી (ત્યાગી) ભટકતો નથી.

-ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૨૫/૪૧

છેલ્લા એક વરસથી કોરોના મહામારીએ કાળો કેર વરતાવી રહ્યો છે. ત્યારે મંદિરો - દેરાસરોના દ્વારા બંધ જેવા થઇ ગયા છે, તેને અનુલક્ષીને નફરત કી દુનિયા કો છોડકર રાગ પર શ્રી ત્રિલોકજી ભોજકભાઇએ દર્દ ભર્યા અવાજમાં જે ગાયું છે તેના શબ્દો અત્રે પ્રસ્તુત છે...

ઓ દાદા મારા ક્યારે ખુલશે તારો આ દરબાર...
ભક્તો કરે છે પોકાર... ભક્તો કરે છે પોકાર...
ઓ જગના તારણહાર પ્રભુ અરજી લો સ્વીકાર...
ભક્તો કરે છે પોકાર... ભક્તો કરે છે પોકાર...

(૧) શું ભુલ છે અમારી આપી સજા ભારી...૨
તું માફ કર અમને આ બાળને જાણી,
ઓ હૈયાના હાર પ્રભુજી ખોલી દ્વોને દ્વારા...
ભક્તો કરે છે પોકાર... ભક્તો કરે છે પોકાર...

(૨) વિનંતી કરૂં દાદા કહું ભાવના મારી...૨
હવે નયના તલસે છે આપો ઝલક સારી,
ઓ જીવનના આધાર પ્રભુ સુન હૈયાના ઉદ્‌ગાર...
ભક્તો કરે છે પોકાર... ભક્તો કરે છો પોકાર...
ઓ દાદા મારા ક્યારે ખુલશે તારો આ દરબાર...
ભક્તો કરે છે પોકાર... ભક્તો કરે છે પોકાર...

સમાજના બંધુઓને અનુરોધ

સમાજના સમસ્ત બંધુઓને અનુરોધ કરીએ છીએ કે કોવિડ મહામારીના વધી રહેલા કેસના કારણે સમાજ-સરકાર અને જનતા વચ્ચે વર્તમાનમાં એક ભયાનકતાનો માહોલ પેદા થયો છે. ત્યારે માનસિક ધીરજ રાખવાની પરમાવશ્યકતા છે. આપ સહુને નમ્ર વિનંતી છે કે મનને શાંત રાખવું, ગભરાવું નહીં. પરિવારમાં આનંદના વાતાવરણ બને તેવા પ્રસંગો ઉભા કરવા. કામ વિના ઘરમાંથી બહાર જવાનું ટાળો, માસ્ક પહેરવાની આદત પાડી દેવી. જરૂરી દવાઓ લાવી રાખવી. નાની-નાની શારીરિક પરેશાનીઓમાં તપાસ કરવા વ્યાકુળ ન બનો. વાસ્તુ અનુસાર પોતાના ઘમાં NNE જોનને ડાબી સાઇડમાં લવિંગ, કાળા મરી અને ખાંડ - આ ત્રણ વસ્તુની ૫૦ ગ્રામની માત્રામાં પોટલી અથવા પેકેટ મૂકી રાખવું, લાભ થશે. ઠંડા પાણીનો ઉપયોગ ન કરવો. ટીવી અને સમાચાર પત્રોમાં પ્રસારિત ભયાનકતાવાળા સમાચારોને ગંભીરતાથી ન લેવા, બની શકે તો સરકારી ગાઇડ લાઇન સિવાય અન્ય સમાચાર સાંભળવાથી કે વાંચવાથી દૂર રહેવું. અફવાઓથી દુર રહેવું. પરસ્પર એક બીજાને પ્રેમપૂર્વક વાતો કરી હિંમત અને ઉત્સાહ વધારતા રહેવું. બાળકો અને વડીલોને મનોરંજન કરાવતા રહેવું. તેના લીધે ઘરનો માહોલ તનાવમુક્ત અને ખુશખુશાલ રહે. જે થશે તે દેખાઇ જશે. નકામી ચિંતા છોડો.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી સપરિવારના શ્રી પેપરાલ તીર્થે ધમાકેદાર પ્રવેશ

વિરલ વીરભૂમિ થરાદનગરની ધર્મધરાના પનોતાપુત્ર ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, બહુદીક્ષાના દાનેશ્વરી, પ્રતિષ્ઠા શિરોમણી, યુગ પ્રભાવક, લોક સંત, સુવિશાળ ગચ્છાધિપતિ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરિષ્ઠ સુશિષ્ય અને તેઓના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિશ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે ઈતિહાસ સર્જક નવ મુમુક્ષુરત્નો તથા બાર મુમુક્ષુરત્નાઓને આત્મોદ્ધાર સામુહિક દીક્ષાનું દાન આપવા વર્તમાન પરિસ્થિતિને ધ્યાનમાં લઈને સરકારના નિયમોના ચુસ્ત પાલન સાથે શ્રી પેપરાલ તીર્થે ધમાકેદાર પ્રવેશ કર્યો હતો.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી સપરિવારનો તા. ૪-૪-૨૦૨૧ના રોજ પાવન પધરામણી થતાં ભક્તજનોનામાં હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી અને આનંદની અમીવર્ષા વરસી ગઈ હતી.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઈતિહાસમાં શ્રી પેપરાલ તીર્થના આંગણે પ્રથમવાર આત્મોદ્ધાર સામુહિક ૨૧-૨૧ દિક્ષાનો ઐતિહાસિક પ્રસંગ યોજાનાર હોઈ શ્રી પેપરાલ તીર્થને ઈન્દ્રપુરી નગરી જેવો ઓપ અપાઈ દેવાની તડામાર તૈયારીઓ આદરી દેવાઈ હતી. આ આત્મોદ્ધાર-૪માં મોટી સંખ્યામાં દીક્ષાર્થી પરિવારજનો અને સમાજજનો ઉપસ્થિત રહેવાના હોઈ તે અંગેની પુરતી સગવડની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી હતી. પરંતુ દેશભરમાં કોરોના મહામારીનું પ્રમાણ વધી જવાથી સોશ્યલ ડીસ્ટન્સ રાખી સરકારના નિયમોનું ચુસ્તપણે પાલન કરી અલ્પ સંખ્યામાં ઉપસ્થિત દીક્ષાર્થી સામુહિક દિક્ષા પ્રસંગને સંપન્ન કરવા નિર્ણય લેવાયો હતો.

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સન ૨૦૨૧ના વર્ષનું ચાતુર્માસ જાલોર (રાજસ્થાન) ખાતે ગાળશે. જ્યારે ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધાર આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સન ૨૦૨૧ના વર્ષનું ચાતુર્માસ ભાંડવપુર તીર્થ (રાજ.) ખાતે ગાળશે.

શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે આત્મોદ્ધાર-૪ માં જોડાઇ ૨૦ મુમુક્ષુરત્નોએ સામુહિક દીક્ષા અંગિકાર કરી અવિસ્મરણીય ઇતિહાસ કર્યો સ્થાપિત

સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર સુદ - ૧૩ ને રવિવાર તા. ૨૫-૪-૨૦૨૧ના રોજ પરમ પારમેશ્વરી આજ્ઞાને આત્મસાત કરવા અધિરા બનેલા ૨૦ મુમુક્ષુરત્નોએ એક સાથે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિશ્રી નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્‌હસ્તે શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે દીક્ષા અંગિકાર કરી અવિસ્મરણીય ઇતિહાસ સ્થાપિત કર્યો છે. ઉલ્લેખનીય છે કે, શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ૨૦૦ વર્ષના ઇતિહાસમાં તરૂણો - યુવાનો અને વૃદ્ધ મળી કુલ નવ પુરુષવર્ગે આત્મોદ્ધાર દીક્ષા અંગિકાર કરી એક નવો ઇતિહાસ સ્થાપિત કર્યો છે.

સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર સુદ - ૧૩ ને રવિવાર તા. ૨૫-૪-૨૦૨૧ના રોજ વહેલી સવારે સરકારી નિયમોના ચુસ્ત પાલન સાથે શુભ મહુર્તમાં પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ દીક્ષા વિધિની શરૂઆત કરાવી હતી અને ક્રમવાર વીસે દીક્ષાર્થીઓને ઓઘો પ્રદાન કરાયો હતો. મુમુક્ષુરત્નો વીસે ભાઈ-બહેનો ઓઘો મેળવીને ખુશીના માર્યા ઝૂમી ઉઠ્યા હતા અને નાચવા લાગ્યા હતા. હવે પછીનો સમય હતો સંસારી વાઘાને ત્યજવાનો. વીસે દીક્ષાર્થી ભાઈ-બહેનો વસ્ત્રો બદલાવવા ગયા હતા. મુમુક્ષુરત્નોનો સાધુ ભગવંતો દ્વારા અને મુમુક્ષુરત્નાઓનો સાધ્વીજી ભગવંતો દ્વારા કેશલોચ વિધિ સંપન્ન કરાઇ હતી.

દીક્ષા વિધિનો સમય થતાં બે કલાક પહેલાં સોળ શણગાર સજીને ઉભેલા મુમુક્ષુરત્નો અને રત્નાઓએ સાપ જેમ તેમના શરીર ઉપરથી કાંચળી ઉતારે તેમ સોળે શણગાર ત્યજી દઇ દીક્ષા મંડપમાં સંયમ વસ્ત્રોમાં વીસે નૂતન સાધુ-સાધ્વીજી બની આવ્યા ત્યારે જિનશાસનનો જય જયકાર ગુંજી ઉઠ્યો હતો. ત્યારબાદ નામકરણ વિધિ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. તે નામ અત્રે પ્રસ્તુત છે.

	મુમુક્ષુ સંસારીના નામ	નૂતન દિક્ષિત નામ
(૧)	શ્રી વિશ્વકુમાર અશ્વિનભાઇ કોરડીયા	મુનિશ્રી વારિષેણવિજયજી મ.સા.
(૨)	શ્રી અક્ષતકુમાર સમીરભાઇ શેઠ	મુનિશ્રી અધ્યાત્મસેનવિજયજી મ.સા.
(૩)	શ્રી અભિષેક નગીનજી હરણ	મુનિશ્રી અર્હસેનવિજયજી મ.સા.
(૪)	શ્રી અક્ષિતકુમાર રોહિતભાઇ સંઘવી	મુનિશ્રી અરિષ્ટરત્નવિજયજી મ.સા.
(૫)	શ્રી જયંતિલાલ નાથાલાલ સંઘવી	મુનિશ્રી જયસેનવિજયજી મ.સા.
(૬)	શ્રી મૌનકુમાર પિન્ટુભાઇ કોરડીયા	મુનિશ્રી મેઘવિજયજી મ.સા.
(૭)	શ્રી તીર્થકુમાર અલ્પેશભાઇ મોરખીયા	મુનિશ્રી પુંડરિકવિજયજી મ.સા.

(૮) શ્રી સંયમકુમાર પરેશભાઇ	મુનિશ્રી સમર્પણવિજયજી મ.સા.
(૯) શ્રી શ્રેયકુમાર પ્રણેશભાઇ પરીખ	મુનિશ્રી સુજશવિજયજી મ.સા.
(૧૦) સ્તુતિકુમારી હસમુખભાઇ કોરડીયા	સાધ્વીજીશ્રી તહત્તિપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૧) માનસીકુમારી ભરતભાઇ વોહેરા	સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષાર્થપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
(૧૨) વિરતીકુમારી ચંદ્રકાન્તભાઇ વોહેરા	સાધ્વીજીશ્રી વર્ધમાનનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૩) આયુષિકુમારી જયેશભાઇ ધરૂ	સાધ્વીજીશ્રી અનુયોગનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૪) વિરતીકુમારી પ્રણેશભાઇ પરીખ	સાધ્વીજીશ્રી જશનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૫) શ્રુતિકુમારી વિજયભાઇ શેઠ	સાધ્વીજીશ્રી શ્રમણનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૬) તનીષાકુમારી ભરતભાઇ શેઠ	સાધ્વીજીશ્રી ત્યાગનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૭) હીરકુમારી નીતિનજી શેઠ	સાધ્વીજીશ્રી હીરનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૮) આશ્વિકુમારી સુનિલજી વોહેરા	સાધ્વીજીશ્રી આર્હત્યનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૧૯) પ્રિયાંશીકુમારી અતુલભાઇ મોરખીયા	સાધ્વીજીશ્રી પ્રાતિહાર્યનિધિશ્રીજી મ.સા.
(૨૦) આન્સીકુમારી મનીષભાઇ અદાણી	સાધ્વીજીશ્રી આચારાંગનિધિશ્રીજી મ.સા.

દીક્ષામાં વિલંબ ન કરાય

આ અવસર્પિણીના ત્રીજા તીર્થંકર શ્રી સંભાવનાથ સ્વામી ભગવાનના કાળની આ ઘટના છે.

તે સમયના કેવળી ભગવંતના મુખકમળ દ્વારા અપાઈ રહેલ દેશનાથી પ્રેરાઈ એક નાનો બાળક સંસાર વિરક્ત બની જતાં દીક્ષા લેવા અધિરો બની જઈ તેના પિતાને દીક્ષા અપાવવા વિનંતી કરી ત્યારે તેના પિતાએ મહોત્સવ કરી દીક્ષા અપાવીશ તેમ દીકરાને કહ્યું. પણ તે બાળકે જીદ પકડી મારે તો હમણાં જ દીક્ષા અંગીકાર કરવી છે. તે જાણી તેના પિતાએ કેવળી ભગવંતને તેમના દીકરાની ઉત્સુક્તા અને વિના વિલંબે દીક્ષા લેવા વિશેની વાત જણાવી. કેવળી ભગવંતે કહ્યું, વિલંબ ન કરો... ભલે અત્યારે જ દીક્ષા અંગીકાર કરી લે. પિતા સંમતિ આપતાં દીક્ષા વિધિનો પ્રારંભ કરાયો અને ઓઘો પ્રદાન કરાયો ઓઘો લઈ બાળક નાચવા લાગ્યો અને તે જ વખતે અચાનક પડી ગયો અને ત્યાં જ તેનું પ્રાણ પંખેરુ ઉડી ગયું. તેના લીધે તેના પિતાને આઘાત લાગ્યો. કેવળી ભગવંતે આશ્વાસન આપતાં તેને પિતાને કહ્યું કે, આ જ કારણે મહોત્સવ કરવા જેટલો વિલંબ કરવાની ના કહી હતી. તમારો પુત્ર જે આત્મા એનું કલ્યાણ સાધી ગયો છે, આ વખતે આકાશમાંથી દેવાત્મા ઉતરી આવ્યા અને કેવળી ભગવંતને વંદન કર્યા. કેવળી ભગવંતે પિતાને કહ્યું, આજે તમારા સુપુત્રનો આત્મા હવે દેવાત્મા બની ગયો છે. દેવાત્મા પુત્રએ તેમને શોક કરવાની ના પાડી.

માનવતા-વૈયાવચ્ચ ભક્તિ અને જીવદયા દ્વારા જિનશાસનની મહેંક પ્રસરાવતી અમદાવાદ પરિષદ

મનુષ્ય સામે કેટલાય ધ્યેય હોય છે એ ધ્યેયની પ્રાપ્તિ માટે તે જીવનભર ઝઝૂમતો રહે છે. એ એનો સંઘર્ષ બની જાય છે. આ સંસાર એની સફળતા - નિષ્ફળતા નક્કી કરે છે. કેટલાકને ભાગે સફળતા હોય છે, તો કેટલાકને ભાગ્યે નિષ્ફળતા આજ જિંદગીની રફતાર છે.

માણસ સુખ-દુઃખની પરવા કર્યા વગર જાત-જગત-જીવન અને માનવતાની ફરજ પુરી કરવા માટે હૃદયની વિશાળતા હોવી જોઈએ. જે આ ફરજો પુરી કરવામાં નિષ્ફળ જાય છે તે સાચા અર્થમાં માનવ જીવનથી વંચિત રહી જાય છે. જે આ ફરજો પુરી કરે છે તેની પ્રસિદ્ધિ ચોમેર ફેલાઈ જાય છે.

ઘણા માણસોના જીવન જ એવા હોય છે, જેમના કાર્યો માટે વિશ્વ પણ નાનુ પડતું હોય છે. આવા માણસોની ધગસ નામનાથી દુર રહી કશુંક કરવાની ઝંખના એમને વિશ્વના બજારમાં માનવતાના પૂજારી બનાવે છે. જેમને કોઈના દર્દનો સીસકારો સંભળાય છે ને હૃદય વલોપાત કરવા લાગે છે. અત્યારે વિશ્વભરમાં કોરોના મહામારીએ હાહાકાર મચાવી દીધો છે ત્યારે અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદનું સફળ સુકાન કરી ચુકેલ અને વર્તમાનમાં પણ પરિષદ અમદાવાદને માર્ગદર્શન આપી માનવતા, સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ અને જીવદયાની નેત્ર દિપક કામગીરીને ઉત્સાહીત કરતા માનવતાના પુજારી સમા સમાજ પ્રેમી શ્રી ચંપકલાલ બબલદાસ વોરાના નેતૃત્વ હેઠળ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદ દ્વારા કોવિડ સેવાનું આયોજન કરાયેલ છે.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા અમદાવાદની ત્રણેય પાંખો દ્વારા થઈ રહેલ નેત્રદિપક કામગીરીની ચારેકોર અનુમોદના થઈ રહી છે અને સમસ્ત સમાજે તે કામગીરીને અભિનંદી રહ્યો છે. માનવતાની કામગીરી શ્રી ચંપકલાલ વોરા તથા તેમના સહયોગી કલ્યાણ મિત્રો, વૈયાવચ્ચની કામગીરી શ્રી ભરતભાઈ વોરા (લાડુ) તથા તેમના સહયોગી કલ્યાણ મિત્રો, જીવદયાની કામગીરી શ્રી હાર્દિકભાઈ રસિકલાલ તથા તેમના કલ્યાણ મિત્રો કરી રહ્યા છે. તેમની જેટલી અનુમોદના કરીએ તેટલી ઓછી છે.

અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા અમદાવાદ દ્વારા અમદાવાદમાં વસતા થરાદ જૈન સમાજના પરિવારો માટે વિશ્વભરમાં ફેલાયેલ

વર્તમાન કોરોના મહામારીથી અસરગ્રસ્ત વ્યક્તિ કે પરિવારની સેવા માટે નીચે મુજબ આયોજન કરાયેલછે.

થરાદ જૈન સમાજના જે પણ કોરોના દર્દીને ઓક્સિજનની જરુર હોય તેઓને પરિષદ દ્વારા નીચેના નિયમોને આધિન ઓક્સિજન મશીન આપવામાં આવશે.

(૧) ઓક્સિજન મશીનની જેમને જરુરત હોય તેમને પહેલા પરિષદના વોટ્સઅપ ૮૨૦૦૫ ૦૨૫૭૨ (કોલ વાગશે નહીં) ઉપર દર્દીનું નામ, કોન્ટેક્ટ નંબર, દર્દીનું આધાર કાર્ડ, કોવિડનો રીપોર્ટ મોકલી રજીસ્ટર કરાવવાનું રહેશે. રજીસ્ટરના ક્રમ મુજબ મશીન આપવામાં આવશે.

(૨) મશીન નૂતન ગુરૂ મંદિર મીઠાખળીથી લેવાનું તેમજ ત્યાં જ પરત મોકલવાનું રહેશે.

(૩) મશીન લેવા કે મુકવા માટે કોરોનાના દર્દી પરિવાર સાથે રહેતી કોઈપણ વ્યક્તિ આવી શકશે નહીં.

(૪) મશીન તાત્કાલિક સારવાર મળે તે હેતુથી જ આપવામાં આવશે. તેમ છતાં ડોક્ટરની સલાહ મુજબ જ આગળ વધવું. મશીન મર્યાદિત સંખ્યામાં હોવાથી જેમ બને તેમ પરત કરવું. જેથી બીજાને ઉપયોગ થઈ શકે.

(૫) મશીન માટે ૩।. ૫૦૦૦ (રીફંડેબલ) ડીપોઝીટ ભરવાની રહેશે. પ્રથમ ત્રણ દિવસ નિઃશુલ્ક, ત્યારબાદ જરુર હોય તો દિવસનું ૩।. ૨૦૦ પ્રમાણે ભાડું આપવાનું રહેશે. વધુમાં વધુ પાંચ દિવસે મશીન પરત કરવાનું રહેશે,તેમજ મશીન સાચવવાની જવાબદારી પોતાની રહેશે.

(૬) મશીન લેવા આવનાર વ્યક્તિએ ઓળખ કાર્ડની ઝેરોક્ષ સાથે લઈને આવવું.

(૭) થરાદ જૈન સમાજના કોરોનાગ્રસ્ત દર્દીના જરુરિયાતવાળા પરિવારને જો હોસ્પિટલમાં દાખલ થવું પડે તો દર્દી દીઠ ૩।. ૨૧૦૦૦ની સહાય આપવામાં આવશે.

(૮) કોરોના દર્દીના ઑક્સિજન માપવા ઓક્સોમીટરની જરુર હોય તો પરિષદ તરફથી નિઃશુલ્ક આપવામાં આવશે તે માટે ૩।. ૪૦૦ ડીપોઝીટ આપવાની રહેશે. આ સિવાય અનિવાર્ય સંજોગોમાં પરિષદ આપની પડખે છે અને રહેશે.

સંપર્ક : શ્રી ચંપકભાઈ બી. વોરા. મો. ૯૩૭૬૧ ૮૬૪૯૭, શ્રી પંકજભાઈ વીરવાડીયા મો. ૯૩૭૫૦ ૭૭૪૨૫, શ્રી સંજયભાઈ અદાણી (૯૩૨૮૮ ૮૨૦૧૦ શ્રી ભરતભાઈ (અશ્વમેઘ) મો. ૯૩૨૭૦ ૦૭૦૯૩ શ્રી પ્રકાશભાઈ (ગરિમા) ૯૩૭૪૭ ૪૦૩૩૩, ઉપરોક્ત સેવા તા. ૩૧-૫-૨૦૨૧ સુધી ચાલુ રહેશે. ત્યારબાદ ફરીથી નિર્ણય લેવાશે.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદ

કોવિડ સેવાના ઓક્સિજન માટેના મશીનના

તા. ૨૨-૪-૨૦૨૧ની સાંજ સુધીના લાભાર્થી પરિવારો

૫ મશીન વોહેરા કંચનબેન રસિકલાલ કાળીદાસ (આર.કે.) પરિવાર, ૨ મશીન અદાણી ભરતકુમાર શાંતિલાલ નાગરદાસ પરિવાર, ૧ મશીન અને ૩।. ૫૧૦૦૦/- આસોપાલવ પરિવાર, ૧ મશીન અને ૩।. ૨૧૦૦૦/- વીરવાડીયા શાંતાબેન બાબુલાલ વીરચંદ (વિમકો) પરિવાર, ૧ મશીન વોહેરા બબલદાસ પોપટલાલ (બી. પ્રકાશ) પરિવાર, ૩।. ૫૧૦૦૦/- દોશી મધુબેન શાંતિલાલ કાળીદાસ (અશ્વમેધ) પરિવાર, ૩।. ૨૧૦૦૦/- દેસાઈ છોટાલાલ અમુલખભાઈ પરિવાર, ૩।. ૨૧૦૦૦/- સ્વ. જયેશકુમાર રસિકલાલ ધરૂના આત્મશ્રેયાર્થે ધરૂ રસિકલાલ ભુદરમલ પરિવાર, ૩।. ૫૦૦૦૦/- દેસાઈ દિનશભાઈ, હાલચંદભાઈ પરિવાર, ૩।. ૩૧૦૦૦/- લાઈવ ટુ ગ્રુપ. ૧ મશીનની કિંમત અત્યારે વધારે છે. પણ દાતાઓએ મશીન દીઠ ૩।. ૫૦૦૦૦/- આપવાના રહેશે.

શ્રી ભાનુમતિ પ્રેમધામનો શુભારંભ

એરકન્ડીશન, ફ્રીજ, પંખા, ઈલેક્ટ્રીક રોશનીના ઝગમગાટ વચ્ચે અસંખ્ય સૂક્ષ્મ જીવો મૃત્યુને ભેટે છે. આવા અસંખ્ય સૂક્ષ્મ જીવોને સંપૂર્ણ અભયદાન આપતા હોય અને કઠીનમાં કઠીન સંયમ જીવન વ્યતિત કરતા હોય તો તે છે શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો. આજના આ વિષમકાળમાં ભગવાન મહાવીરના પંથે ચાલતા અને ભરત ક્ષેત્રમાં વિચરી રહેલ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોને ભગવાન કહીએ તો પણ અતિશયોક્તિ નહીં ગણાય. અત્યારે કોરોના મહામારીએ હાહાકાર મચાવી કેટલાયના જીવ લઈ લીધા છે. જેમાં કેટલાય સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો પણ તેનો ભોગ બન્યા છે. કેટલાય સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો સારવાર મેળવી રહ્યા છે. કોરોના મહામારીના આ કપરા સમયમાં કોઈપણ સમુદાયના સાધ્વીજી ભગવંતને કોરોના રોગ લાગુ પડ્યો હોય તેવા પૂજ્યશ્રીઓની વૈયાવચ્ચ માટે કોવિડ કેર સેન્ટરની શરુઆત કરવામાં આવેલ છે.

પ.પૂ.પન્યાસપ્રવર શ્રીવજ્રસેનવિજયજી મ.સા. તથા પ.પૂ. આચાર્ય ભગવંત શ્રી હેમપ્રભસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણા તથા આશિર્વાદથી આકાર પામેલ નૂતન વૈયાવચ્ચ તીર્થ એટલે શ્રી મૈત્રીવાત્સલ્ય ટ્રસ્ટ સંચાલિત શ્રી ભાનુમતિ પ્રેમધાન, જૈનનગર, પાલડી અમદાવાદ ખાતેકોઈપણ સમુદાયના જે

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોને કોરોના પોઝિટિવ હોય તેવા પૂજ્યશ્રીઓની વૈયાવચ્ચ માટે કોવિડ કેર સેન્ટરની ધારાસભ્યશ્રી રાકેશભાઈ શાહના વરદ્ હસ્તે તા. ૨૨-૪-૨૦૨૧ના રોજથી શુભ શરુઆત કરાઈ હતી. આ અંગે નીચેના મહાનુભાવોનો સંપર્ક કરી શકાશે. શ્રી લલિતભાઈ ધામી (તપોવન) મો. ૭૦૪૩૨ ૫૦૨૦૦, શ્રી રાજેશભાઈ સાલેચા (શ્રી મૈત્રી વાત્સલ્ય ટ્રસ્ટ) મો. ૯૪૨૪૦ ૧૧૪૬૯, શ્રી ભરતભાઈ (લાડુ) થરાદ મો. ૯૯૯૮૧ ૫૩૦૪૯, શ્રી કૌશલભાઈ (નમોનમઃ શાશ્વત પરિવાર) મો. ૯૪૨૬૩ ૬૪૪૫૧

કોઈપણ સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ ભક્તિ દ્વારા જિન શાસનની મહેંક પ્રસરાવતા કરૂણામય પ્રતિભાશાળી વ્યક્તિત્વ ધરાવતા થરાદ નિવાસી શ્રી ભરતભાઈ લાડુને આ સંસ્થામાં વૈયાવચ્ચ ભક્તિ કરવાની તક આપી છે જે અનુમોદનીય છે. જૈનોના ચારેય ફીરકાઓના અને કોઈપણ સમુદાયના સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ ભક્તિ કરી પૂજ્યશ્રીઓના આશિષ મેળવી અનંત પુણ્ય ઉપાર્જન કરી રહેલ શ્રી ભરતભાઈ લાડુ ખરા અર્થમાં થરાદ જૈન સમાજને અદકેરૂં ગૌરવ બક્ષી રહ્યા છે.

સુરત-અડાજણ ખાતે જૈન સંસ્થાઓ દ્વારા

ઓક્સિજન સહિતની સુવિધાઓવાળું આઈસોલેશન સેન્ટરનો શુભારંભ

શ્રી સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવાર, જૈન શ્વે. મૂ.પૂ. યુવક મહાસંઘ દ્વારા પાલિકાના સહયોગથી ઓક્સિજન યુક્ત તમામ સુવિધા સાથે ૫૦ બેડનું અડાજણ ગંગેશ્વર મહાદેવ મંદિર મનપા ચિલ્ડ્રન કોમ્યુનિટી હોલ સુરત ખાતે રાજેન્દ્ર-જયંત કોવિડ આઈસોલેશન સેન્ટરનો તા. ૨૨-૪-૨૦૨૧ના રોજ શુભારંભ કરાયો છે. આ સમયે ભાજપ પ્રદેશ અધ્યક્ષ શ્રી સી.આર.પાટીલ, સાંસદ શ્રીમતી દર્શનાબેન જરદોશ, ધારાસભ્ય પૂર્ણેશ મોદી, મનપાના સ્થાયી સમિતિના અધ્યક્ષશ્રી પરેશભાઈ પટેલ, શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (થરાદવાળા)ના અધ્યક્ષશ્રી નિતિનભાઈ અદાણી, ટ્રસ્ટી મંડળ તથા સમાજના અગ્રણીઓ અને પરિષદ પરિવારના સભ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

આ પ્રસંગે મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા.એ મંગલ આશિષ પાઠવ્યા હતા અને માનવતાસભર આ સુંદર આયોજન બદલ આયોજકોની અનુમોદના કરી હતી.

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા. – પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.ના સંગે, મુંબઈના યુવાનોની આધ્યાત્મિક ધુળેટી

ભવમાં ભટકાવનારી ધુળેટી બહુ રમ્યા પણ જો આધ્યાત્મિક ધુળેટી રમીએ તો કેમ રહે ? આ વિચાર મુંબઈ સ્થિત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના (થરાદવાસી) યુવાનોને આવ્યો. પણ રમવી ક્યાં ? વિદ્યાનગરી પાટણનગરનો વિચાર આવ્યો. પાટણનગર ખાતે બિરાજમાન પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા. – મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા અધ્યયન કરી રહ્યા છે. માત્ર અધ્યયન જ નહીં પણ ઉચ્ચ ચારિત્ર પાલન સાથે સ્વાધ્યાય કરી હ્યા છે. એટલું ઉત્કૃષ્ટ, નિર્મળ અને નિરતિચાર સંયમ જીવન વ્યતિત કરી રહ્યા છે કે પુરા પાટણનગરની અઢારે આલમના હૈયામાં વસી રહ્યા છે. અનેક સંઘો ચાતક નજરે પ્રતિક્ષા કરી રહ્યા છે કે આ મહાત્માઓ અમારા સંઘમાં ક્યારે પધારે ? મુંબઈના યુવાનોએ નિર્ણય કર્યો કે આ મહાત્માઓ આપણા સંઘમાં પધારે ત્યારે ખરા પણ અત્યારે આપણે તો જઈ શકીએ ને ? નદી આપણી પાસે આવે તેની રાહ જોવા કરતાં તરસ્યાએ નદી પાસે જવું ઉચિત ગણાયને ?

મુંબઈના યુવાનોનો આ નિર્ણય વાસ્તવિક બન્યો. હોળી-ધુળેટીની રજાઓ દિવસો લીધા અને સોનામાં સુગંધ સ્વરુપ ફાગણ ચોમાસી ચૌદશનું તારણહાર પર્વ ? દર ચૌદશના દિવસે પૌષધ કરનાર શ્રી આભુ સંઘવીની થરાદ નગરીના શ્રાવકો તેનો સંસ્કાર વારસો ન હોય તેવું બને ખરા ? ૬૫ જેટલા શ્રાવકોએ પૌષધ કરવાનું નક્કી કર્યું પણ કોરોના મહામારીની વર્તમાન પરિસ્થિતિને જોઈ મર્યાદિત સંખ્યામાં ઉત્સાહભેર મુંબઈના યુવાનો પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.ના સંઘે આધ્યાત્મિક ધુળેટી રમવા પાટણનગરે પહોંચી ગયા. પૂજ્યશ્રીઓની નિશ્રામાં આધ્યાત્મિક ધુળેટી રૂપે પાટણનગર પંચાસરા દેરાસર પાસે સ્થિત ત્રિસ્તુતિક જૈન આશ્રયમાં થરાદ નિવાસી મુંબઈ સ્થિત સવિતાબેન રમણલાલ દોશી પરિવાર દ્વારા આયોજિત બે દિવસીય ધર્મ શ્રવણ (વાચના)નો કાર્યક્રમ તા. ૨૭-૨૮ માર્ચના રોજ સંપન્ન થયો હતો.

આ કાર્યક્રમમાં મુંબઈના યુવાનો સાથે અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, રાષ્ટ્રીય શિક્ષા મંત્રી

શ્રી ભરતભાઈ વોરા, અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર તરૂણ પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી રાહુલભાઈ દેસાઈ પણ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા અને આરાધના કરી હતી.

પ્રથમ દિવસે યુવાન શ્રાવકોએ પૌષધમાં રહી એકાસણાની આરાધના, ચોમાસી દેવવંદન સાથે વાચનાનું શ્રણ કર્યું હતું. બીજા દિવસે સવારે પાટણ નગરના અનેક જિનાલયોના દર્શન હેતુ ચૈત્ય પરીપાટી અને પંચાસરા જિનાલયમાં શક્રસ્તવના અભિષેક અને ભવ્ય પુષ્પ પૂજા કરી હતી. ત્યારબાદ વાચનાનું શ્રવણ કર્યું હતું. બંને દિવસ ઉપસ્થિત યુવાન શ્રાવકોએ એકાસણા વિગેરે તપ અને બંને ટાઈમ પ્રતિક્રમણ સહિત શ્રાવક જીવનના દૈનિક કર્તવ્યો કર્યા હતા. બંને દિવસ યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.એ અલગ-અલગ વિષયો પર (વાચના) પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. તથા પંડિતવર્યશ્રી ચંદ્રકાંતભાઈ સંઘવીએ પણ અનેક ધાર્મિક વિષયો પર સમજણ આપી હતી. કાર્યક્રમની પૂર્ણાહૂતિ સમયે ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ અને આધ્યાત્મિક ધુળેટી રૂપે વાચનામાં પધારેલ મુંબઈ સ્થિત થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના યુવાન શ્રાવકો દ્વારા ધર્મશ્રવણ વાચનામાં પધારેલ આયોજક પરિવારના ચિંતનભાઈ દોશીની અનુમોદન કરાઈ હતી.

સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના દર્શન વંદન દુરથી કરો

અત્યારે વિશ્વમાં ફેલાયેલ વૈશ્વિક કોરોના મહામારીના કારણે શ્રી સંઘની અમુલ્ય સંપત્તિ એવા સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો પાસે વૈયાવચ્ચ ભક્તિ કરવા સિવાય કારણ વગર ઉપાશ્રયમાં ન જવા માટે વિનંતી અને જવું પડે તો તેમનાથી ૧.૦ ફૂટ દુર રહી માસ્ક (મુખ કેશ)થી નાક સુધીનો મોઢું ઢાંકીને સેનેટરાઈઝનો ઉપયોગ કરી દર્શન-વંદન કરવા જવા વિનંતી.

લિ. શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈ (રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ), શ્રી શશીભાઈ સુવાસ, શ્રી ભરતભાઈ લાડુ (પરિષદ અધ્યક્ષ, અમદાવાદ), શ્રી બીપીનભાઈ વોરા.

દરેક સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ચરણોમાં કોટી કોટી વંદના અને સકળ સંઘના તપસ્વી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓની અનુમોદના

વર્તમાન સમયમાં કોરોના મહામારીએ વિકરાળ સ્વરૂપ ધારણ કર્યું છે. આ મહામારીને અટકાવવામાં અને દરેક ધર્મીજનોને શાતા બક્ષી શકે તેવી શક્તિ હોય તો તે દરેક શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોમાં રહેલી છે, તેમજ આયંબિલ, ઉપવાસ, વરસીતપ વિગેરે તપશ્ચર્યાના તપસ્વીઓના પ્રભાવે સકળ સંઘને રાહત, હૂંફ અને શાતા મળી શકે છે. દરેક સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ચરણોમાં વંદન અને તપસ્વીરત્નોની અનુમોદના સાથે વિનંતી કરીએ છીએ કે, આપ શાતામાં રહી સંઘ રક્ષા માટે આશિર્વાદની વર્ષા વર્ષા વરસાવો તેવી પૂર્ણ શ્રદ્ધા છે.

કોરડીયા પરિવાર દ્વારા ડીસાનગરે ત્રિદિવસીય મહોત્સવ સંપન્ન

ગુરુ જન્મભૂમિ પેપરાલનગરે આત્મોદ્ધાર-૪માં જોડાયેલા મૂળ વતન નારોલી (થરાદ) હાલ ડીસા સ્થિત કોરડીયા ડાહ્યાલાલ રામચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા પરિવારના મુમુક્ષુરત્ન ચિ. વિશ્વ, ચિ. મૌન અને ચિ. સ્તુતિબેનના દીક્ષા ધર્મ અંગીકારના ઉપક્રમે કર્મભૂમિ ડીસાનગરે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાની પાવન નિશ્રામાં ફાગણ સુદ - ૬-૭-૭ ત્રણ દિવસનો પ્રભુભક્તિ મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો. પૂજ્યશ્રીનો નગર પ્રવેશ, પ્રવચન, પૂજા, પ્રતિક્રમણ, મહેંદી રસમ, વિદાય સમારોહ જેવા અનેક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. પૂજ્યશ્રીએ ''અમૃત વેલની સઝ્ઝાય'' પર સતત પ્રવચન ફરમાવી શ્રોતાજનોને પ્રભુવાણીનું રસપાન કરાવેલ હતું.

- હસમુખભાઈ વેદલીયા

વીણી વીણીને એકઠાં કરેલ પ્રેરણાદાયક સુવાકયો

* અમીરના ઘર ઉપર બેઠેલો કાગડો સહુને મોર લાગે છે, ગરીબનો ભૂખ્યો બાળક પણ ચોર લાગે છે.
* માણસની માણસાઈની વાત થતી હોય તો સહુ ખામોશ રહે છે. ચર્ચા જો બુરાઈની થતી હોય તો બોબડો પણ બોલતો થઈ જાય છે.
* કાયા હજી સાજી છે, હાથમાં હજી બાજી છે ત્યાં સુધી ધર્મ કરવાની તક તાજી છે.
* પશ્ચિમ તરફ ઢળતા રહેશો તો છેવટે આથમવાનો વારો આવશે કેમ કે, સૂર્ય હંમેશા પશ્ચિમમાં જ આથમે છે.
* કુળદીપ ન બની શકો કદાચ તોય કુલાંગાર તો ન જ બનાય.
* બેંકની પાસબુકમાં રૂપિયો કાગળિયું થઈને પડ્યો રહે એના કરતાં કોકના જીવતરમાં દીવો બને એમાં જ એની સાર્થકતા છે.
* પહેલાં લોકો જુઠું બોલવાથી ડરતા હતા આજે સત્ય બોલવાથી ડરે છે.
* આજે મા 'મમ્મી' બની ગઈ છે અને પિતા 'ડેડ' થઈ ગયા છે, પછી બાળકોને શિક્ષણ અને સંસ્કાર કોણ આપે ?
* સળગતો દીવો જ બીજા દીવાને સળગાવી શકે છે, હોલવાયેલો દીવો તો માત્ર અંધકાર ફેલાવે.

આભાર : હસમુખભાઈ સી. વ્યાસ

સિદ્ધગિરિ બન્યું મોક્ષધામ

ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ સર્વ દુઃખોમાંથી મુક્તિ અપાવનાર ઉત્તમ માર્ગ જગતને દર્શાવ્યો. માનવી માટે એ સર્વોત્તમ મોક્ષમાર્ગ છે. શ્રી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં ભગવાન મહાવીરનો અંતિમ ઉપદેશમાં મોક્ષમાર્ગની પ્રાપ્તિ માટે માનવીના અધ્યાત્મ પુરુષાર્થનો આલેખ આપ્યો છે. પવિત્ર શ્રી શત્રુંજય તીર્થની યાત્રા કરીએ ત્યારે પ્રત્યેક યાત્રાળુના મનમાં મોક્ષની ભાવના ગૂંજતી હોય છે.

આ પવિત્ર ગિરિરાજ પર અનંતા આત્માઓ મોક્ષે ગયા છે. વર્તમાન ચોવીસીના શ્રી નેમિનાથ ભગવાન સિવાયના ૨૩ તીર્થંકર ભગવાનો આ ભૂમિ પર વિચર્યા છે. શ્રી અજિતનાથ ભગવાન તથા શ્રી શાંતિનાથ ભગવાને ચાતુર્માસ કર્યા છે.

આવું મોક્ષપદ પ્રાપ્ત કરનાર મુનિરાજો અને વ્યક્તિઓની કેટલીક વિગતો મળે છે, તે જોઈએ.

શ્રી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં ભગવાન મહાવીરનો અંતિમ ઉપદેશ પ્રાપ્ત થાય છે. આ અંતિમ ઉપદેશમાં મોક્ષમાર્ગની પ્રાપ્તિ માટે માનવીના અધ્યાત્મ પુરુષાર્થનો આલેખ આપ્યો છે. પવિત્ર શ્રી શત્રુંજય તીર્થની યાત્રા કરીએ ત્યારે પ્રત્યેક યાત્રાળુના મનમાં મોક્ષની ભાવના ગૂંજતી હોય છે.

૧. કારતક સુદ ૧૫ : દ્રાવિડ તથા વારિખ્ખિલ્લ અનશન કરી, ૧૦ ક્રોડ મુનિ સાથે મોક્ષે ગયા.

૨. ફાગણ સુદ ૧૦) નમિ-વિનમિ વિદ્યાધર બે ક્રોડ મુનિ સાથે મોક્ષે ગયા.

૩. ફાગણ સુદ ૧૩ : શાંબપ્રદ્યુમ્નકુમાર ૮ ।। ક્રોડ મુનિ સાથે સદ્‌ભદ્ર નામના શિખર પર મોક્ષે ગયા.

૪. ચૈત્ર સુદ ૧૫ : શ્રી પુંડરિક સ્વામી પાંચ ક્રોડ મુનિ સાથે મોક્ષે ગયા.

૫. ચૈત્ર વદ ૧૪ : નમિ વિદ્યાધરની ચર્ચા વગેરે ૬૪ પુત્રીઓ સાથે મોક્ષે ગયા.

૬. આસો સુદ ૧૫ : પાંચ પાંડવો ૨૦ ક્રોડ મુનિઓ સાથે મોક્ષે ગયા.

આ સિવાય ભરત ચક્રવર્તીની પાટે આવેલા અસંખ્ય રાજાઓ આ ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા છે.

(૧) નારદજી ૯૧ લાખ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૨) રામ-ભરત ૩ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૩) બાહુબલિના પુત્ર સોમયશા, ૧૩ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૪) ભરત ૧ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૫) વાસુદેવની પત્ની ૩૫ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૬) શાંતિનાથ પ્રભુના ચોમાસામાં ૧૫૨૭૭૭ સાધુ ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૭) સાગર મુનિ ૧ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૮) ભરત મુનિ ૫ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૯) આદિનાથ પ્રભુના ઉપદેશથી અજિતસેન મુનિ ૧૭ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૦) શાંતિનાથ પ્રભુના પરિવારના ૧૦ હજાર સાધુઓ ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૧) શ્રી સારમુનિ ૧ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૨) પ્રદ્યુમ્નની પ્રિયા વૈદર્ભી ૪૪ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૩) ભરત ચક્રવર્તીના પુત્ર આદિત્યશા ૧ લાખ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૪) બાહુબલિના પુત્રો ૧૦૦૮ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૫) દમિતારિ મુનિ ૧૪ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૬) અતીત ચોવીશીના ૨૪માં તીર્થંકર શ્રી સંપ્રતિજિનના ગણધર થાવચ્ચાના ૧ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૭) શુકપરિવ્રાજક ૧ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૮) થાવચ્ચાપુત્ર ૧ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૧૯) કાલિક ૧ હજાર સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૨૦) કદંબ ગણધર ૧ ક્રોડ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૨૧) સુભદ્રમુનિ ૭૦૦ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

(૨૨) શૈલકાચાર્ય ૫૦૦ સાથે ગિરિરાજ પર મોક્ષે ગયા.

આ સિવાય ભરતના પુત્ર બ્રહ્મર્ષિ ચાર પુત્ર સાથે, શાંતનુ રાજા ચંદ્રશેખર રાજા, શ્રી ઋષભસેન જિન, દેવકીના છ પુત્રો, જાલિમયાલિ ઉવયાલિ, સુવ્રત શેઠ, મંડક મુનિ, આણંદ ઋષિ, સાત નારદ, અંધકવૃષ્ણિ તથા ધારણી તેમજ તેના ૧૮ કુમારો વગેરે અનંત આત્માઓ આ ગિરિરાજ પર મુક્તિપદને પામ્યા છે.

શ્રી શત્રુંજ્ય મહાતીર્થના ૧૦૮ નામ

શ્રી શત્રુંજય મહાતીર્થ વિશે જુદા જુદા ગ્રંથો અને પૂજાઓમાં એના જુદાં જુદાં નામો મળે છે. ગિરિરાજ પર જે જગા ઉંચી હોય તેને શિખર અથવા કૂટ કહેવાય છે. શ્રી શત્રુંજ્ય મહાતીર્થ પર ૧૦૮ કૂટ હતી અને તેથી આજે ૧૦૮ ખમાસણાં વડે તેની વંદના કરવામાં આવે છે. વળી એની ૧૦૮ યાત્રાનો મહિમા છે. જુદા જુદા ગ્રંથોમાં અને પૂજાઓમાં શ્રી શત્રુંજ્ય મહાતીર્થની જુદી જુદી ટૂંકોને ઉદ્દેશીને નામો પ્રાપ્ત થયા છે. સુધર્મા ગણધરે રચેલા મહાકલ્પમાં શ્રી શત્રુંજ્ય મહાતીર્થના ૧૦૮ નામો આ પ્રમાણે

પ્રાપ્ત થાય છે. ભાવકોને આમાં જરુર રસ પડશે.

(૧) શ્રી શત્રુંજયગિરિ, (૨) બાહુબલિ (૩) મરુદેવી (૪) પુંડરીકગિરિ (૫) રેવતગિરિ (૬) વિમલાચલ (૭) સિદ્ધરાજ (૮) ભગીરથ (૯) સિદ્ધક્ષેત્ર (૧૦) સહસ્ત્રકમલ (૧૧) મુક્તિનિલય (૧૨) શ્રી સિદ્ધાંચલ (૧૩) શતકુટ (૧૪) ઢંકગિરિ (૧૫) કદંબગિરિ (૧૬) કોડીનિવાસ (૧૭) લોહિતગિરિ (૧૮) તાલધ્વજગિરિ (૧૯) પુણ્યરાશિ (૨૦) મહાબલગિરિ (૨૧) દૃઢશક્તિ (૨૨) શતપમ (૨૩) વિજયાનંદ (૨૪) ભદ્રંકર (૨૫) મહાપીઠ (૨૬) સુરિગિરિ (૨૭) મહાગિરિ (૨૮) મહાનંદ (૨૯) કર્મસૂદન (૩૦) કૈલાસ (૩૧) પુષ્પદંત (૩૨) જયંત (૩૩) આનંદ (૩૪) શ્રીપદ (૩૫) હસ્તગિરિ (૩૬) શાશ્વતગિરિ (૩૭) ભવ્યગિરિ (૩૮) સિદ્ધશેખર (૩૯) મહાજસ (૪૦) માલ્યવંત (૪૧) પૃથ્વીપીઠ (૪૨) દુઃખહર (૪૩) મુકિતરાજ (૪૪) મણિકંત (૪૫) મેરુ મહીધર (૪૬) કંચનગિરિ (૪૭) આનંદધર (૪૮) પુણ્યકંદ (૪૯) જયાનંદ (૫૦) પાતાલમૂલ (૫૧) વિભાસ (૫૨) વિશાલ (૫૩) જગતારણ (૫૪) અકલંક (૫૫) અકર્મક (૫૬) મહાતીર્થ (૫૭) હેમગિરિ (૫૮) અનંતશક્તિ (૫૯) પુરુષોત્તમ (૬૦) પર્વતરાજ (૬૧) જ્યોતિસ્વરૂપ (૬૨) વિલાસભદ્ર (૬૩) સુભદ્ર (૬૪) અજરામર (૬૫) ક્ષમંકર (૬૬) અમરકેતુ (૬૭) ગુણકેતુ (૬૮) સહસ્ત્રપત્ર (૬૯) શિવંકર (૭૦) કર્મક્ષય (૭૧) તમોકંદ (૭૨) રાજરાજેશ્વર (૭૩) ભવતારણ (૭૪) ગજચન્દ્ર (૭૫) મહોદય (૭૬) સુરગિરિ (૭૭) કાંતગિરિ (૭૮) અભિનંદ (૭૯) સુમતિ (૮૦) શ્રેષ્ઠગિરિ (૮૧) અભયકંદ (૮૨) ઉજજવલગિરિ (૮૩) મહાપદ્મ (૮૪) વિશ્વાનંદ (૮૫) વિજયભદ્ર (૮૬) ઇંદ્રપ્રકાશ (૮૭) કપર્દાવાસ (૮૮) કેવલદાયક (૮૯) મુક્તિનિકેતન (૯૦) રામગિરિ (૯૧) અષ્ટોત્તરગિરિ (૯૨) સૌંદર્યગિરિ (૯૩) યશોધર (૯૪) પ્રીતિમંડળ (૯૫) સર્વકામદ (૯૬) સહજાનંદ (૯૭) હેન્દ્રધ્વજ (૯૮) સ્વાર્થસિદ્ધિગિરિ (૯૯) પ્રિયંકગિરિ (૧૦૦) કચંબુ (૧૦૧) હરિપ્રય (૧૦૨) વિશ્વપ્રભ (૧૦૩) ત્રિભુવનપતિ (૧૦૪) પ્રત્યક્ષ (૧૦૫) સિદ્ધભજ (૧૦૬) વૈજયંત (૧૦૭) ઋષિવિહાર (૧૦૮) સર્વકામદ.

સૌ. કુમારપાળ દેસાઈ

શ્રી પેપરાલ નગરે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૨૫-૪-૨૦૨૧ના રોજ યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૪ જોડાઇ દીક્ષા અંગીકાર કરનાર નૂતન સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના ચરણોમાં વંદન....

ભગવાન મહાવીરની જીવનતારક ધર્મકથાઓ

તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર સ્વામીની ઉપદેશ શૈલી ''જ્ઞાતાશૈલી''ના નામે પ્રસિદ્ધ હતી. જ્ઞાતાશૈલી એટલે કોઇપણ વિચારને સચોટ રીતે સમજાવવા માર્મિક દૃષ્ટાંત આપીને વાત કરવાની શૈલી. ભગવાન મહાવીરની આવી કેટલીક ઉપદેશ કથાઓ જોઇએ.

ભગવાન એક કોડી સાટુ ૯૯૯ રૂપિયા લેનારનું દૃષ્ટાંત આપ્યું :

એક માણસ કમાવા માટે પરદેશ ગયો. ખૂબ મહેનત કરીને એ હજાર રૂપિયા કમાયો. એ હવે સારા સથવારા સાથે ઘેર આવવા નીકળ્યો. એક હજાર રૂપિયામાંથી એક રૂપિયો જુદો રાખ્યો અને ૯૯૯ વાંસળીમાં નાખી કેડે બાંધ્યા.

એક રૂપિયાની એણે કોડીઓ લીધી અને નક્કી કર્યું કે આ સો કોડીમાં પ્રવાસ ખર્ચ પતાવવો. ધીરે ધીરે એણે ઘણો રસ્તો કાપી નાખ્યો. હવે ગામ થોડેક દૂર રહેતાં, એ એક ઠેકાણે ખાવા બેઠો. ત્યાં પોતાની પાસેની એક કોડી ભૂલી ગયો. એ આગળ વધ્યો. માર્ગમાં તેને યાદ આવ્યું કે, તે એક કોડી પાછળ ભૂલતો આવ્યો છે, ને હવે એક કોડી માટે વળી નવો રૂપિયો વટાવવો પડશે.

પણ કેડે ૯૯૯ રૂપિયાનું જોખમ હતું. એ લઈને એકલા પાછા ફરવું ઠીક નહોતું. એણે એક ઠેકાણે ખાડો ખોદી રૂપિયા દાટ્યા, ને કોડી લેવા હાંફળો ફાંફળો પાછો ફર્યો. દોડતો પેલા સ્થળે ગયો, પણ ત્યાં કોડી ન જડી. દોડતો પાછો પોતાના સ્થળે આવ્યો. ત્યાં દાટેલા રૂપિયા કોઇ કાઢી ગયેલું. એની તો કોડીયે ગઇ, ને ૯૯૯ રૂપિયા પણ ગયા.

આમ, એક કોડી સારુ ૯૯૯ રૂપિયા ખોનારાની જેમ, દેહ ખાતર આત્મા ખોનારાઓએ વિચાર કરવા જેવો છે.

કાશમાં ગંગાતીરે એક મોટો ઘરો. ઘરાની પાસેની ઝાડીમાં બે શિયાળ રહે. રાત પડે જલચરોનો શિકાર કરે.

એક વાર ખાવાનું શોધવા રાતની વેળાએ બે કાચબા બહાર આવ્યા. તરત શિયાળ તેમના પર તુટી પડ્યા. કાચબાઓએ પોતાના અંગ ઢાલ નીચે છુપાવી દીધા. શિયાળોએ હલાવ્યા, બચકાં ભર્યા, નખ માર્યા પણ કંઇ વળ્યું નહિ.

થોડીવારે એક મૂઢ કાચબાએ શિયાળ ચાલ્યા ગયા માનીને એક પગ બહાર કાઢ્યો. એ જોતાં જ શિયાળે આવીને એક પગ કરડી લીધો. એના બીજા અવયવો પર કરડી ખાધા.

બીજો કાચબો એ પ્રમાણે જ કરશે, એમ માનીને શિયાળોએ લાંબા સમય સુધી રાહ જોઇએ, પણ કંઇ વળ્યું નહીં. છેવટે કંટાળીને શિયાળ ચાલ્યા ગયા. બીજા કાચબાએ સહેજ ડોક ઊંચી કરીને જોયું. કોઇને ન જોતાં દોડીને ઘરામાં પહોંચી ગયો ને સુખેથી રહેવા લાગ્યો.

પોતાની ઇન્દ્રિયોને કાબુમાં રાખ્યા વિના સ્વચ્છંદતાથી વર્તનારના પહેલા કાચબા જેવા બૂરા હાલ થાય. જે સંયમથી વર્તે અને આત્મકલ્યાણમાં પ્રવૃત્ત થાય, તે બીજા કાચબાની પેઠે સુખથી તરે અને બીજાંને પણ તારે !

कुमकुम सने पगलिये

पुण्य सम्राट के चतुर्थ पुण्योत्सव पर विविध आयोजन

राणापुर। वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी की जन्मभूमि में पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराजा के चतुर्थ पुण्योत्सव 3 मई 2021 निमित्त गुणानुवाद शोभायात्रा, कवि सम्मेलन एवं कार्यदक्ष दस व्यक्तित्वों का सम्मान किया जायेगा। इस अवसर पर आचार्यश्री सुयश सूरीश्वरजी म.सा. एवं श्री रामकथा के कुशल वक्ता श्री रामानुजजी उपस्थित रहेंगे।

आयोजन के संयोजक तथा शाखा प्रवक्ता अवि सुरेश ने बताया कि समारोह ओसवाल पंच के अध्यक्ष दिलीप सकलेचा, मुनिसुव्रत जैन मंदिर के चन्द्रसेन कटारिया, वरिष्ठ साहित्यकार त्रिपुरारीलाल शर्मा, डॉ. के.के. त्रिवेदी, निलेश पंचोली, नगर परिषद अध्यक्ष सुनीता गोविन्द अजनार, समाजसेवी मनोहर भंडारी एवं साधना न्यूज के जिला ब्यूरो एम परमार के आतिथ्य में सम्पन्न होगा।

समारोह में अपने -अपने मनोभाव से धार्मिक, सामाजिक कार्य बखूबी करने वाले अभय कटारिया, नटवरलाल हरसोला, गम्भीरमल राठी, नारायण राठौड़, रमेश सोनी, श्रीमती हंसा नाहर, मंजू सकलेचा, ऋतु सोडानी, निक्की जैन एवं युवा गौ सेवा समिति का अभिनन्दन प्रशस्ति पत्र, शाल, श्रीफल से किया जावेगा। कार्यक्रम सुरेश समीर के निर्देशन में आयोजित किया जा रहा है। समारोह का संचालन तबस्सुम अश्क उज्जैन एवं चाँद अंजुम देवास करेंगी। इस अवसर पर 4 कवि भी आमंत्रित किये गए हैं।

*** कुक्षी (स्वस्तिक जैन)।** तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ प्रभु की आराधना स्वरूप प्रतिमाह की वदी दशमी को होने वाले एकासने पुण्य सम्राट की असीम अनुकम्पा से सामूहिक रूप से निरंतर कई वर्षों से आयोजित हो रहे हैं। आराधना के अंतर्गत करीबन 70 से 80 आराधक प्रतिमाह एकासने का व्रत करते हैं। उन सभी आराधकों को सामूहिक रूप से अलग-अलग लाभार्थियों द्वारा आराधकों के लिये उत्तम व्यवस्था की गई। दोपहर में महिला मंडल द्वारा पूजन पढ़ाई गई। इस उपलक्ष्य में बड़ा मंदिरजी के शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की मनमोहक अंग रचना की गई।

आदिनाथ प्रभु का जन्म एवम् दीक्षा कल्याणक सह गच्छाधिपति का जन्मोत्सव मनाया

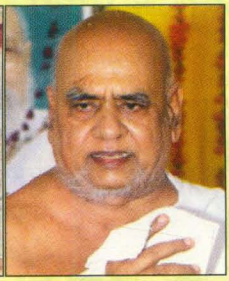

कुक्षी। पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज के पट्टधर गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. का 73 वां जन्म दिवस एवम् चैत्र वदी सप्तमी पुण्य सम्राट की मासिक पुण्य तिथि का दिन दोनों एक ही दिन होने से महिला मंडल द्वारा पुण्य सम्राट का पूजन पढ़ायी गयी। परिषद परिवार द्वारा गरीबों को भोजन वितरित किया गया एवम् संघ की ओर से गच्छाधिपति श्री को जन्म दिवस की शुभकामनाएं एवम् उनके दीर्घायु होने व उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

चैत्र वदी 8 दादा आदिनाथ प्रभु का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक उत्सव का दिन था इस पर बढ़ते कोरोना के प्रभाव के कारण इस दिन आयोजित होने वाली रथयात्रा निरस्त करना पड़ी इसलिए लाभार्थी परिवार द्वारा ढोल के साथ दादा आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा को पूजन के वस्त्रों में हाथ में लेकर आदेश्वरजी मंदिर से धान मंडी तिलक मार्ग एम.जी. मार्ग से सोनी मोहल्ले में समैय्या कराया। इस मार्ग पर आने वाले जैन मतावलंबियों ने प्रभु प्रतिमा की गहुंली की एवम् अक्षत से वधाया। प्रतिमा के साथ चलने वाले सभी श्रद्धालु मास्क पहने थे एवं उचित शारीरिक दूरी बनाए रखे। बड़ा मंदिरजी की केसरिया नाथ प्रभु की प्रतिमा की एवं अंग रचना के साथ ही आदेश्वर दादा की बड़ी प्रतिमा जो नव निर्माणाधीन मंदिर में शांतिनाथ प्रभु के पास मूलनायक के रूप में विराजित होगी उनकी भी अंग रचना की गई। कई श्रद्धालुओं ने समीपस्थ तीर्थ तालनपुर में एवम् कुक्षी स्थित आदेश्वरजी मंदिर नयापुरा में पूजन का लाभ लिया। इस सुअवसर पर महिला मंडल द्वारा पूजन पढ़ाई गई। रात्रि में कोरोना महामारी निवारणार्थ नवकार मंत्र का जाप किया।

वासणा। गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि की निश्रा में पुण्य सम्राट की प्रेरणा एवं त्रिस्तुतिक जैन संघ के सहयोग से निर्मित श्री राजेन्द्र-हर्ष-जयंतसेन-नित्य खेड़ा गौशाला वासणा का उद्घाटन सकल श्रीसंघ एवं ग्रामजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। गच्छाधिपतिश्री की प्रेरणा से जीवदयाप्रेमियों ने उदार भाव से लाभ लिया। आगामी आतमोद्धार में संयम ग्रहण करने वाले मुमुक्षु विश्वभाई कोरण्डिया तथा स्तुतिबेन कोरडिया के वर्षीदान का वरघोड़ा आयोजित किया गया जिसका सम्पूर्ण लाभ वासणा निवासी मोरखिया जीवीबेन कालिदास नरसिंहभाई परिवार ने लिया।

समारोह में विधायक श्री शिवभाई भूरिया, सरपंच श्री डाह्याभाई राजपुरोहित के साथ अहमदाबाद, सूरत, थराद, लाखणी, डीसा आदि संघों के गुरुभक्त उपस्थित थे।

ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न

* **पोषाणा।** गच्छाधिपति आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी की आज्ञा से जालोर जिले में स्थित पोषाणा नगर में श्री सुविधिनाथ जिनालय की 10 वीं ध्वजारोहण का कार्यक्रम मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात् प्रवचन देते हुए डॉ. संयमरत्न विजयजी ने कहा कि ध्वजा की तरह जो ऊँचे आचार-विचार रखता है, वह कभी भी कहीं गिरता नहीं। ऊँचे उठो, लेकिन घमंड के साथ नहीं सरलता के साथ उठो। भोगी संसार में भटकता है और अभोगी मुक्त हो जाता है। जो इंद्रियों के वश में रहता है, वह विषय सामग्री को एकत्र करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। अनुकूल विषय सामग्री को जुटा कर कभी वह एक इंद्रिय को तृप्त करता है तो कभी दूसरी को। इंद्रियाँ विषयों का भोग करते हुए भी वे कभी तृप्त नहीं होती हैं।

गुजरात के पाटण नगर में 1 मई को हुई मुमुक्षु शुभम की दीक्षा

पाटण। गुजरात के पाटण नगर में विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेंद्र सूरिश्वरजी महाराजा की असीम कृपा से एवं युग प्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरिश्वरजी महाराजा की दिव्य कृपा से गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी महाराज ओर आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वाद से मध्यप्रदेश निवासी नरेंद्रकुमार शांतिलालजी छजलानी के सुपुत्र मुमुक्षु रत्न शुभमभाई छजलानी की दीक्षा 1 मई 2021 को पाटण में गच्छाधिपती श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी महाराज आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतो की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण आयोजित त्रिदिवसीय महोत्सव धार, मध्यप्रदेश निवासी नरेंद्रकुमार शांतिलाल छजलानी परिवार की ओर से संपन्न हुई।

इस प्रसंग पर परिवार की ओर से भव्य उजमणा हुआ, त्रिदिवसीय महोत्सव में परमात्मा के शक्रस्तव के अभिषेक एवं परमात्मा की आकर्षक ओर अविस्मरणीय महापूजा के साथ संयम संवेदना, परमात्मा मिलन, गुरु स्मरण आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए, शुभ मुहूर्त में विशाल श्रमण-श्रमणी भगवंतों एवं श्रावक-श्राविकाओं की पावन उपस्थिति में मुमुक्षु शुभमभाई का दीक्षा महोत्सव संपन्न हुआ।

* रानी स्टेशन। मुनिराज श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी के राणी स्टेशन नगर में 8 वर्ष पश्चात् आगमन होने पर जोधपुर संभाग के 6 जिलों में रणकपुर से रामदेवरा, राणकपुर से नाकोड़ा तीर्थ, पाली से जोधपुर हाइवे, पाली से जीरावला तीर्थ, पाली जिले की सभी सरकारी स्कूल, पाली जिले की पुलिस लाइन, पाली जिले के राजमार्ग पर 14 लाख नीम के वृक्ष लगाने के साथ जिन्होंने वृक्षों का पालन पोषण भी किया ऐसे गुरु जयन्तसेनसूरिजी के परम भक्त, पर्यावरण प्रेमी, स्व. श्री किशोरमलजी खिमावत की धर्मपत्नी श्रीमती बसंतीदेवी खिमावत ने मुनिद्वय श्री से शुभाशीर्वाद प्राप्त किया। किशोरमलजी खिमावत ने गोड़वाड़ (मारवाड़) क्षेत्र में वृक्षारोपण के अलावा भी ऐसे अनेक परोपकार के कार्य सम्पन्न किये हैं, परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र की जनता उन्हें महापुरुष के रूप में मानती थी। योग-संयोग से श्रीमती बसंती बहन की 21 दिवसीय नमस्कार महामंत्र की मौन साधना की पूर्णाहुति के अवसर पर मुनिद्वय श्री के पधारने पर बसंती बहन भावविभोर हो गयीं और अपनी साधना की सफलता के प्रतीक स्वरूप जानकर गुरु भगवंतों की वैयावच्च कर अनुपम लाभ प्राप्त किया।

विहार करते समय किशोरमलजी खिमावत की प्रतिमा पर वासक्षेप कर बसंतीदेवी को आशीर्वाद प्रदान किया।

आवश्यक सूचना

कोविड-19 का प्रकोप कार्यालयीन तथा कर्मचारी वर्ग पर होने से तथा लॉकडॉउन के कारण डाक आदि में अनियमितता उत्पन्न हुई है। अतएव 'शाश्वत धर्म' का जून 2021 का अंक स्थगित रहेगा। आगामी अंक मंदसौर से 3 जुलाई 2021 को पोस्ट किया जाएगा। कृपालु गुरुभक्त व पाठकगण नोट करें।

– व्यवस्थापक

सूरि राजेन्द्र आज्ञानुवर्ती सूरि जयंतसेन समुदायवर्ती
श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के तत्वावधान में
आत्मोद्धारक - 4, 25 अप्रैल, रविवार

गच्छनायकश्री नित्यसेनसूरिजी म.सा.

के कर कमलों से दीक्षित हुए आत्मार्थिओं के नाम

1. थराद निवासी मुमुक्षु श्री विश्व अश्विनजी कोरडिया
   मुनिश्री वारिषेण विजयजी म.सा.।
2. थराद (लुणाल) निवासी मुमुक्षु श्री अक्षत समीरजी सेठ
   मुनिश्री अध्यात्मसेनविजयजी म.सा.।
3. रिंगणोद निवासी मुमुक्षु श्री अभिषेक नगीनजी हरण
   मुनिश्री अर्हंसेनविजयजी म.सा.।
4. थराद निवासी मुमुक्षु श्री अक्षित रोहितजी संघवी
   मुनिश्री अरिष्ट रत्नविजयजी म.सा.।
5. थराद निवासी मुमुक्षु श्री जयन्तिभाई नाथालालजी संघवी
   मुनिश्री जयसेनविजयजी म.सा.।
6. थराद (नारोली) निवासी मुमुक्षु श्री मौन पिंटुकुमार कोरडिया
   मुनिश्री मेघविजयजी म.सा.।
7. थीरपुर (मुम्बई) मुमुक्षु श्री तीर्थकुमारजी अल्पेशजी मोरखीया
   मुनिश्री पुंडरिकविजयजी म.सा.।
8. थीरपुर (मुंबई) निवासी मुमुक्षु श्री संयम परेशजी वेदलीया
   मुनिश्री समर्पणविजयजी म.सा.।
9. थीरपुर (मुंबई) निवासी मुमुक्षु श्री श्रेय प्रणेशजी पारिख
   मुनिश्री सुजशविजयजी म.सा.।

10. थराद (नारोली) निवासी मुमुक्षु श्री स्तुति कुमारी हँसमुखजी कोरडिया
साध्वीजीश्री तहत्तिप्रियाश्रीजी म.सा.।

11. थराद (भलासरा) निवासी मुमुक्षु श्री मानसी कुमारी भरतजी वोहेरा
साध्वीजीश्री मोक्षार्थप्रियाश्रीजी म.सा.।

12. थराद निवासी मुमुक्षु श्री विरति कुमारी चंद्रकान्तजी वोहेरा
साध्वीजीश्री वर्धमाननिधिश्रीजी म.सा.।

13. थराद (पेपराल) निवासी मुमुक्षु श्री आयुषी कुमारी जयेशजी धरू
साध्वीजीश्री अनुयोगनिधिश्रीजी म.सा.।

14. थीरपुर (मुंबई) निवासी मुमुक्षु श्री विरति कुमारी प्रणेशजी पारिख
साध्वीजीश्री जशनिधिश्रीजी म.सा.।

15. थीरपुर (लुणाल) निवासी मुमुक्षु श्री श्रुति कुमारी विजयजी शेठ
साध्वीजीश्री श्रमणनिधिश्रीजी म.सा.।

16. थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री तनिषा कुमारी भरतजी शेठ
साध्वीजी श्री त्यागनिधिश्रीजी म.सा.।

17. थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री हीर कुमारी नीतिनजी शेठ
साध्वीजीश्री हीरनिधिश्रीजी म.सा.।

18. थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री आश्विन कुमारी सुनीलजी वोहेरा
साध्वीजीश्री आर्हंत्यनिधिश्रीजी म.सा.।

19. थीरपुर (सूरत) निवासी मुमुक्षु श्री प्रियांसी कुमारी अतुलजी मोरखिया
साध्वीजीश्री प्रातिहार्यनिधिश्रीजी म.सा.।

20. थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री आंसीकुमारी मनीषजी अदाणी
साध्वीजीश्री आचारांगनिधिश्रीजी म.सा.।

दिव्यात्माओं की सत्व, शौर्य, पराक्रम युक्त वीरयात्रा हेतु जिनशासन से प्रार्थना। जिनशासन जयवंत हो। त्रिस्तुतिक गच्छ जयवंत हो...। चतुर्विध संघ का मंगल हो।

श्री संघ सौरभ

मंदसौर में शोक की लहर

मंदसौर। कोविड-19 के कारण मंदसौर त्रिस्तुतिक जैन समाज में एक के बाद एक दूसरी, तीसरी, चौथी मौते होने से शोक की लहर छा गई।

समाज में धर्मक्रियाओं में अग्रणीय, तपस्वी, प्रतिक्रमण- पौषध आदि की विधियाँ करवाने में पारंगत, समाजसेवी तथा प्रेरणा पुरुष श्री भाग्यचंद्रजी पोरवाल का निधन अचानक रतलाम में उपचार करवाते हुए हो गया। इनके जाने से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। आप समाज के कार्यों में काफी अभिरूचि रखते थे। वैयावच्च की ओर आपका विशेष वर्तन था। साधु-साध्वियों के लिये उनके आगमन व प्रस्थान पर व्यवस्था जुटाने में उत्साह से परिपूर्ण रहते थे। आपकी उम्र 75 वर्ष थी। उनके पुत्र श्री नीतेश तथा पौत्र सिद्धार्थ, आदीश एवं शुभ भी परिषद की इकाइयों में सक्रिय हैं। नवयुवक परिषद के सक्रिय कार्यकर्ता तथा समाज के कार्यों में उल्लास के साथ स्वयंसेवक शब्द को सार्थक करने वाले श्री दशरथ जैन की मृत्यु से सभी स्तब्ध रह गये। वे मंदसौर जिला चिकित्सालय में उपचारार्थ भर्ती थे। उनके निधन की सूचना ने कई नैत्रों को आसुओं से भर दिया। आप कर्मठ, कर्त्तव्यपरायण, धर्मनिष्ठ, गुरुभक्त थे। आपकी उम्र 48 वर्ष थी। समाज को आपसे कई आशाएँ थी। कर सलाहकार के रूप में सफल हसमुख, मिलनसार, व्यवहार कुशल श्री शैलेन्द्र कोठारी की अचानक चिरविदाई अभी तक कोई स्वीकार नहीं कर पा रहा है। वे गुरुभक्त परिवार श्री शांतिलालजी कोठारी कर सलाहकार के सुपुत्र थे। विगत वर्ष से श्री शैलेन्द्र भाई की धार्मिक व सामाजिकसभी अभिवृद्धि हो गई थी। आपके निधन से समाज में एक अच्छे सक्रियजन का अभाव हुआ है। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद की म.प्र. इकाई के मंत्री श्री यश बाफना की मातेश्वरी श्रीमती हंसा बाफना भी महिला परिषद में सक्रिय थीं। आप श्री अशोकजी बाफना की धर्मपत्नी थीं जो मंदसौर समाज में अग्रणीय तथा कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। श्रीमती हंसा बाफना धर्मनिष्ठ, गुरुभक्त, आदर्श गृहिणी तथा मिलनसार सुश्राविका थीं। आपके निधन से मंदसौर श्रीसंघ को गहरी ठेस लगी है।

पूर्व पार्षद तथा समाज के आगेवान स्व. श्री समरथमलजी दुग्गड़ की धर्मपत्नी श्रीमती पिस्ताबाई का निधन विगत मास हो गया। आप महिला परिषद में सक्रिय थीं। दुग्गड़ परिवार मंदसौर त्रिस्तुतिक समाज में काफी सक्रिय रहा है तथा है। शाश्वत धर्म की की ओर से हार्दिक श्रद्धाजंलि।

लाबरिया परिषद के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंद्र कांकरिया का दुर्घटना में निधन

लाबरिया (धार)। क्षेत्र में व समाज में अपनी कार्यशैली, व्यवहारिकता, खुशमिजाजपन से अत्यंत लोकप्रिय 50 वर्षीय श्री प्रकाशचंद्रजी कांकरिया की एक दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो जाने से सम्पूर्ण क्षेत्र में शोक की लहर छा गई। सभी स्तब्ध हैं। यकायक विश्वास कर पाना मुश्किल है। स्व. इन्द्रमलजी कांकरिया के सुपुत्र श्री प्रकाशजी परम गुरुभक्त

थे, राष्ट्रसंत के प्रति अगाढ़ श्रद्धा थी। संघ, समाज व परिषद में समर्पणता के साथ अग्रसर की भूमिका में थे। वर्तमान में लाबरिया परिषद के अध्यक्ष थे। आपके कार्यकाल में परिषद ने विशेषकर धार्मिक पाठशाला में उल्लेखनीय प्रगति की।

आप भगवान महावीर जन्मोत्सव समिति के व नई धर्मशाला निर्माण समिति के भी अध्यक्ष थे। आगामी महावीर जन्म कल्याण उत्सव की भावी तैयारियों के बीच आप खुद ही चले गए। समाज अध्यक्ष श्री राकेशजी बाफना के शब्दों में वे बहुमुखी प्रतिभावान थे, छोटी सी उम्र में अपनी बौद्धिक कुशलता, परिश्रम व मिलनसारिता से समाज के अग्रगणों में शुमार थे। आप एक कुशल व्यापारी भी थे। हमेशा प्रसन्न रहने वाले प्रकाशजी ने पूज्य साध्वीजी काव्यरत्नाश्रीजी के लाबरिया चातुर्मास में महत्त्वपूर्ण जवाबदारी निर्वाह की थी। समाज की भावी बागडोर संभालने की योग्यता रखने वाले प्रकाश का लुप्त हो जाना परिवार, संघ समाज व परिषद के लिए अपूर्णीय क्षति है। अभी - अभी आपके ससुराल धामन्दा में मुमुक्षु सम्मान समारोह में आपकी उपस्थिति शोभायमान थी। 'शाश्वत धर्म' परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि।

विजय भंसाली का निधन

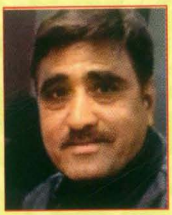

दाहोद। राणापुर के मूल निवासी श्री विजय बाबूलालजी भंसाली के निधन का समाचार स्तब्ध करने वाला है। यद्यपि वे जीवन और मौत के झूले पर थे पर फिर भी उम्मीद थी कि मौत से संघर्ष कर विजय प्राप्त करेंगे।

विधि का विधान कौन समझ सका है। भाई विजय ने अपनी 60 वर्षीय उम्र में जीवन के हर उतार-चढ़ाव को देखा है। राणापुर में बाल्यकाल व आरंभिक जीवन अत्यंत संघर्ष में ही बीता। आर्थिक शून्यता ने सब कुछ सिखाया, अपनी मेहनत, मिलनसारिता, आत्मविश्वास व परिवार के आशीर्वाद से दाहोद में अरिहंतदाल बाटी के व्यवसाय को बुलंदिया दी।

शून्य से शिखर की ओर कदम बढ़ाते गए। हालांकि परिवार में खुशी व गम के मौके के साक्षी भी बने। माता-पिता का साथ छूटा, बेटी को असहाय बीमारी से लड़ते देखा, उसको खूब विश्वास दिलाते देखा और बेटी की चिर विदाई के भी साक्षी बने। पूज्य राष्ट्रसंतश्रीजी की निश्रा में राणापुर में परिवार में दीक्षा महोत्सव (पूज्य श्री दर्शनानिधिजी) को ऐतिहासिक यादगार बनाने में आप की मेहनत व योजनाबद्ध कार्य करने की प्रणाली ने सभी के दिल को जीत लिया। खुशियों पर शारीरिक पीड़ा (दोनों किडनी का खराब होना) ने अवरोध लगा दिया। बीमारियों से जूझना पड़ा। श्री विजयजी के रूप में परिवार व समाज ने एक परम गुरुभक्त, मिलनसार हँसमुख, कर्मठ, परिश्रमी, समाजसेवी व्यक्तित्व को खोया है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि भगवान उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान देवे। शाश्वत परिवार की ओर से श्रद्धांजलि।

धार के सुभाषजी श्रीश्रीमाल का देहावसान

धार। कभी-कभी जीवन में कोई ऐसी अप्रत्याशित घटना घटित हो जाती है, जो झकझोर देती है। भाई श्री सुभाषजी का वियोग भी उसमें से एक है। सदा मुस्कुराने वाले ऐसे और इतनी जल्दी खामोश हो जाएंगे कल्पना से परे है। एक परम गुरु भक्त की परिभाषा को सार्थकता प्रदान करने वाले सुभाषजी परिवार, संघ, समाज के लिए हमेशा समर्पित रहे। पुण्य सम्राट का अगाध

आशीर्वाद प्राप्त था। उनके प्रत्येक प्रसंगों में आप भाइयों की उपस्थिति अवश्य रहती थी। एक छोटे से गांव धामन्दा से अपना सफर आरम्भ करके दसाई व पश्चात धार में अपने कारोबार को अपने परिश्रम पुरुषार्थ, व्यापारिक कौशलता व व्यावहारिकता से व्यापकता प्रदान कर अपने आप को धार व क्षेत्र में सम्माननीय स्थान पर प्रतिष्ठित करवाना गौरव की बात है। हँसमुख, मिलनसार, कर्मठ, अल्प किंतु मृदुभाषी, एक दूजे के सुख- दुख में अग्रणी भूमिका निभाने वाले सुभाषजी ने अपने कार्यों व व्यवहार से अपने नाम की सार्थकता प्रदान कर दी।

समाज में वे अग्रिम पंक्ति में थे प्रत्येक सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते थे पूज्य साधु साध्वीजी भगवंतों के चौमासे, विहार अथवा स्थिरता में आपकी वैय्यावच्च भक्ति प्रशंसनीय रहती थी। पूज्य साध्वीजी श्री काव्यरत्ना श्रीजी के

धार के सफल चातुर्मास में आपकी भूमिका सदैव स्मरणीय रहेगी। कालोनी में जिन मंदिर व उपाश्रय निर्माण तथा संघ को सक्रिय रखने में आपकी सक्रियता, समर्पणता, जुनून, स्मृतिपटल पर छाए रहेंगे। लक्ष्मी की आरम्भ से ही कृपा रही और उसका सद्कार्यों में भरपूर उपयोग किया।

नियमित पूजन, देव् गुरु धर्म के प्रति भक्ति से आत्मोत्थान के मार्ग पर अग्रसर रहे। एक सरल, सहज, सरस, सहिष्णु, गंभीर, धैर्यवान, संस्कारित, व्यक्तित्व के धनी श्रद्धेय सुभाष जी उनकी सुभाषा सदैव स्मरण रहेगी, सच में वे एक आदर्श पुरुष थे। शाश्वत धर्म परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाजंलि। - अशोक श्रीश्रीमाल

श्री शांतिलालजी मुथा नहीं रहे

इंदौर। कालानी नगर संघ के सदस्य, मिलनसार श्री शांतिलालजी मुथा झकनावदा वालों का आकस्मिक निधन हो गया।

धार्मिक प्रवृत्ति के श्री मुथाजी ने परभव की यात्रा के कुछ ही क्षणों पूर्व अहमदाबाद में संचालित जयंतसेन वैय्यावच्च संस्थान में सुपात्र दान का अनुपम लाभ लिया था। शाश्वत धर्म परिवार ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्री अनिलजी चौपड़ा नहीं रहे

इंदौर। सुश्रावक श्री बसंतीलालजी चौपड़ा के सुपुत्र श्री अनिलजी चौपड़ा का निधन हो गया। आप किडनी की बीमारी से जूझ रहे थे।

श्री अनिलजी चौपड़ा एक सक्रिय समाजसेवक एवं कुशल मंच संचालक थे। आप एक खुशमिजाज व्यक्ति एवं आत्मविश्वास से भरपूर थे। शाश्वत धर्म परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रीमती रंजना पारिख का निधन

इंदौर। श्रीमती रंजना पारिख अत्यंत विनम्र मिलनसार, हँस मुँख धर्मनिष्ठ व समाज सेवी महिला थी। नियमित रूप से अपनी धार्मिक क्रियाओं में संलग्न रहतीं थीं। आप स्व.श्री रमेश चंद्र गांग की बेटी व प्रकाश जी पारेख की धर्मपत्नी थीं। आपको बचपन से ही माता-पिता से संस्कारों की धाती

विरासत में मिली।

उन्हीं संस्कारों से बच्चों को सींचकर श्रृंखला को संवाहन का कार्य किया। सामाजिक कार्यों व सेवा के कार्यों में भी आप अग्रणी भूमिका निभाती थी। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद इंदौर के बैनर तले आपके ही प्रोत्साहन से अनेक बार आपके बेटे श्री आशीषजी ने वृद्धाश्रम, कुष्ठ रोगियों, बालाश्रम व अन्य स्थानों पर भोजन वितरण व अन्य सामग्री वितरण का लाभ लिया। पारिवारिक कार्यक्रमों में भी आपकी सक्रियता कार्यक्रमों की शोभा बढ़ा देती थी।

श्रीमती ज्ञानवंती भंसाली का संथारा पूर्वक देवलोकगमन

इंदौर। अत्यंत धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी मृदुभाषी श्रीमती ज्ञानवंती भंसाली का नमस्कार महामंत्र का स्मरण करते संथारा पूर्वक देहावसान हो गया।

श्री सीमंधर स्वामी जिनालय व नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिनालय गुमास्तानगर में सक्रियता से जुड़ी श्रीमती भंसाली नियमित जिन पूजन, प्रतिक्रमण, सामायिक करतीं थीं।

साधु साध्वीजी के चातुर्मास से नियमित प्रवचन व वैय्यावच्च का लाभ लेती थीं। आपको सादर श्रद्धांजलि

गुरुभक्त कैलाशचन्द्र कोठारी का अवसान

लाबरिया। परम् गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ, समाजसेवी श्री कैलाश चंद्र कोठारी का अवसान हो गया। श्री कैलाश जी संघ समाज के सक्रिय सदस्य थे।

लाबरिया प्रतिष्ठा एवं पूज्य काव्यलता श्री जी के चातुर्मास में भी आपकी सराहनीय सक्रियता थी। संघ एवं परिषद के सदस्य श्री कैलाश जी को भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

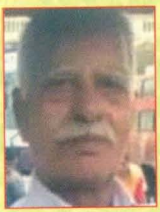

शशि चौधरी का अवसान

इंदौर। एक युवा होनहार व्यक्तित्व का अचानक गमन स्तब्ध करने वाली घटना है। 39 वर्षीय श्री शशि चौधरी एक मिलनसार, हँसमुख, सरल प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। दूसरों के सुख-दुःख में सदा साथ रहते थे। संघर्ष, साहस और सफलता उनके जीवन का एक हिस्सा बन गया था। वे परिश्रमि व पुरुषार्थी थे। शशि की तरह शीतल व चांदनी की अद्भूत छटा बिखरने की कला में माहिर थे। पारिवारिक व पितृत्व धर्म का बखूबी निर्वाह किया। अपनी 10 वर्षीय बेटी आशी को लगातार प्रोत्साहन देकर उसे शिक्षा व अन्य एक्टिविटी में अव्वल रखते थे। बेटी ने हाल ही में नृत्य में वर्ल्ड रिकार्ड बनाया था।

उनकी बिदाई परिवार के लिए बेहद अफसोसजनक व अपूर्णनीय क्षति है। शशि का अमावस की तरह लुप्त होना घोर आघात है। काश वे शशि की जैसे पुनः उदय होकर दूज के चाँद की तरह बढ़ते हुए पूर्णिमा के चांद की तरह चांद की तरह छटा बिखरते। शाश्वत धर्म परिवार की ओर से आत्मिक शांति हेतु श्रद्धाजंलि।

स्व. श्रीमती विनोदबालाजी जैन का स्वर्गवास

बाग। सुश्राविका धर्मनिष्ठ श्रीमती विनोद बाला जैन का 21 अप्रैल को आकस्मिक निधन हो गया।

शांत स्वभावी, तपोनिष्ठ, विनोदबालाजी छोटे से नगर बाग में सामाजिक, धार्मिक सभी कार्यों में आगे रहती थी। राष्ट्रसंत के बाग चातुर्मास व उपधान तप के दौरान भी आपकी महती भूमिका रही। बाग संघ व परिवार की अपूर्णनीय क्षति हुई। 'शाश्वत धर्म' परिवार की ओर से श्रद्धाजंली।

श्रीमती आंचलिया व श्री ओरा नहीं रहें

रतलाम। पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की भक्त तथा महिला परिषद, नवयुवक परिषद में वर्षों तक सक्रिय भूमिका निभाने वालीं महिला परिषद की वर्षों तक महासचिव रहीं श्रीमती कांताबहिन आंचलिया नहीं रहीं। आप उस काल में जब इतना साधन सम्पन्न आवागमन नहीं था तब गुरु आज्ञा से महिला परिषद के लिए तन, मन, धन से अपनी भूमिका निभाने वाली एवं रतलाम ही नहीं पूरे त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की लाडली थीं।

रतलाम श्रीसंघ के वरिष्ठ परम गुरु भक्त श्री कांतिलालजी ओरा भी अब हमारे बीच में नहीं हैं आप दोनों ने वर्षों तक ज्ञान, दान हेतु उपाश्रय में पाठशाला का संचालन किया। पाठशाला परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि, परमात्मा उनके पूरे परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे। रतलाम त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, ट्रस्ट मण्डल एवं पूरे परिषद् परिवार ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

माणकलाल नान्देचा का निधन

नीमच। अखिल भारतीय सौधर्म तपोगच्छीय जैन त्रिस्तुतिक श्री संघ नीमच सिटी के वरिष्ठ सदस्य माणकलालजी नान्देचा पिता स्व. भंवरलालजी नान्देचा जैन पंडित का बुधवार को निधन हो गया। वे अभय कुमार नान्देचा सिंगोली के छोटे भ्राता, अशोक नान्देचा के बड़े भ्राता व अभिषेक नान्देचा के पिताजी थे। आप पिछले सात-आठ दिनों से अस्वस्थ थे। निधन जिला चिकित्सालय में उपचार के दौरान हुआ। अंतिम संस्कार नीमच सिटी मुक्तिधाम पर किया गया जहाँ उनके सुपुत्र अभिषेक नान्देचा व परिवार के अन्य सदस्यों ने मुखाग्नि दी। माणकलालजी नान्देचा सरल स्वभावी, मिलनसार व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। जैन मंदिर ध्वजा महोत्सव व विधि विधान के जानकार थे। आप श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. व राष्ट्रसंत जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के अनन्य भक्त थे।

श्री नान्देचा आयुर्वेदिक दवाईयों, जड़ी बूटियों के अच्छे जानकार थे। आपने कई लोगों के असाध्य रोगों का उपचार किया है। आप

श्री राजेन्द्र जैन औषधालय चलाते थे तथा वैद्यजी के नाम से जाने जाते थे। आप आसपास ग्रामीण क्षेत्र में बोरखेड़ी पानेरी, जवासा, आक्या आदि में सेठजी के नाम से प्रसिद्ध थे।

श्री भेरूलालजी सुराणा का निधन

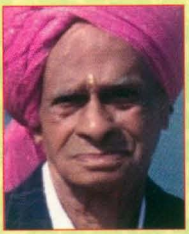

रतलाम। परम गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ, तपोनिष्ठ सरल स्वभावी, जिनाज्ञा पालक एवं कर्त्तव्यनिष्ठ संघ समाज के अग्रणी सुश्रावक श्री भेरूलालजी सुराणा का अवसान निश्चित रूप से परिवार, संघ, समाज व परिषद की अपूर्णनीय क्षति है।शारीरिक प्रतिकूलता के बावजूद भी अपनी दैनिक धर्म क्रिया सामायिक, जिन दर्शन पूजन, प्रतिक्रमण पच्चक्खाण नियमित करते थे। गुरुदेव पूज्य जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पिछले कई वर्षों से लगातार नवकार आराधना, पर्युषण पश्चात् खमत्त खामणा हेतु जाते थे। उनकी निश्रा में अनेक बार पैदल छरि पालक संघ गए। आप प्रतिवर्ष सिद्धाचलजी की यात्रा व अन्य तीर्थ यात्राएं भी करते थे। भारत भर के सभी तीर्थों की यात्रा आपने कर अपनी भव यात्राओं को कम किया। पर्व तिथि पर श्री राजेन्द्र उपाश्रय में पौषध अवश्य करते थे। आपका व्यक्तित्व अत्यंत सादगी भरा व भोलेपन से सना हुआ था। एक अच्छे सलाहकार भी थे। मिलनसार हँसमुख, आत्मविश्वासी एवं सहज थे। अपने पितृत्व धर्म का पालन करते हुए अपने बच्चों को आत्मनिर्भरता, धार्मिकता, व्यवहारिकता एवं व्यावसायिकता के सम्पूर्ण संस्कार दिए।

बेटा नीरज सुराणा समाज संघ व परिषद में राष्ट्रीय, प्रांतीय व स्थानीय स्तर पर अपनी महती भूमिका निर्वाह कर रहे हैं। राष्ट्रसंत श्री के महावीर बाग के ऐतिहासिक चातुर्मास में आपका व आपके परिवार का उल्लेखनीय योगदान रहा। -विनम्र श्रद्धांजलि

नरपतभाई का निधन

अहमदाबाद। पेपराल गुरु तीर्थ ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा अनेक संस्थाओं में सक्रिय श्री नरपतलालभाई नागरदासजी वोहरा का निधन विगत मास हो गया। आपने पूरे जीवन में गुरुभक्त के रूप में कई संस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग किया। त्रिस्तुतिक समाज में शोक की लहर छा गई। 'शाश्वत धर्म' की ओर से हार्दिक श्रद्धाजंली।

श्रीमती रंजना मनसुखलाल पोरवाल का निधन

इंदौर। श्रीमती रंजना मनसुखलाल पोरवाल का निधन हो गया आप एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं।

आप प्रतिदिन श्रीसीमंधर स्वामीजी के मंदिर में पूजन-अर्चन के लिए आती थीं। सुबह शाम प्रतिक्रमण एवं सामायिक करने वालीं श्रीमती रंजना पोरवाल का निधन समाज के लिए एक क्षति है।

मूर्धन्य विद्वान, साहित्य मनीषी डॉ. तेजसिंहजी गौड़ का दुःखद अवसान
श्री राजेन्द्रसूरि शोध संस्थान उज्जैन के निदेशक की चिर बिदाई

डॉ. तेजसिंहजी गौड़ (30 जून 1938 – 12 अप्रेल 2021)

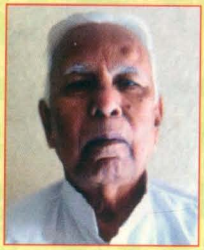

डॉ. तेजसिंहजी गौड़ का जन्म 30 जून 1938 में राजस्थान के डग में हुआ। वे शासकीय विद्यालय उन्हेल में प्राध्यापक के पद पर थे, तथा पद पर रहते हुए उन्होंने कई छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया और घर परिवार तथा समाज के प्रति अपनी समस्त जिम्मेदारियों का बखुबी निर्वाह किया।

आपने विक्रम विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की, उनका पूरा जीवन शिक्षा और साहित्य में बीता । आप डॉ. भगवती शरण उपाध्याय को अपना गुरु मानते थे तथा आचार्य जयंतसेनसूरी को अपना आदर्श।

उन्होंने अपना पूरा जीवन जैन साहित्य और जैन समाज की ओर अग्रसर किया। आप जैन साहित्य की कई महत्वपूर्ण किताबों के लेखक रहे। आपने जैन समाज की पत्रिका 'जीवन और सृजन' का संपादन भी किया।

डॉ. तेजसिंह गौड़ की किताब 'जीवन और सृजन' जो की आचार्य जयंतसेनसूरी के जीवन पर आधारित है। यह किताब आपके जीवन में नींव का पत्थर साबित हुई। आपने जैन समाज ही नहीं अपितु मालवी भाषा में लिखे दो प्रथम उपन्यास 'पूतवान' और 'बखत-बखत' की बात' की भी रचना की। कई हिन्दु धर्म गुरुओं के साहित्य लेखन तथा शोध प्रबंध भी आपने लिखे।

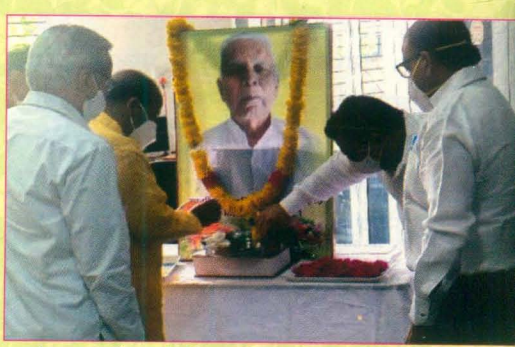

शोकसभा में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पूर्व मंत्री श्री पारसजी तथा शोध संस्थान के सचिव श्री सुशीलजी गिरिया आदि।

आपने 1998-1999 में शासकीय विद्यालय उन्हेल से सेवानिवृत होकर पूर्णतः साहित्य, शोध को अपना जीवन आधार बनाया और श्री राज राजेन्द्रसूरी शताब्दी शोध संस्थान व श्री राज राजेन्द्र जयंतसेनसूरी शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन के निदेशक के पद पर रहे। कई छात्र-छात्राओं ने आपसे पीएच.डी. में मार्गदर्शन लिया। आप एक महान इतिहासकार, मूर्धन्य विद्वान, साहित्य मनीषी, अधिकतम धर्म शास्त्र के ज्ञाता, जैन आगमों के ज्ञानी, कुशल मार्गदर्शक विनम्र एवं सरल स्वभाव के निस्वार्थ सेवाभावी एवं पुण्य सम्राट थे। इस समाज के प्रति उनके इस अतुल्य योगदान के हम सदैव ऋणी रहेंगे।

परिषद प्रांगण से

पुण्य सम्राट का 38 वां पाटोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

मैसूर। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक एवं महिला परिषद शाखा मैसूर के तत्वावधान तथा साध्वी संयमपूर्णाश्री के सान्निध्य में पुण्य सम्राट का 38 वां पाटोत्सव कार्यक्रम महावीर भवन में मनाया गया। सर्वप्रथम मंगलाचरण सुनाकर आचार्यजी की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर धर्मसभा का शुभारंभ किया। साध्वी ने प्रवचन देते हुए कहा कि जिन शासन में सामायिक का बहुत बड़ा महत्व है, मौन रखकर खुद को पहचानना है। धार्मिक व सार्वजनिक स्थानों पर अपने आप को अनुशासित रखने की आवश्यकता है। जैन धर्म अपना निवृत्ति प्रधान धर्म है। ज्यादा से ज्यादा स्वाध्याय, सामायिक, पूजन करने की बात कही। विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों का बहुमान किया गया।

बच्चों व महिलाओं ने नृत्य पेश किये। बाद में एक वर्ष में पाँच सौ सामायिक करने वाली महिलाओं का बहुमान किया। इस अवसर पर सुमतिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ के कोषाध्यक्ष मंगलचंद पोरवाल, मैसूर पिंजरापोल सोसायटी के उपाध्यक्ष हंसराज पगारिया व विनोद बाकलीवाल, पार्श्व पद्मावती ट्रस्ट के अध्यक्ष दलीचंद श्रीश्रीमाल, प्रवीण लुंकड़, मंगलचंद झोटा, शैलेश धोकड़, कंचन झोटा, बबिता बेन, ऊषा बेन आदि मौजूद रहे। मंच संचालन अमृतलाल राठौड़ एवं अरविंद बोहरा ने किया।

रतलाम। श्री महावीर स्वामी ऑनलाइन पाठशाला में श्रीमती विजयादेवी मोदी के सुपुत्र जीत तथा सुपुत्री खुशीजी ने एक नई विद्या मिड ब्रेन एक्टिविशन का ज्ञाम दिया। सभी ने मोबाइल पर स्वयं देखा। झूम, इस्टाग्राम, फेसबुक के माध्यम से कोई 225 जिज्ञासु जुड़े, पुण्य सम्राट द्वारा स्थापित ज्ञानायतन परिवार भी साथ हुआ।

सभी के प्रति अनुमोदना तथा आभार कार्यक्रम का प्रारंभ श्री सुरेन्द्रगंग द्वारा मंगलाचरण से हुआ। महिला परिषद् गुमाश्ता नगर की ओर से श्री जीत मोदी तथा कु. खुशी मोदी को पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं पाठशाला की ओर से प्रमाणपत्र व नकद राशि से सम्मानित किया गया। बहुमान श्रीमती विनिता बांठिया, श्रीमती सुधर्मा बम द्वारा तथा आभार श्रीमती सरलाजी सकलेचा, श्री पुनीतभाई द्वारा किया गया। कार्यक्रम से महिला परिषद की राष्ट्रीय शिक्षामंत्री श्रीमती संगीताजी पोरवाल आदि जुड़े। श्री महावीर ऑनलाईन पाठशाला के अंतर्गत नौ माह से स्वाध्याय हो रहा है।

सांकली आयंबिल तप

बैंगलोर। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा बैंगलोर के तत्वावधान में चिकपेट स्थित श्री वर्धमान आयंबिल खाता में आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जन्म स्थली पेपराल (गुजरात) में सामूहिक दीक्षा निमित्ते आत्मोद्धार की अनुमोदनार्थ विराट सांकली

आयंबिल तप का आयोजन रखा गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रकाश हिराणी ने बताया की आत्मोद्धार- 4 में लगभग 20 मुमुक्षु दीक्षा ग्रहण करेंगे। इसके पूर्व तीन आत्मोद्धार हो चुके है जिसमें 2017 थराद नगर में 25 दीक्षा 2018 में श्री शत्रुंजय तीर्थ में 10 दीक्षा एवं 2019 में अहमदाबाद नगर में19 दीक्षा ग्रहण की। आत्मोद्धार की अनुमोदनार्थ देशभर के श्रीसंघ एवं परिषद शाखाओं द्वारा 35 दिन में लगभग सौ शहरों में विराट सांकली आयंबिल का आयोजन कर रहे हैं। इस अवसर पर बैंगलोर शाखा अध्यक्ष डूंगरमल चोपड़ा ने कहा आज के सांकली आयंबिल के आयोजनकर्त्ता बाबूलाल भबुतमल सवानी परिवार की तरफ से हुआ। सभी आराधना करने वालों को अनुमोदना स्वरूप प्रभावना वितरित की गई। बैंगलोर शाखा सचिव नेमीचंद संघवी ने कार्यक्रम के अंत में आभार प्रकट किया।

इस कार्यक्रम में परिषद के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रकाश हिराणी, महिला परिषद की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती प्रेम बहन गाँधीमुथा, शाखा अध्यक्ष डूंगरमल चौपड़ा, उपाध्यक्ष हेमराज जैन, सचिव नेमीचंद संघवी, सहसचिव दिलीप कांकरिया, कोषाध्यक्ष रमेश जैन, प्रकाश बालगोता, चम्पालाल निमाणी, प्रकाश ओस्तवाल, नवयुवक एवं महिला परिषद के कई सदस्य उपस्थित थे।

मैसूर। आत्मोद्धार की अनुमोदनार्थ विराट सांकली आयंबिल तप के आयोजन के अंतर्गत अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं महिला परिषद की मैसूर शाखा के तत्ववाधान में आयंबिल भवन में सामूहिक आयंबिल का आयोजन किया गया। जिसमें 75 भाई-बहनों द्वारा आयंबिल किया गया। इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष मंगलचंद झोटा, सचिव शैलेश धोकड़, अमृतलाल राठौड़, गुलाबचंद, उत्तम सेठिया, विक्रम ओसवाल, नरपत गोवानी, दक्षिण संगठन मंत्री बबिता बेन, परिषद अध्यक्ष कंचन बेन, सीमा बेन, उषा बेन और नवयुवक परिषद एवं महिला परिषद के कई सदस्य उपस्थित थे।

जैन विश्व

डॉ. दिलीप धींग बने सहनिदेशक

उदयपुर। जैन दर्शन के विद्वान साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान, उदयपुर का मानद् सहनिदेशक मनोनीत किया गया है। भारतीय रक्षाविज्ञान के शिल्पी पद्मविभूषण डॉ. कोठारी (1906-1993) के विचारों को समर्पित इस संस्थान में देश-दुनिया के वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ जुड़े हैं। संस्थान के मुख्य न्यासी डॉ. कुंदनलाल कोठारी ने बताया कि डॉ. धींग द्वारा संपादित पुस्तकों का गुजराती तथा अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ।

– अतुल शाह

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

चेतनजी काश्यप ने एक करोड़ रुपए मूल्य की ऑक्सीजन मशीन दान दी

रतलाम। कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप एवं ऑक्सीजन के अभाव की समस्या को दूर करने के लिए चेतन्य काश्यप फाउण्डेशन मेडिकल कॉलेज में एक करोड़ रु. लागत की ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर प्लांट स्थापित करेगा। संभागायुक्त संदीप यादव ने फाउण्डेशन को प्लांट स्थापना की अनुमति तत्काल दे दी। कलेक्टर गोपालचंद डाड ने संभागायुक्त की अनुमति वाला पत्र फाउण्डेशन अध्यक्ष एवं विधायक श्री चेतन्य काश्यप को सौंपा। इस दौरान एसपी गौरव तिवारी एवं मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. जितेन्द्र गुप्ता उपस्थित रहे। फाउण्डेशन अध्यक्ष एवं विधायक चेतन्य काश्यप ने बताया कि रतलाम मेडिकल कॉलेज में वर्तमान में टेंकर द्वारा लिक्वीड ऑक्सीजन की आपूर्ति की जा रही है। जिसकी अनिश्चितता से हमेशा तनाव बना रहता है। देश में कई प्रमुख मेडिकल कॉलेजों में पीएसए टेक्नोलॉजी के ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट लगाए गए है। यह प्लांट सीधी हवा से ऑक्सीजन स्थानीय स्तर पर ही उत्पादित करता है। 57 मीटर क्युब का ट्राइडेंट कम्पनी का पीएसए ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट स्थापित करने का प्रस्ताव दिया था। प्लांट की लागत 88.50 लाख एवं जनरेटर व अन्य प्लेटफार्म व शेड सहित कुल लागत 1.02 करोड़ रुपए रहेगी।

श्री काश्यप ने बताया कि पीएसए तकनीक पर आधारित ट्राइडेंट कंपनी के इस ऑटोमेटिक प्लांट की डिलीवरी 2 से 3 सप्ताह में प्राप्त हो जाएगी। श्री काश्यप के अनुसार भारत सरकार द्वारा जिला चिकित्सालय में 20 बिस्तर का कोविड आईसीयु बनाया गया है, उसमें भी 30 मीटर क्युब प्रति घण्टे का पीएसए ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट लगाया जा रहा है। चेतन्य काश्यप फाउण्डेशन द्वारा प्लांट स्थापित किए जाने पर इस महामारी के समय में अतिरिक्त ऑक्सीजन उपलब्ध होगी और आईसीयु के समस्त 140 मरीजों को निर्बाध ऑक्सीजन मिल पाएगी। महामारी के पश्चात सामान्य समय में भी यह प्लांट निरंतर उपयोग में आएगा। यह प्लांट मेडिकल कॉलेज की सम्पत्ति होगा।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
ए/RNP/MP/MANDSAUR/113/2021-23
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- | वर्ष - 68, अंक 5 | कुल पृष्ठ कवर सहित - 92

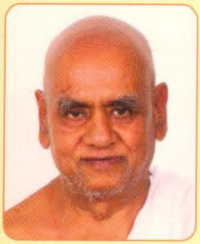

गच्छाधिपति का चातुर्मास जालोर में तथा आचार्यश्री का भांडवपुर तीर्थ पर

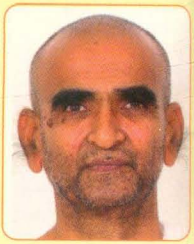

युग प्रभावकाचार्य गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद् विजयनित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत का आगामी चातुर्मास जालोर (राजस्थान) में होगा एवं जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत का आगामी चार्तुमास भांडवपुर तीर्थ पर होगा।

आत्मोद्धारक -4 पृष्ठ 1 का शेष...

मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा- जालोर (राजस्थान), आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा श्री भांडवपुरतीर्थ (राजस्थान), मुनिराज श्री अपूर्वरत्न म.सा., श्री विजय रत्न वि., श्री अजितसेन वि. पालीताना तीर्थ। मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजय तथा श्री निपुणरत्न वि. आदि ठाणा पाटण (गुजरात)। मुनिराज श्री वैभवरत्नविजयजी वि. सूरत, मुनिराज श्री जिनागमरत्न वि. आदि ठाणा अहमदाबाद।

साध्वीजी के समुदायों के चातुर्मास की पहली सूची इस प्रकार है

साध्वी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी म.सा., श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद सा. श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जावरा, सा. श्री सुर्योदयाश्रीजी आदि ठाणा- चैन्नई, सा. श्री आत्मदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा तेनाली (आंध्रप्रदेश), सा. श्री अरूणप्रभाश्रीजी आदि ठाणा- श्री भांडवपुर तीर्थ, सा. श्री अविचलदृष्टाश्रीजी आदि ठाणा बाग, सा. श्री अमितदृष्टाश्रीजी आदि ठाणा बड़नगर, सा. श्री अनंतदृष्टाश्रीजी म. आदि ठाणा मुंबई, सा. श्री विद्वदगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा उज्जैन, साध्वी शासनलताश्रीजी म.सा. श्री अनेकांतलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सूरत, सा. श्री कल्परेखा श्रीजी म.सा. ठाणा- पाटण, सा. श्री भक्तिरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा- पालीताणा, साध्वी श्री अध्यात्मकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा -नवावाडज अहमदाबाद, सा. श्री नयनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा भीनमाल, सा. श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा पाटण, साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी म. आदि ठाणा मंदसौर। सा. श्री मोक्षगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा - थराद।

आत्मोद्धारक 4 समाचार पृष्ठ क्र. 76-77 पर देखें।

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001